जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 17 संख्याः 99 प्रभात हिण्डौन सिटी, मंगलवार 11 फरवरी, 2025 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

अखिलेश, केजरीवाल व ममता, राहुल को अलग करके, अब एक नया राष्ट्रीय गठबंधन बनाने की फिराक में

दिल्ली में केजरीवाल की हार से ज्यादा, कांग्रेस को तीसरी बार ''ज़ीरो'' सीट मिलने से इन पार्टियों के राजनीतिक सोच में परिवर्तन आया है

- ये तीनों पार्टियां, गांधी परिवार के उत्तराधिकारी को विपक्ष के गठबंधन का नेतृत्व मिलने से सदा से नाखुश थे और मानते थे, अब उनकी ''बारी'' आनी चाहिये।
- ममता बनर्जी की परन्तु दुविधा यह है कि वे विपक्ष के राष्ट्रीय गठबंधन के किसी घटक का बंगाल में कतई हस्तक्षेप बर्दास्त करने को तैयार नहीं हैं, पर, वे चाहती हैं, विपक्ष का गठबंधन उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व सौंपे।
- यह व्यवस्था विपक्ष के राष्ट्रीय गठबंधन को ग्राह्य नहीं है। ममता बनर्जी को दूसरी दिक्कत है, नये उत्साह से भरपूर भाजपा अब ममता बनर्जी के क्षत्रपों के भ्रष्टाचार के मामले पूरी ''गंभीरता'' से खोलने के लिये तैयार हो गई है।
- तथा, आरजी कर अस्पताल में महिला डॉक्टर के साथ ''रेप'' व हत्या का मामला भी पुनः जोर पकड़ रहा है और भाजपा उसको तन, मन, धन से चमोत्कर्ष पर ले जाना चाहती है।
- ममता बनर्जी के लिये पुलिस प्रशासन के पूर्ण ''सहयोग'' के बावजूत इस आंदोलन को दबा देना संभव नहीं लगता।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 फरवरी। दिल्ली चुनावों में आम आदमी पार्टी की सत्ता खोने से कहीं ज्यादा कांग्रेस की हार ने राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी राजनीति को पूरी तरह से बदल दिया है। अखिलेश यादव, अरविंद केजरीवाल और ममता बनर्जी एक नया राष्ट्रीय गठबंधन बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जिसमें राहुल गांधी को बाहर रखा जाएगा।

अब जबकि भाजपा दिल्ली में आम आदमी पार्टी की चुनौती से निपट चुकी है, और अब यह पार्टी पश्चिम बंगाल में अपनी चुनावी मुहिम शुरू करने के लिए उत्साहित और आत्मविश्वास से भरी हुई है। आखिरकार, बंगाल में जीत पाना कोई मामूली बात नहीं है, क्योंकि यहाँ 42 लोकसभा सीटें है।

राहुल गांधी सभी तीनों दलों के लिए एक सिरदर्द रहे हैं और इन दलों को इस बात पर ऐतराज रहा है कि विपक्षी गठबंधन की कमान राहुल गांधी को मिल रही है। अब जबकि राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पूरी तरह से नाकामयाब हो गई है, प्रमुख विपक्षी नेताओं को लगता है कि अब कमान उन्हें मिलनी चाहिए।

एक नया गठबंधन अलग नाम के साथ लॉन्च होने वाला है और इसका नेतृत्व अखिलेश यादव या ममता बनर्जी में से किसी एक के पास होगा। सूत्रों के अनुसार कुछ अन्य भी इस दौड़ में हैं।

बंगाल में, ममता बनर्जी अपने जनाधार पर मजबूत पकड़ बनाए हुए हैं। वह यह दावा कर रही हैं कि 2026 का अगला चुनाव भी उनका होगा। इसलिए वह प्रदेश में राष्ट्रीय विपक्षी पार्टियों के साथ किसी भी सहयोग को स्वीकार नहीं कर रही हैं, हालांकि बाकी जगहों पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति निलंबित

- संभागीय आयुक्त की जाँच में दोषी पाये जाने पर राज्यपाल ने प्रोफेसर के.एल. श्रीवास्तव को कुलपति पद से निलंबित किया।

जोधपुर, 10 फरवरी (कास)। राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने एक आदेश जारी कर जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.के.एल श्रीवास्तव को कुलपति पद से तत्काल प्रभाव से निलम्बित किया है। राज्यपाल ने संभागीय आयुक्त जोधपुर की जांच रिपोर्ट के आधार पर उन्हें निलंबित किया है। जांच रिपोर्ट में प्रो. श्रीवास्तव के विरूद्ध पद का दुरूपयोग करने, राज कार्य में लापरवाही बरतने व विश्वविद्यालय को वित्तीय हानि पहुंचाने के गंभीर आरोप प्रथम दृष्टया प्रमाणित पाए गए।

प्रो. श्रीवास्तव के खिलाफ, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय अधिनियम, 1962 (यथा संशोधित) की धारा 10(2) में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तीन दिसंबर 2024 को संभागीय आयुक्त जोधपुर की अध्यक्षता में जांच समिति का गठन किया गया था। इसमें वह दोषी पाए गए। राज्यपाल ने इस पर अधिनियम, 1962 (यथा संशोधित) की धारा 11क की उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'क्या ''सैक्युलरिज़्म'' का झण्डा फहराते रखना केवल हमारी जिम्मेवारी है?'

कांग्रेस ने कहा, ''क्या केजरीवाल ने हरियाणा में सभी नब्बे सीटों पर अपने उम्मीदवार उतार कर कांग्रेस को नहीं हरवाया था''

- कांग्रेस ने क्षेत्रीय पार्टियों, एनसीपी, शिव सेना (यूबीटी), सपा व तृणमूल पर कटाक्ष किया
- कांग्रेस के अनुसार, इन पार्टियों ने सदा यह तर्क दिया है कि कांग्रेस को ''बड़े भाई'' की भूमिका निभानी चाहिये, क्षेत्रीय पार्टियों और छोटी पार्टियों के संदर्भ में तथा उनके हितों को ''अकॉमोडेट'' करना चाहिये तथा आप द्वारा हरियाणा व गोवा में कांग्रेस के खिलाफ पूर्ण तैयारी के साथ चुनाव लड़ने जैसी ''भूल'' को बड़े दिल से स्वीकार कर लेना चाहिये।
- सभी तर्क-वितर्क के बाद, कांग्रेस अब विपक्ष के राष्ट्रीय गठबंधन में अपने ''रोल'' पर पुनर्विचार कर रही है और अगले वर्ष बिहार में आयोजित होने वाले विधानसभा चुनावों में सीटों के बंटवारे पर, लालू यादव से दो टूक बात करेगी।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 फरवरी। दिल्ली में आम आदमी पार्टी को बुरी तरह हराने के बाद, भाजपा ने अब अपनी नज़रें पश्चिम बंगाल और बिहार पर केंद्रित कर दी हैं।

तमिलनाडु या केरल जैसे दक्षिणी राज्यों को छोड़ दें तो दिल्ली, बिहार और बंगाल ही अब तक भाजपा के लिए अजेय बने हुए थे। अब जबकि भाजपा ने दिल्ली आम आदमी पार्टी से छीन ली है और अरविंद केजरीवाल को हरा दिया है इसलिए भाजपा नेताओं के दिलों में इन दो पूर्वी राज्यों को जीतने की महत्वाकांक्षाएं फिर से जाग उठी हैं।

दिल्ली में 27 साल के अंतराल के बाद पार्टी के सत्ता में लौटने के बाद आत्मविश्वास से भरे पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्षी नेता सुवेंदु अधिकारी ने बंगाल में यात्रा शुरू करने की योजना की घोषणा की है, जिसका उद्देश्य 2026 के विधानसभा चुनावों में तृणमूल कांग्रेस के शासन को उखाड़ फेंकना है। इसके पहले नवंबर में बिहार में चुनाव होंगे, जहां भाजपा अपने दम पर, नीतीश कुमार के समर्थन के बिना, सत्ता प्राप्त करने का प्रयास करेगी।

दिल्ली चुनावों के रुझान भाजपा को राष्ट्रीय राजनीति में अपना प्रभुत्व को पुनः स्थापित करने की उम्मीद देते हैं, जो पिछले साल के लोकसभा चुनावों में बहुमत हासिल करने में असफल रहने के बाद एक तरह से शर्मिंदगी का कारण बन गया था। परिणामों का विश्लेषण करने पर यह सामने आता है कि कांग्रेस उम्मीदवारों की उपस्थिति के कारण आम आदमी पार्टी को लगभग 15

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

परवेश सिंह वर्मा दिल्ली के नये मु.मंत्री होंगे?

अमित शाह के करीबी सूत्रों ने बताया कि 13 फरवरी को प्र.मंत्री मोदी के अमेरिका से लौटने के बाद परवेश शपथ ग्रहण करेंगे

- भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महासचिव बी.एल. संतोष ने, दिल्ली विधानसभा चुनाव में विजयी भाजपा के 48 विधायकों की बैठक ली।
- 36 वर्षीय परवेश सिंह वर्मा ने हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में पूर्व मु.मंत्री, आप पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल को हराया था।
- परवेश, अपने पिता साहिब सिंह वर्मा के सपने को पूरा करेंगे, मु.मंत्री का पदभार संभाल कर। साहिब सिंह वर्मा एक लाइब्रेरियन थे तथा 1996-1998 तक दिल्ली के मु.मंत्री भी रहे, मदनलाल खुराना के बाद।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 फरवरी। भाजपा के दिग्गज नेता परवेश सिंह वर्मा, जिन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को नई दिल्ली सीट से हराया है, को दिल्ली के नए मुख्यमंत्री के रूप में देखा जा रहा है, इस प्रकार वे अपने पिता साहिब सिंह वर्मा का सपना पूरा कर सकेंगे, जो एक पुस्तकालयाध्यक्ष थे और 1996 से 1998 तक दिल्ली के मुख्यमंत्री रहे थे, उन्हें मदनलाल खुराना की जगह मुख्यमंत्री बनाया गया था।

वह पश्चिम दिल्ली के दो बार पूर्व सांसद और महरौली के विधायक रहे हैं। शनिवार को चुनाव परिणामों के तुरंत बाद, परवेश ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की।

शाह से जुड़े सूत्रों ने बताया कि वह 13 फरवरी को पीएम मोदी के अमेरिका से लौटने के बाद मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेंगे।

रविवार को दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी के पद से इस्तीफा देने के बाद यह कदम उठाया।

राष्ट्रीय संगठन महासचिव बी.एल. संतोष ने भाजपा के 48 नवनिर्वाचित विधायकों की बैठक बुलाई, क्योंकि उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने विधानसभा को भंग कर दिया।

'चुनाव प्रक्रिया में सरकारी हस्तक्षेप लोकतंत्र की मौत है'

- राहुल गांधी ने यह टिप्पणी करते हुए कहा कि यह बात खुद बाबा साहेब अम्बेडकर ने कही थी।

नयी दिल्ली, 10 फरवरी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि लोकतंत्र में सरकार को चुनावी प्रक्रिया में निष्पक्ष होकर काम करना चाहिए और जब भी वह हस्तक्षेप करती है तो लोकतंत्र दम तोड़ने लगता है।

गांधी ने कहा कि स्वस्थ लोकतंत्र के लिए सरकार को चुनावी प्रक्रिया में किसी भी तरह का दखल नहीं देना चाहिए। उसे निष्पक्ष रहकर काम करना चाहिए। उनका कहना कि सरकार का चुनावी प्रक्रिया में हस्तक्षेप लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है, लेकिन हमारे देश में यही सब चल रहा है। गांधी ने कहा, चुनावी प्रक्रिया में सरकारी हस्तक्षेप का अर्थ है लोकतंत्र की हत्या – ये खुद संविधान निर्माता बाबा साहब अंबेडकर ने कहा है और आज हिंदुस्तान में यही हो रहा है।

नारायण मूर्ति की कंपनी ने ''दमनपूर्वक'' 700 नये कर्मचारियों को नौकरी से निकाला?

पहली बार आई.टी. सैक्टर के कर्मचारियों ने संगठित होकर, इंफोसिस कंपनी के खिलाफ कर्नाटक के श्रम विभाग में ''फॉर्मल'' शिकायत दर्ज की

- यूनियन का कहना है कि अधिकतर बर्खास्त नये कर्मचारियों ने ''एजुकेशन लोन'' ले रखा है, बैंकों से, अब उन ''लोन्स'' का भुगतान कैसे होगा।
- यूनियन के अनुसार, कुछ माह पूर्व, अक्टूबर महीने में इन ''नये कर्मचारियों को देश के विभिन्न कैम्पस से कई इन्टरव्यु लेने के बाद चुना गया था।
- इंफोसिस कंपनी का कहना है, इन नये चयनित कर्मचारियों को, कंपनी के मैसूरु कैम्पस में प्रशिक्षण दिया जा रहा था, पर, लगातार तीन बार मौका देने के बाद भी ये कर्मचारी फण्डामैंटल ट्रेनिंग असैसमैंट पास नहीं कर पाये थे। अतः कंपनी के अनुसार, उनके नियुक्ति पत्र में उल्लिखित ''सैपरेशन एग्रीमैंट'' की शर्तों की अनुपालना में उन्हें बर्खास्त कर दिया गया है।

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 फरवरी। इन्फोसिस एक बार फिर गलत कारणों से सुर्खियों में है। हां, वही कंपनी, जिसे उस व्यक्ति ने स्थापित किया था जो चाहता है कि युवा उसके और उसकी कंपनी के लिए हफ्ते में सत्तर घंटे काम करें, ने सिर्फ कुछ महीने पहले अपने मैसूर कैंपस में भर्ती किए गए 700 युवा आईटी प्रौफैशनल्स को बर्खास्त कर दिया है। जिसके बाद आई.टी. कर्मचारियों के संघ ने कर्नाटक राज्य श्रम विभाग में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई है।

आई.टी. प्रौफैशनल्स यूनियन, नैसैंट इन्फॉर्मेशन टैक्नॉलजी एम्प्लॉईज़ सिनेट (एन.आई.टी.ई.एस.) ने इन्फोसिस द्वारा 700 कर्मचारियों को बर्खास्त करने को अन्यायपूर्ण और अवैध बताया है। चौंकाने वाली बात यह है कि इन 700 प्रौफैशनल्स को पिछले साल कैंपस प्लेसमैंट के दौरान भर्ती किया गया था, और कुछ महीनों के भीतर उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। कुछ मामलों में, युवा महिला प्रौफैशनल्स से, बर्खास्तगी के आदेश के कुछ घंटों के भीतर ही कैंपस छोड़ने को कहा गया।

अधिकांश युवा प्रौफैशनल्स को पिछले अक्टूबर में भर्ती किया गया था, अब इन्हें म्यूचुअल सैपरेशन के पत्र स्वीकार करने और कैंपस छोड़ने के लिए कहा गया, जिससे उन्हें यह सोचने का भी समय नहीं मिला कि उनके साथ क्या हो रहा है। कई इन्फोसिस कर्मचारियों ने, जिन्हें इस तरह से बर्खास्त किया गया, ने अपने इंजीनियरिंग या आईटी पाठ्यक्रमों के लिए शैक्षिक ऋण लिया हुआ था।

जिन कर्मचारियों को बाहर जाने के लिए कहा गया, ये वो थे जो इन्फोसिस मैसूर कैंपस में आयोजित बुनियादी प्रशिक्षण आकलन (फाउन्डेशनल ट्रेनिंग असैसमैंट) को पास नहीं कर पाए थे। एक निजी टेलीविज़न चैनल के अनुसार, वो कर्मचारी, जो तीन बार में आकलन पास करने में असफल रहे, को बाहर जाने के लिए कहा गया। कंपनी का दावा है कि उसके अनुबंध टूल में इसका उल्लेख है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राष्ट्रपति मुर्मू ने किया महाकुंभ स्नान

महाकुंभनगर, 10 जनवरी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू देश की तीसरी ऐसी प्रथम नागरिक हैं जिन्हें प्रयागराज महाकुंभ में आने और त्रिवेणी में डुबकी लगाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मुर्मू ने सोमवार को यहां वैदिक मंत्रोच्चार के बीच महाकुंभ के सकुशल संपन्न होने और राष्ट्र कल्याण की कामना के साथ त्रिवेणी में पुण्य की डुबकी लगायी। पावन जल धारा के ऊपर बनाई गई जेटी पर तैयार किए गए पूजास्थल पर बैठकर उन्होंने पवित्र त्रिवेणी का पूजन किया। राष्ट्रपति ने मां गंगा की आरती उतारी। महामहिम ने किले में स्थित अक्षयवट, सरस्वती कूप और बड़े हनुमान मंदिर में दर्शन-पूजन किया। उनके साथ राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी थे।

- मुर्मू भारत की तीसरी राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने कुंभ स्नान किया है। इससे पहले प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद और फिर चौदहवें राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद भी कुंभ स्नान कर चुके हैं।

इससे पहले देश के पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद का आगमन 1953 में प्रयागराज के कुंभ में पहुंचे थे। उन्होंने यहां पर एक माह का कल्पवास भी किया था। सुरक्षा को देखते हुए उन्होंने किसी तीर्थ पुरोहित के शिविर में न/न रहकर संगम तट पर स्थित अकबर के किले के ऊपर शिविर में अपना कल्पवास पूरा किया था। उस स्थान को अब प्रेसिडेंसियल व्यू के नाम से जाना जाता है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'14 करोड़ भारतवासी फूड सिक्यूरिटी एक्ट के तहत मिलने वाले राशन से वंचित'

सोनिया गांधी ने राज्यसभा में शून्यकाल में मामला उठाया कि पिछली जनगणना 2011 में हुई और उसके बाद 2021 में जनगणना हो जानी चाहिये थी

- पर, इस वर्ष के अंत तक भी जनगणना पूरी होने की संभावना नहीं है।
- उन्होंने कहा, ''फूड सिक्यूरिटी एक्ट के तहत लाभान्वितों का चयन पिछले जनगणना के आधार पर ही हो रहा है और इसके कारण ''एलिजबल'' 14 करोड़ भारतीय नागरिक इस एक्ट के तहत मिलने वाली सुविधा, जैसे ''फ्री राशन''' आदि का लाभ लेने से वंचित हो रहे हैं।''

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 फरवरी। हर दशक होने वाली जनगणना पर जोर देते हुए कांग्रेस पार्लियामैंट्री पार्टी (सीपीपी) की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने केन्द्र से जनगणना करवाने का आग्रह किया और चेतावनी दी कि 2011 का डेटा पुराना हो चुका है और इसलिए लगभग 14 करोड़ भारतीय खाद्य सुरक्षा से वंचित हैं।

नैशनल फूड सिक्योरिटी एक्ट के पात्र व्यक्तियों को अपडेट करने की अत्यावश्यकता को रेखांकित करते हुए सोनिया ने जनगणना की समय सीमा पर स्थिति स्पष्ट नहीं करने को लेकर सरकार की आलोचना की।

शून्यकाल में राज्यसभा में बोलते हुए उन्होंने जनगणना करवाने में चार साल देरी होने का उल्लेख किया और चिंता जताई कि इस वर्ष भी जनगणना होने की संभावना नहीं है।

उन्होंने कहा, स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार हर दशक होने वाली जनगणना में 4 साल की देरी हुई है। यह जनगणना 2021 में होनी थी। अभी भी पता नहीं है कि यह कब होगी। बजट आवंटन से पता चलता है कि जनगणना इस वर्ष होने की संभावना भी नहीं है। लगभग 14 करोड़ भारतीय एनएफएसए के तहत अपने हक से वंचित रह जाएंगे।

गांधी ने कहा, ''जरूरत है कि सरकार शीघ्रातिशीघ्र जनगणना करवाने को प्राथमिकता दे और सुश्निचित करे कि सभी पात्र व्यक्तियों को एनएफएसए के तहत आवश्यक लाभ मिले। खाद्य सुरक्षा कोई विशेधाधिकार नहीं है बल्कि मौलिक अधिकार है।'' ज्ञातव्य है कि यह कानून भारत की जनता को खाद्य एवं पोषण की सुरक्षा देने के लिए 2013 में यूपीए सरकार ने लागू किया था। उन्होंने कहा, यह कानून 2013 में यूपीए सरकार ने बनाया था जो 140 करोड़ भारतीयों को खाद्य व भोजन की सुरक्षा देने के लिए बनाया गया था। इस कानून ने कई परिवारों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, खासकर कोविड-19 के दौरान। यह कानून ही प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना को आधार उपलब्ध कराता है।

गांधी ने कहा, एनएफएसए में 75 प्रतिशत आबादी व 50 प्रतिशत शहरी आबादी को अनाज मिलता है। पर, यह कोटा 2011 की आबादी पर आधारित है। इसके तहत पात्र व्यक्ति को प्रतिमाह 5 किलो अनाज मिलता है।''

'30 आप विधायक हमारे सम्पर्क में'

- पंजाब के वरिष्ठ कांग्रेस नेता और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष प्रताप सिंह बाजवा ने यह सनसनीखेज दावा किया।

चंडीगढ़, 10 फरवरी। दिल्ली विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी (आप) की हार और बीजेपी की जीत के बाद पंजाब की राजनीतिक गरमाई हुई है। पंजाब कांग्रेस के नेताओं का दावा है कि राज्य में बड़ी उथल-पुथल होगी। राज्य में कांग्रेस के नेता और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष प्रताप सिंह बाजवा ने अब दावा किया है कि आप के 30 विधायक कांग्रेस के संपर्क में हैं। बाजवा को दावे के कितना दम है। यह तो आने वाले कुछ दिनों में तय होगा लेकिन पंजाब में भगवंत मान सरकार को खतरे के अटकलों के बीच अरविंद केजरीवाल मंगलवार को विधायकों के साथ बैठक करेंगे। सीएम भगवंत मान और सभी मंत्री भी मौजूद रहेंगे। माना जा रहा है कि इसी वजह से पंजाब सरकार की 10 फरवरी को होने वाली कैबिनेट मीटिंग भी टाल दी गई।

दिल्ली में आप की हार पर कांग्रेस के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने कड़ा हमला बोला था। बाजवा ने कहा था कि भगवंत मान अब दूसरे एकनाथ शिंदे बनेंगे। भगवंत मान के आप में अलग गुट बनाने के भी दावे किए गए हैं। बाजवा ने कहा था कि अरविंद केजरीवाल और पंजाब के सीएम भगवंत मान ने पंजाबियों को बेवकूफ बनाने और 2022 में उनके वोट हासिल करने के लिए पंजाब में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

अगर तुम गलतियों को रोकने के लिए दरवाजे बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर आ जायेगा। –टैगोर

केजरीवाल की महत्वाकांक्षा ''आप'' को ले डूबी

अप्रैल 2011 में अन्ना हजारे द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन आंदोलन दिल्ली में प्रारंभ किया गया और वे भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए जन लोकपाल बनाने की मांग को लेकर दिल्ली में आमरण अनशन पर बैठे। इस आंदोलन को जिस प्रकार से अपार और ऐतिहासिक समर्थन मिला, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की जनता भ्रष्टाचार से कितनी त्रस्त है। इस आंदोलन को पूरी तरह गैर राजनीतिक रखा गया। यहां तक कि किसी भी राजनीतिक दल के नेता को अन्ना हजारे के मंच पर नहीं चढ़ने दिया गया। इस आंदोलन को सभी मीडिया चैनलों में कई दिनों तक लगातार टीवी पर दिखाया गया। इसका प्रभाव यहां तक रहा कि भारतीय संसद का विशेष सत्र बुलाया गया और अंततः जन लोकपाल बिल पारित किया गया।

इस आंदोलन को चलाने वालों ने 'इंडिया अगेंस्ट करप्शन' नाम से एक संस्था बनाई जिसमें कई प्रमुख सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। इनमें एक प्रमुख व्यक्ति अरविंद केजरीवाल थे जो भारतीय राजस्व सेवा के पूर्व अधिकारी थे किंतु उन्होंने सरकार की नौकरी छोड़कर एक एन जी ओ 'परिवर्तन' के माध्यम से भ्रष्टाचार के विरुद्ध लोगों को जागृत करने का काम किया।

अन्ना हजारे के आंदोलन में देश की कई प्रमुख हस्तियां शामिल हुईं जिनमें पूर्व जज, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी, वकील के साथ ही कई सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। इस आंदोलन की समाप्ति के बाद अरविंद केजरीवाल ने कुछ अपने साथियों के साथ एक राजनीतिक दल 'आम आदमी पार्टी' की स्थापना की। यह निर्णय भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के समय लिए गए उस निर्णय के विरुद्ध था जिसमें यह स्पष्ट किया गया था कि आंदोलनकर्ता कोई राजनीतिक दल नहीं बनाएंगे।

जब आम आदमी पार्टी को बनाया गया तो अरविंद केजरीवाल ने कहा कि वह सामान्य सत्ता प्राप्त करने के लिए राजनीति में नहीं आए हैं अपितु उनका उद्देश्य व्यवस्था परिवर्तन करना है। उनके साथ विभिन्न क्षेत्रों के कई स्वैच्छिक कार्यकर्ता और प्रमुख व्यक्ति जुड़े, जिनमें नौसेना के पूर्व सेनाध्यक्ष एडमिरल रामदास, किरण बेदी, न्यायाधीश तेवतिया, शांति भूषण, प्रशांत भूषण, पत्रकार आशुतोष, चुनाव विश्लेषक योगेंद्र यादव, पत्रकार शाज़िया इल्मी, मेधा पाटकर, कुमार विश्वास जैसे हजारों लोग शामिल थे।

आम आदमी पार्टी ने पहला चुनाव 2013 में दिल्ली विधानसभा का लड़ा। पहले ही चुनाव में आम आदमी पार्टी को 28 सीटें प्राप्त हुई और उसने कांग्रेस के सहयोग से सरकार का गठन किया। अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री बने। 49 दिन बाद ही अरविंद केजरीवाल ने इस्तीफा दे दिया और यह कहा कि वे जनता के पास जाकर उनकी सहमति से उम्मीदवार तय करेंगे।

2015 में जब दिल्ली विधानसभा के चुनाव हुए तो आम आदमी पार्टी ने ऐतिहासिक और अद्भुत सफलता प्राप्त करते हुए विधानसभा की 70 में से 67 सीटें जीतीं। जीतने वाले विधायकों में अधिकांश अत्यंत ही साधारण कार्यकर्ता थे। आम आदमी पार्टी की सफलता में युवाओं का बड़ा योगदान था जो केजरीवाल की आदर्श बातों से प्रभावित होकर आप में शामिल हुए। कई युवा तकनीकी विशेषज्ञों ने तो विदेशों से दिल्ली आकर 'आप' के लिए प्रचार किया । एक बार ऐसा लगने लगा था कि भारत के परिदृश्य में एक स्वच्छ राजनीति के अध्याय का प्रारंभ हुआ है ।

यह उल्लेखनीय है कि दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त न होने के कारण सरकार सभी मामलों में पूर्ण अधिकार युक्त नहीं थी।कानून व्यवस्था और भूमि संबंधी निर्णय केंद्र सरकार के पास थे। दिल्ली में कार्यरत अधिकारियों पर भी दिल्ली सरकार का पूर्ण नियंत्रण नहीं था। आप सरकार ने सबसे पहले बिजली और पानी एक सीमा तक निःशुल्क कर दिए। साथ ही सरकारी स्कूलों और मोहल्ला क्लिनिक के माध्यम से भी बहुत सुधार किए, जिन्हें बहुत सराहना मिली।

सरकार की लोकप्रियता को देखते हुए केंद्र में सत्तासीन भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने दिल्ली के उपराज्यपाल के माध्यम से दिल्ली सरकार के कार्य में कई प्रकार से बाधा उत्पन्न करना प्रारंभ कर दिया। सबसे पहले भ्रष्टाचार निरोधक विभाग का नियंत्रण राज्य सरकार से ले लिया । केंद्र सरकार, गृह मंत्रालय और उप राज्यपाल के माध्यम से दिल्ली सरकार के काम काज में बाधा उत्पन्न करने लगी। केंद्र सरकार और राज्य सरकार के कई सारे विवाद सर्वोच्च न्यायालय तक गए। दिल्ली सरकार को सर्वोच्च न्यायालय में अधिकारियों पर नियंत्रण संबंधी प्रकरण में सफलता भी मिली, किंतु इसको केंद्र सरकार ने संसद से कानून में संशोधन करके प्रभावहीन कर दिया।

इसी बीच कई प्रमुख व्यक्तियों ने धीरे-धीरे अरविंद केजरीवाल की तानाशाही प्रवृत्ति का विरोध करते हुए आम आदमी पार्टी को छोड़ना प्रारंभ कर दिया। इनमें प्रमुख थे प्रशांत भूषण, गोपीनाथ, योगेंद्र यादव, मेधा पाटकर, शाजिया इलमी, कपिल मिश्रा, आशुतोष, कुमार विश्वास आदि । कुछ ने भाजपा की सदस्यता ले ली। इन सब के द्वारा आम आदमी पार्टी को छोड़कर जाने का प्रमुख कारण केजरीवाल का तानाशाही रवैया और पार्टी के अपने मूल सिद्धांतों से भटकना था।

> **जिस व्यक्ति ने सरल सादा जीवन जीने की सार्वजनिक रूप से प्रतिज्ञा की हो वह भ्रष्टाचार के आरोप में जेल जाए और अपने लिए शीश महल बनवा ले तो उसे दोगला ही कहा जाएगा। केजरीवाल का अपने लिए शीश महल बनवाना उनके लिए ताबूत में आखिरी कील की तरह सिद्ध हुआ और उसका पूरा लाभ भाजपा की चुनावी मशीनरी ने उठाया।**

इन सबके बावजूद 2020 के चुनाव में आपको 70 में से 62 सीटों पर फिर विजय प्राप्त हुई। यह उल्लेखनीय है कि 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में सभी 7 सीटों पर भाजपा ने विजय हासिल की। अरविंद केजरीवाल को यह लगने लगा कि वे अपने अकेले के बलबूते पर आप को जिता सकते हैं। उनमें एक प्रकार से अहंकार आ गया। वे सार्वजनिक तौर पर भले ही बार-बार यह कहते रहे कि वे एकदम साधारण व्यक्ति हैं और उनकी कोई औकात नहीं है किंतु उनके कार्य करने का तरीका बिल्कुल इसके विपरीत था। धीरे-धीरे आम आदमी पार्टी पूरी तरह केजरीवाल - केंद्रित हो कर रह गई।

भारत सरकार ने केजरीवाल सरकार के कई मंत्रियों और विधायकों पर विभिन्न प्रकार के आरोप लगा कर उन्हें जेल में डाल दिया। एक समय ऐसा था जब लगभग एक तिहाई विधायकों पर कोई न कोई अपराधिक कार्यवाही दिल्ली पुलिस द्वारा की जा रही थी। इन सब के बावजूद अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया ने दिल्ली के सरकारी स्कूलों और मोहल्ला क्लिनिकों पर पूरा ध्यान दिया और कुछ समय में एक ऐसी छवि बना ली कि दिल्ली के सरकारी स्कूल निजी विद्यालय से भी कहीं बेहतर हैं। यह सही है कि शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में आप की सरकार ने अच्छा काम किया ।

एक और जहां केंद्र की भाजपा सरकार के उपराज्यपाल के माध्यम से अरविंद केजरीवाल की सरकार के लिए परेशानियां उत्पन्न करते रहे, वहीं केजरीवाल भी अपने रास्ते से धीरे-धीरे भटकते चले गए। उन पर शराब घोटाले के गंभीर आरोप लगे जिसके कारण उन्हें कई दिनों तक जेल में रहना पड़ा। इसी आरोप में उनके उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और राज्यसभा सांसद संजय सिंह को भी जेल जाना पड़ा। इसी दौरान 'आप' को पंजाब के चुनाव में अच्छी सफलता मिली और वहां उन्होंने 2022 में अपनी सरकार बनाई । आम आदमी पार्टी को राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता भी मिल गई।

इन सब सफलताओं के कारण अरविंद केजरीवाल को यह लगने लगा कि वे पार्टी से बड़े हो गए हैं। यह सोच ही केजरीवाल और आम आदमी पार्टी के पतन का कारण बनी। जो व्यक्ति जन आंदोलन से निकला हो वह अपने सहयोगियों को, जो अपने-अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, को सम्मान के साथ अपनी पार्टी में बनाए नहीं रख सके, वह सही मायने में जन नेता कहलाने योग्य नहीं हो सकता ।

जिन साथियों को अरविंद केजरीवाल ने अपमानित करके पार्टी से निष्कासित किया उनमें प्रशांत भूषण जैसे प्रतिष्ठित वकील भी थे जिन्होंने लगातार सदैव भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपने जंग जारी रखी और वंचित - प्रताड़ितों के पक्ष में सदैव न्यायालय में लड़ते रहे। इसी प्रकार योगेंद्र यादव, मेधा पाटकर, आशुतोष और कुमार विश्वास को अरविंद केजरीवाल की महत्वाकांक्षा ने ही पार्टी से दूर किया । अरविंद केजरीवाल ने अपनी ही पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल के साथ जिस प्रकार अशोभनीय व्यवहार किया उसने भी उनकी तानाशाही प्रवृत्ति को ही स्थापित किया।

8 फरवरी 2025 को दिल्ली विधानसभा के जो परिणाम आए हैं, उनमें आम आदमी पार्टी को कुल 20 सीटें ही प्राप्त हुईं और वह सत्ता से बाहर हो गई है, हालांकि इसका वोट प्रतिशत भाजपा से केवल 1.5 प्रतिशत ही कम है।

आम आदमी पार्टी का जो हश्र हुआ है, उससे सभी नेताओं को सीख लेनी चाहिए कि यदि वह स्वयं को दल से बड़ा समझें एवं लोगों को साथ लेकर चलने की क्षमता नहीं रखते हैं तो फिर वह शीघ्र ही इतिहास का भाग हो जाते हैं। जिस आम आदमी पार्टी को जनता ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध मुहिम का प्रतीक मान लिया था, वही अपने अपने नेता के स्वार्थ, सत्ता लोलुपता और महत्वाकांक्षा के कारण उससे दूर हो गई है।

यह अरविंद केजरीवाल की महत्वाकांक्षा ही थी कि उन्होंने इंडिया गठबंधन का भाग होने के बावजूद, हरियाणा में अपने उम्मीदवार खड़े किए, जिसके कारण कांग्रेस वहां पर सरकार बनाने में सफल नहीं हो पाई। इसी का बदला कांग्रेस ने दिल्ली में आम आदमी पार्टी के विरुद्ध उम्मीदवार खड़े करके ले लिया। यदि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी मिलकर चुनाव लड़े होते तो दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार फिर बन चुकी होती क्योंकि भाजपा और आम आदमी पार्टी के वोटो में अंतर लगभग 2.2 प्रतिशत का ही था।

जिस व्यक्ति ने सरल सादा जीवन जीने की सार्वजनिक रूप से प्रतिज्ञा की हो वह भ्रष्टाचार के आरोप में जेल जाए और अपने लिए शीश महल बनवा ले तो उसे दोगला ही कहा जाएगा। केजरीवाल का अपने लिए शीश महल बनवाना उनके लिए ताबूत में आखिरी कील की तरह सिद्ध हुआ और उसका पूरा लाभ भाजपा की चुनावी मशीनरी ने उठाया।

देश के लिए तो यह दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि जिस व्यक्ति और दल को सार्वजनिक जीवन में शुचिता का पर्याय मानते हुए जनता ने सर माथे बिठाया था उसी ने विश्वासघात करते हुए एक सामान्य राजनीतिक की तरह वही सब किया, जिसके विरुद्ध वह लड़े।

एक नागरिक तो यह अपेक्षा ही कर सकता है कि भविष्य में ऐसे सच्चे नेता उसका नेतृत्व करने के लिए मिलें जो इमानदारी के साथ जनहित में नैतिक साहस जुटा कार्य करते रहें। ऐसा करके वे चुनाव भले ही न जीते पाएं, किंतु जनता के दिलों पर सदैव राज करेंगे । फिलहाल तो हम एक ही वाक्य में पूरा सारांश लिख सकते हैं कि अरविंद केजरीवाल की अत्यधिक महत्वाकांक्षा ही आम आदमी पार्टी के पतन का मुख्य कारण बनी।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

केंद्रीय आम बजट-2025: कृषि क्षेत्र के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टि

राम शर्मा

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की ओर से हाल ही पेश किए गए भारतीय बजट 2025-26 ने कृषि क्षेत्र के लिए एक व्यापक रोडमैप प्रस्तुत किया है, जिसका उद्देश्य दीर्घकालिक चुनौतियों का समाधान करना और सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी और नवाचार का लाभ उठाना है। कृषि क्षेत्र में भारत के लगभग 60 प्रतिशत लोग रोजगाररत हैं। इसका सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में लगभग 18-20 प्रतिशत का योगदान है। वर्ष 2025-26 का बजट जलवायु परिवर्तन और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच किसानों की आय दोगुनी करने, उत्पादकता बढ़ाने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के सरकार के संकल्प को दर्शाता है।

बजट में कृषि क्षेत्र के लिए 1.75 लाख करोड़ का आवंटन किया गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 15 प्रतिशत ज्यादा है। इसमें बुनियादी ढांचे के विकास, अनुसंधान और विकास, और किसान कल्याण योजनाओं के लिए धन शामिल है। बढ़े हुए आवंटन से सरकार का कृषि को अधिक लाभदायक और स्थिर बनाने पर जोर स्पष्ट होता है।

जलवायु परिवर्तन के कृषि पर बढ़ते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, बजट में ''कृषि विकास योजना - जलवायु-सहिष्णु कृषि'' नामक एक नई योजना शुरू की गई है, जिसके लिए 10 हजार करोड़ का प्रावधान किया गया है। इस पहल का उद्देश्य सूखे से प्रभावित होने वाली फसलों, कुशल जल प्रबंधन और स्थायी कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना है। किसानों को सटीक खेती, ड्रिप सिंचाई और वानिकी जैसी जलवायु-अनुकूल तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

इसी प्रकार किसानों की आय बढ़ाने का प्रयास बजट में किया गया है। छोटे और सीमांत किसानों को प्रति वर्ष 6 हजार रुपए की प्रत्यक्ष आय सहायता देने संबंधी प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना में भूमिहीन कृषि मजदूरों और किराएदार किसानों को शामिल किया गया है। इस कदम से तीन करोड़ परिवारों को लाभ होने की उम्मीद है, जिससे ग्रामीण समुदायों के लिए वित्तीय समावेशन और स्थिरता सुनिश्चित होगी।

बजट में राष्ट्रीय कृषि डिजिटल मिशन के लिए 5,000 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है, जिसका उद्देश्य खेती में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करना है। इसमें फसल निगरानी, मिट्टी स्वास्थ्य मूल्यांकन और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों का उपयोग शामिल है। सरकार ने किसानों के उत्पादों की बाजार पहुंच बढ़ाने और उनकी बारगेनिंग पावर बढ़ाने के लिए डिजिटल उपकरणों से लैस 10,000 किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) स्थापित करने की भी योजना बनाई है।

इसी प्रकार कृषि के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने का प्रयास किया गया है। इसके लिए कृषि अवसंरचना कोष की स्थापना की गई थी। इसे सुदृढ करते हुए बजट में इसका कोष 1 लाख करोड़ तक बढ़ा दिया गया है। इस कोष का उपयोग कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं, गोदामों और प्रसंस्करण इकाइयों के विकास के लिए किया जाएगा, ताकि फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम किया जा सके और किसानों की आय में सुधार हो सके। इसके अलावा, सरकार ने क्षेत्रीय विशेषज्ञता और मूल्यवर्धन को बढ़ावा देने के लिए देश भर में 500 नए कृषि-क्लस्टर स्थापित करने की योजना बनाई है।

सतत कृषि को प्रोत्साहित करने के लिए, बजट में 'भारत ऑर्गेनिक्स' नामक एक नई योजना शुरू की गई है, जिसके लिए 2,000 करोड़ का आवंटन किया गया है। इस पहल के तहत किसानों को जैविक और प्राकृतिक खेती पद्धतियों में परिवर्तित करने में सहायता प्रदान की जाएगी, जिसमें रासायनिक इनपुट को कम करने और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। सरकार ने गुणवत्ता मानकों को सुनिश्चित करने और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रीय जैविक प्रमाणन प्राधिकरण बनाने की भी योजना बनाई है।

सहायक क्षेत्रों की क्षमता को पहचानते हुए, बजट में मत्स्य पालन और पशुपालन के विकास के लिए 8,000 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है। इसमें जलीय कृषि और समुद्री कृषि को बढ़ावा देने के लिए ब्लू रिवोल्यूशन 2.0 की स्थापना और पशुधन उत्पादकता और रोग नियंत्रण में सुधार के लिए राष्ट्रीय पशुधन मिशन का विस्तार शामिल है।

बजट में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के लिए आवंटन बढ़ाकर 90,000 करोड़ रुपए कर दिया गया है, जिससे कृषि के मंद मौसम में ग्रामीण श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर सुनिश्चित होंगे। इसके अलावा, किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों, उद्यिमता और कृषि-व्यवसाय प्रबंधन में प्रशिक्षित करने के लिए एक नया किसानों के लिए कौशल विकास मिशन शुरू किया गया है।

किसानों पर वित्तीय बोझ को कम करने के लिए, बजट में कृषि गतिविधियों में लगे सहकारी समितियों के लिए कर छूट की घोषणा की गई है। अल्पकालिक फसल ऋण के लिए ब्याज सब्सिडी योजना को बढ़ाया गया है, और प्राकृतिक खेती अपनाने वाले किसानों के लिए अतिरिक्त 2 प्रतिशत ब्याज सब्सिडी प्रदान की जाएगी। सरकार ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए कृषि ऋण लक्ष्य को बढ़ाकर 20 लाख करोड़ कर दिया है। बजट में बाजार संपर्क को मजबूत करने और बिचौलियों पर निर्भरता कम करने पर जोर दिया गया है। ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) प्लेटफॉर्म को अधिक वस्तुओं और बाजारों को शामिल करने के लिए विस्तारित किया जाएगा। इसके अलावा, सरकार ने मसालों, फलों और जैविक उत्पादों जैसे उच्च मूल्य वाले कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कृषि निर्यात क्षेत्र स्थापित करने की योजना बनाई है।

भारतीय बजट 2025-26 कृषि क्षेत्र के लिए एक आशाजनक दृष्टि प्रस्तुत करता है, लेकिन कई चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। इन योजनाओं को जमीनी स्तर पर लागू करना, धन का समय पर वितरण सुनिश्चित करना और क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करना इनकी सफलता के लिए महत्वपूर्ण होगा। इसके अलावा, कृषि क्षेत्र को खंडित भूमि जोत, ऋण तक अपर्याप्त पहुंच और वैश्विक बाजार उतार-चढ़ाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

सरकार का प्रौद्योगिकी, स्थिरता और किसान कल्याण पर ध्यान सही दिशा में एक कदम है। हालांकि, राज्य सरकारों, निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक होगा। इन पहलों की सफलता अंततः किसानों को सशक्त बनाने, उत्पादकता बढ़ाने और एक लचीला कृषि पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की उनकी क्षमता पर निर्भर करेगी।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय बजट 2025 कृषि क्षेत्र के परिवर्तन में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जलवायु सहनशीलता, प्रौद्योगिकी अपनाने और किसान कल्याण को प्राथमिकता देकर, सरकार ने एक अधिक समृद्ध और स्थायी भविष्य की नींव रखी है। जैसे-जैसे भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ रहा है, कृषि क्षेत्र समावेशी विकास को गति देने और इसके 1.4 अरब लोगों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। बजट का समठा दृष्टिकोण किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों की गहरी समझ और उन्हें दूर करने की एक स्पष्ट दृष्टि को दर्शाता है, जो भारतीय कृषि में एक नए युग का मार्ग प्रशस्त करता है।

–राम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

शहद की मिठास ने बदल दी तकदीर, मधुमक्खी पालक अमरसिंह बना उद्योगपति

- **देश-विदेश में शहद कारोबार से बनाई पहचान, 12 हजार की पूंजी से बना करोड़पति**
- **अमर सिंह प्रतिवर्ष करीब 4.5 से 5 करोड़ रूपए का शहद बेच रहे हैं और कई राज्यों में मधुमक्खी पालन की 100 से अधिक यूनिट स्थापित की है**

हलैना, (निसं)। जब व्यक्ति मन में कुछ करने की ठान ले और रास्ता में आने वाली दिक्कतों का सामना कर ले, उसे दुनियां की कोई भी कठिनाईयां नहीं रूकावट नही डाल सकती है। ऐसा व्यक्ति हमेशा सफलता हासिल करता है और प्रत्येक क्षेत्र में आसमां छु लेता है। ऐसा व्यक्ति है भुसावर उपखंड क्षेत्र के नैवाडा गांव की धरा में जन्मे साधारण किसान रत्तीराम सिंह के पुत्र अमर सिंह। जिसने समृद्ध भारत अभियान के निदेशक सीताराम गुप्ता से मधुमक्खी पालन और शहद प्रसंस्करण संयंत्र लगाने की प्रेरणा लेकर साल 1998 में नैवाडा गांव में मधुमक्खी के मात्र चार डिब्बे से मधुमक्खी पालन की शुरूआत की।

जीवन में कई कठिनाईयां आई, लेकिन इन्हें निदेशक सीताराम गुप्ता ने हर समय मदद दी और हिम्मत बंधाई। आज अमर सिंह की शहद की मिठास ने तकदीर बदल डाली, जो मधुमक्खी पालक से शहद कारोबार का उद्योगपति बन गया, जिसकी मधुमक्खी पालन और शहद प्रसंस्करण व उत्पादन में देश-विदेश में पहचान बन गई। साल 1998 में मात्र 12 हजार की लागत से आज दस करोड़ का कारोबारी बन गया, जो प्रतिवर्ष करीब 4.5 से 5 करोड़ रूपए का शहद बेच रहे हैं और कई राज्यों में मधुमक्खी पालन की 100 से अधिक यूनिट स्थापित कर हजारों बेरोजगारों को आत्मनिर्भर बना दिया। किसान रत्तीराम सिंह के पुत्र अमर सिंह कई बार राष्ट्रीय, राज्य व जिला स्तर पर सम्मानित हो चुके हैं।

अमर सिंह ने बताया कि समृद्ध भारत अभियान के निदेशक सीताराम गुप्ता ने साल 1998 में मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण दिलाकर मात्र मधुमक्खी के चार डिब्बे उपलब्ध कराए और मधुमक्खी पालन के साथ-साथ शहद प्रसंस्करण संयन्त्र लगाने की सलाह दी। आज मेरे पास 3 हजार 500 से अधिक मधुमक्खी के डिब्बे हैं और देश के कई राज्यों में 100 से अधिक मधुमक्खी पालन की यूनिट स्थापित करा दी है। साथ ही नैवाडा गांव में शहद प्रसंस्करण संयंत्र लगाकर स्वयं का उद्योग स्थापित कर लिया। प्रतिदिन 3 से 5 टन शहद प्रसंस्करण कर प्रतिवर्ष साढे चार से पांच करोड़ का शहद बेच दिया जाता है।

उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मधुमक्खी पालन व शहद प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए योजना तैयार की है, जिससे मधुमक्खीपालकों सहित शहद कारोबार से जुड़े व्यापारी आदि को लाभ मिलेगा। साथ ही बेरोजगारों को रोजगार की प्राप्ति होगी। देश-विदेश में आज भरतपुर जिले की पहचान सरसों पैदावार के साथ-साथ शहद उत्पादन में कायम है। उन्होंने बताया कि सरकार की मदद से अब मधुमक्खीपालन और शहद उत्पादन में आए दिन प्रगति होने लगी हैं।

उन्होंने बताया कि निदेशक सीताराम गुप्ता का मार्गदर्शक सार्थक रहा, जो भी ये देन है, वह गुप्ता जी की है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने भरतपुर में हनी टेस्टिंग लैब एण्ड रीजनल बी कीपिंग रिसर्च सेन्टर स्वीकृत कर दिया, जिसको भूमि भी आवंटित हो चुकी है और जल्द ही ये सेन्टर स्थापित हो जाएगा, जिससे हनी कारोबार में बढोतरी होगी।

समृद्ध भारत अभियान के निदेशक सीताराम गुप्ता ने बताया कि साल 1998 में भरतपुर जिले के बेरोजगार युवाओं को मधुमक्खीपालन का प्रशिक्षण दिलाया गया, जिसमें नैवाडा गांव निवासी अमर सिंह पुत्र रत्तीराम भी शामिल था, जिन्हें चार डिब्बे मधुमक्खी के उपलब्ध कराए, जो प्रारम्भ में कई बार हताश हो गया, लेकिन उसे इस कार्य को प्रगति देने के लिए हिम्मत बंधाई और मधुमक्खीपालन के साथ-साथ शहद प्रसंस्करण संयंत्र लगाने के सलाह दी और देश के कई प्रसंस्करण संयंत्र मालिकों से सम्पर्क कराया। जब अमर सिंह को पता चला कि मधुमक्खी पालन से अधिक आय शहद प्रसंस्करण में होती है, जिसने गांव में ही शहद प्रसंस्करण संयंत्र लगा डाला और आज ये शहद प्रसंस्करण से जुड़ी हस्तियों में शामिल हो गया।

प्रदेश के सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल को नए सेशन से पहले 4242 प्रिंसिपल मिलेंगे

- **काउंसलिंग से पहले शिक्षा विभाग ने स्थायी सीनियरिटी लिस्ट जारी की**

बीकानेर, (निसं)। प्रदेशभर के सरकारी सीनियर सैकंडरी स्कूल को नए सेशन से पहले प्रिंसिपल मिल जाएंगे। शिक्षा विभाग ने साल 2023 तक की पदोन्नति के बाद काउंसलिंग के लिए सीनियरिटी लिस्ट जारी कर दी है, जिसके आधार पर नए प्रमोटेड प्रिंसिपल पोस्टिंग के लिए अपनी वरीयता दे सकेंगे।

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की ओर से जारी सीनियरिटी लिस्ट में चयनित 4242 प्रिंसिपल को अलग-अलग वरीयता नंबर दिए गए हैं। अब काउंसलिंग में ये टीचर इसी आधार पर वरीयता भी दे सकेंगे। वरीयता के आधार पर ही पोस्टिंग के लिए पहले स्थान दिया जाएगा। राज्य स्तर पर बनी इस सीनियरिटी लिस्ट के आधार पर जिलों में पोस्टिंग होगी। वरीयता में प्रिंसिपल भले ही एक नंबर पर हो, लेकिन वो अपने जिले के स्कूल का ही चयन करता है। ऐसे में जिला स्तर पर अपनी वरीयता के आधार पर प्रिंसिपल को पसंदीदा स्कूल मिलने की उम्मीद है। फिलहाल सभी प्रिंसिपल को उनके पूर्व पद पद पर ही कार्यभार ग्रहण का आदेश दिया गया है। नए सिरे से काउंसलिंग होने के बाद इन्हें नए पदस्थापन आदेश मिल सकते हैं। काउंसलिंग के दौरान स्कूल के नाम सिलेक्शन लिस्ट में होंगे, उन्हीं का चयन किया जा सकेगा। हर बार की तरह इस बार भी सभी स्कूल ओपन नहीं होंगे। जिन स्कूल में विभाग को पहले प्रिंसिपल भेजने हैं, उन्हें ही ओपन किया जा सकेगा। शिक्षक संगठनों का आरोप है कि विभाग सभी स्कूल ओपन नहीं करता है, जिससे टॉप वरीयता के बाद भी टीचर को अपने नजदीकी स्कूल नहीं मिल पाते।

राशिफल मंगलवार 11 फरवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, पुष्य नक्षत्र सायं 6:34 तक, आयुष्मान योग प्रातः 9:06 तक, वणिज करण सायं 6:56 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-मकर, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग सायं 6:34 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं 6:34 से सूर्योदय तक है। भद्रा सायं 6:56 से आरम्भ होगी। आज बुध कुम्भ में दिन 12:32 पर प्रवेश करेगा। आज ललिता जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:56 से 11:18 तक, लाभ-अमृत 11:18 से 2:04 तक, शुभ 3:26 से 4:49 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:10, सूर्यास्त 6:12

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। दिनचर्या में सुधार होगा।

वृश्चिक
परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

कुंभ
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सार-समाचार

थानाअधिकारी सीआई राजेंद्र ने ली बैठक

महुवा, (निसं)। उपखंड मुख्यालय स्थित थाने में रविवार को थानाधिकारी राजेंद्र मीणा की मौजूदगी में सीएलजी महिला सुरक्षा सखी ठााम प्रहरी व शहर के व्यापारियों की बैठक आयोजित की गई।इस दौरान थाना अधिकारी राजेंद्र मीणा ने उपस्थित सीएलजी सदस्यों व्यापारियों को संबोधित करते हुए कहा कि महुवा थाना क्षेत्रमें कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए महुआशहर या उसके आसपास जिन लोगों ने अपने मकान किराए पर दे रखे है वह पुलिस से किरायेदारों का सत्यापन कारण इसे लेकर पुलिस उ किराएदारों का जल्द ही सत्यापन करेगी। उन्होंने मकान मालिकों से भी कहा कि वे बिना किसी सत्यापन के किराएदार को नहीं रखें। अन्यथा उनके खिलाफ भी नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। थानाधिकारी राजेंद्र मीणा ने कहा कि मादक पदार्थों का सेवन करने वाले लोग छोटी-छोटी चोरी की घटनाओं को अंजाम देते हैं। इसलिए व्यापारी भी सावचेत रहे और अपने प्रतिष्ठान या घर के सामने सी सी बी कैमरे लगवाने तथा जिन मकान मालिकों ने सीसीटीवी लगा रखे हैं वहकैमरों को सदा चालू रखें। साथ ही किसी भी अप्रिय घटना की सूचना तत्काल पुलिस को दें। जिससे समय रहते अपराधियों के खिलाफकार्रवाई की जा सके। उन्होंने व्यापारियों से निवेदन किया कि पुलिस लगातार रात्रि में ठास्त करती है लेकिन पुलिस स्टाफ की कमी के चलते व्यापारियों के सहयोग सेमहुआशहर के बाजारों में प्राइवेट चौकीदार लगाने के लिए व्यापारी पुलिस का सहयोग करें। आपके सहयोग से पुलिस गश्त को और अधिक मजबूत बनाया जाएगा। जिससे चोरी और नकबजनी की घटनाओं को विफल किया जा सके। थाना अधिकारी राजेंद्र मीणा ने साइबर क्राइम से बचने की सलाह भी दी। पुराना मोबाइल खरीदने से बचें। उन्होंने टू व्हीलर वाहन चालकों को हेलमेट लगाकर चलने की सलाह दी। थानाधिकारी ने बताया कि कस्बे में पटाखे फोड़ने वाली बाइकों को किसी भी सूरत में चलने नहीं दिया जाएगा। इस दौरान बैठक में सब इंस्पेक्टर घनश्याम ,जिला सीएलजी सदस्य गोपुत्र अवधेश अवस्थी, कपडा व्यापार संघ के अध्यक्ष दिनेश बंसल, सर्राफा व्यापार मंडल के अध्यक्ष बृजेंद्र अवस्थी, रेडीमेड व्यापार संघ के खेमचंद किवाड़िया, प्रेम प्रकाश मीणा,गौतम, हरकेश मीणा रामदयाल, मनोज शर्मा,गौतम सिंह गुर्जर, अजय प्रकाश सोकरिया, महिला सुरक्षा सखी आबिद कुरैशी, पत्रकार हरि सिंह नागलोत, चंद्रप्रकाश, गोविंद शर्मा मेघराज मीना ने भी विचार व्यक्त करते हुए पुलिस को हर संभव सहयोग मदद करने का आश्वासन दिया।

गोवर्धन पूजा की कथा सुनाई

करौली, (निसं)। करणपुर कस्वे के निकट टोडा गांव के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल गुरैया बाबा मंदिर पर चल रही भागवत में सोमवार को छठवें दिन भागवत कथा सुनाते हुए सुप्रसिद्ध कथा व्यास पण्डित गोपेश शास्त्री अतेवा बाले ने भक्तो को कंस बध,अकरुर प्रसंग,गोवर्धन पूजा, श्रीकृष्ण रुकमणि विवाह की कथा का प्रसंग सुनाया। कथा के दौरान श्रीकृष्ण रुक्मणी विवाह का आयोजन हुआ जिसे बडे ही धूमधाम से मनाया गया। पण्डित गोपेश शास्त्री ने कहा कि दुनिया मे बेटियों को माँ बाप से ज्यादा कोई प्रेम नही कर सकता। बेटियों पर हो रहे अत्याचार छोटी सी भूल का बड़ा कारण है माँ बाप बच्चों को पूरा समय नही दे पा रहे जिसके कारण आपसी परिवार का प्रेम कम हो जाता है। रास पंच अध्याय का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि महारास में पांच अध्याय है। उनमें गाए जाने वाले पंच गीत भागवत के पंच प्राण है। जो भी ठाकुरजी के इन पांच गीतों को भाव से गाता है वह भव पार हो जाता है। उन्हें वृंदावन की भक्ति सहज प्राप्त हो जाती है। गोवर्धन पूजा की कथा विस्तार पूर्वक सुनाई जिसे सुनकर श्रद्धालु भाव विभोर हो गए। कथा आचार्य ने कृष्ण की अनेकों बाल लीलाओं का वर्णन करने के पश्चात गोवर्धन पूजा एवं इन्द्र के मान मर्दन की कथा सुनाई।

चोरी हुआ ट्रेलर किया बरामद

महुवा, (निसं)। थानापुलिस ने कार्रवाई करते हुए कस्बे से चोरी हुए ट्रेलर को महज 12 घंटे में हरियाणा से बरामद करने में सफलता हासिल की है। थाना प्रभारी राजेंद्र कुमार मीणा ने बताया कि कस्बे के हिंडौन रोड स्थित जैन मंदिर के समीप बीती रात अज्ञात बदमाश ट्रेलर 18 चक्का को चुराकर ले जाने की सूचना रोहित स्वामी से मिली जिस पर पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए महवा,गाज़ीपुर,सिकंदरा,अमोली, अलीपुर, इतरामपुरा एक्सप्रेस हाइवे पिनान टोल पर सीसीटीवी केमेरो को खगाला जिसमे गोविंदगढ़ रूट से ट्रेलर का फिरोजपुर हरियाणा पहुंचे वही बदमाश ट्रेलर को सड़क पर छोड़ कर भाग गए पुलिस ने ट्रेलर को बीबा तहसील झिरका फिरोजपुर जिला नूह हरियाणा से बरामद किया है। इधर पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश में जुट गई है। इधर ट्रेलर को बरामद करने मे हेड कास्टेबल रविंद्र शर्मा व कास्टेबल गोरी शंकर शर्मा की अहम् भूमिका रही।

परीक्षा पे चर्चा का आयोजन

करौली, (निसं)। सोमवार को वीणा मैमोरियल सीनियर सैकंडरी स्कूल में 'परीक्षा पे चर्चा' का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के कक्षा आठवीं से बारहवीं तक के सभी बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा बच्चों को परीक्षा संबंधित जानकारियाँ दी,बच्चों को संतुलित आहार,उचित प्रकार से नींद लेने,सभी विषयों में ज्ञान लेने, प्राणायाम करने के बारे मे बताया गया उन्होंने कहा कि जीवन में नम्बर ही मायने नहीं रखते सभी विषयों में उचित जानकारी भी मायने रखती है साथ ही माता-पिता को बच्चों की मानसिकता को समझने को कहा अंत में प्राचार्य देवानंद वोगुला ने बच्चों को जीवन में अपने लक्ष्य कि ओर आगे बढ़ने कि लिए प्रोत्साहित किया।

कैरियर मेले का आयोजन

करौली, (निसं)। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय करौली में सोमवार को कैरियर मेला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन श्रीमति इंदू देवी जाटव द्वारा किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य अशोक कुमार अठावाल ने बताया कि मेले में विद्याार्थियों को शिक्षा स्वास्थ्य, बैंक, एलआईसी आदि के बारे में जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को नौकरी एवं व्यवसाय के बारे में जानकारी जगमोहन जाटव द्वारा दी गई। कार्यक्रम के में श्रीमती अर्चना शर्मा, कमला शर्मा,योगिता,प्रियंका मीना,गायत्री मीना,सुलेखा सहित अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे। मेले के दौरान सभी अतिथियों को माला,साफा व शाल ओढाकर संस्था प्रधान द्वारा अभिनंदन किया गया।

नगर परिषद की बोर्ड की बैठक, विकास नहीं कराने के आरोप

गंगापुर सिटी, (निसं)।सोमवार को नगर परिषद की बोर्ड की बैठक सभापति की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बोर्ड बैठक में एक अरब 55 करोड का बजट पारित किया गया जिसे सभी पार्षदो ने ध्वनि मत से पारित किया। इस दौरान पार्षदो ने शहर की सफाई व्यवस्था, लाईट पानी सहित सडको को लेकर सभापति व आयुक्त का घेराव किया। सोमवार को नगर परिषद में साधारण सभा की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें अधिकतर वार्ड पार्षदो ने शहर की खराब सफाई व्यवस्था एंव सडको को लेकर सभापति को जमकर खरी खोटी सुनाई। इस दौरान वार्ड नंबर 37 के पार्षद पदम जोशी ने अज्गिनशमन कार्यालय को विजय पैलेस के सामने

- बैठक में एक अरब 55 करोड रूपए का बजट पारित

नगर परिषद की बोर्ड की बैठक सभापति की अध्यक्षता में आयोजित हुई।

नगर परिषद की खाली पडी जमीन पर स्थापित करने की मांग की। उन्होने बताया कि वर्तमान में नगर परिषद ने 10 किलोमीटर दूर अग्निशमन कार्यालय बना रखा है। शहर में कहीं भी आगजनी होने पर एक लम्बे अंतराल के बाद दमकल मौके पर पहुंचती है तब तक सब कुछ जल कर राख हो जाता है। इसके साथ ही शहर में सर्दी के मौसम एवं आगामी गर्मी को देखते वार्डो में बोरिंग लगवाने की मांग की। इसके साथ पार्षद पदम जोशी ने वार्ड 37 में कोर्ट में विचारधीन होने के बाद भी नगर परिषद के द्वारा पटटा बनाने पर कडी आपत्ति जताई जिस पर सभापति एंव आयुक्त ने जांच करवा कर पट्टा निरस्त कर कार्रवाही करने का आश्वासन दिया। कई पार्षदो ने बोर्ड बैठक में अपने वार्डो का विकास नहीं होने पर सभापति पर भ्रष्टाचार सहित अन्य आरोप लगाए। कई बार पार्षद व सभापति में तनातनी हो गई लेकिन आयुक्त व अन्य की दखल से मामला शांत हुआ। पार्षद कमलेश महावर और ओमी कटारिया ने आरोप लगाया कि नगर परिषद में बिना एजेंट के कोई काम नहीं होता। सबसे गंभीर आरोप प्रधानमंत्री आवास योजना को लेकर लगे, जिसमें कर्मचारियों पर 5०-5० हजार रुपए की रिश्वत मांगने का आरोप लगा। पार्षद बबलू चौधरी ने तो यहां तक कहा कि उनकी फर्जी मोहर लगाकर आवास के लिए आवेदन किए गए। पार्षद गोविंद पाराशर ने चिंता जताई कि अब केवल 6 महीने बचे हैं और वार्डों में विकास कार्य नहीं होने से वे जनता को क्या जवाब देंगे। सभापति पर आरोप के बाद सभापति और पार्षद के बीच काफी देर तक तीखी तकरार हुई और सभापति ने बैठक से निष्कासित कर दिया और इसे प्रोसिडिंग में लेने के लिए कहा।सभापति अग्रवाल का कहना था कि सरकार से बजट ही नहीं मिला, फिर विकास कैसे संभव है। नगर परिषद की इतनी आमदनी ही नहीं है, जयपुर रोड शहर का प्रवेश द्वार है और पार्षद द्वारा लगाए आरोप निराधार है, यहां का विकास शहर का विकास है। बैठक में सडक, पानी, स्ट्रीट लाइट और सफाई जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी को लेकर भी आक्रोश देखा गया। पार्षदों ने पीएम आवास योजना से जुडी सभी फाइलों की जांच की मांग की है।

डायरेक्टर व कर्मचारियों के बीच बहस

भरतपुर, (निसं)। सरस डेयरी में आज मीटिंग शुरू होने से पहले ही हंगामा हो गया। जिसके बाद सरस डेयरी के डायरेक्टर और सरस डेयरी के कर्मचारियों के बीच जमकर कहासुनी हुई। जिसका वीडियो भी सामने आया है। आज सरस डेयरी के नए प्लांट बनाने के लिए मीटिंग होनी थी। उससे पहले ही सरस डेयरी के डायरेक्टर और कर्मचारियों के बीच जमकर बहस हुई। सरस डेयरी की चेयरमैन सुशीला राजाराम भुतौली ने कहा कि आज मुझे और सभी डायरेक्टरों को मीटिंग के लिए बुलाया गया था। जब हम मीटिंग के लिए ऑफिस में इकट्ठे हुए तो, उस समय सरस डेयरी के गार्ड और कुछ कर्मचारी वहां मौजूद थे। इस दौरान सभी डायरेक्टरों ने से कहा की प्राइवेट तौर पर लगे कर्मचारियों को बाहर कर दीजिये। हमें आपसे बात करनी है। तभी सभी कर्मचारी डायरेक्टरों से लडने के लिए उतारू हो गए। कर्मचारी कहने हम यही बैठेंगे यह डेयरी हमारी है। हम से पूछ भी नहीं पाए की हमें किस लिए बुलाया गया है। इससे पहले कर्मचारियों ने झगडा शुरू कर दिया। मेरी से बात भी नहीं हुई। जब हमसे बात ही नहीं करनी थी तो, हमें मीटिंग के लिए क्यों बुलाया गया था।

एटीएम तोड़कर रुपए निकालने का आरोपी गिरफ्तार

करौली, (निसं)। थाना कोतवाली करौली पुलिस ने बडी कार्यवाही करते हुए एक्सिस बैंक के एटीएम में तोडफोड कर एटीएम में रखे रूपये निकालने का प्रयास करते हुये आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

कोतवाली थाना अधिकारी आध्यात्म गौतम ने बताया कि सोमवार को थाने के हैड कांस्टेबिल भीमसेन मय जाप्ता कांस्टेबिल चन्द्रदत्त,धर्मवीर मय बोलेरो सरकारी चालक के द्वारा रात्री कालीन गश्त के दौरान कंट्रोल रूम क्यूएसटी कि सूचना पर गुलाब बाग स्थित एक्सिस बैंक एटीएम में घुसकर तोडफोड कर एटीएम से रूपये निकालने का प्रयास कर रहे युवक मनोज कुमार पुत्र दिनेश तमोली 34 निवासी इन्द्रा कॉलोनी करौली को गिरफतार किया गया। उन्होने बताया कि रविवार सौमवार कि मध्य रात्रि को 1:00 बजे के करीब कंट्रोल रूम से सूचना मिली की एक व्यक्ति गुलाब स्थित एक्सिस बैंक एटीएम में घुसकर एटीएम तोडने का प्रयास कर रहा है जिस पर गुलाब स्थित एक्सिस बैंक एटीएम पर पहुँचे तो एक व्यक्ति एटीएम के अंदर घुसकर एटीएम कि शटर बंद कर एटीएम मशीन में कुल्हाडी सब्बल, पेचकश आदि

पुलिस ने एटीएम तोड़कर रुपए निकालने का आरोपी दबोचा।

उपकरणों से तोडफोड कर एटीएम मशीन में रखे रूपये निकालने का प्रयास कर रहा था। एटीएम मशीन के अंदर स्थित लगे सीसीटीवी कैमरा को तोड रखा था। जिस पर एटीएम मशीन तोडकर रूपये निकालने का प्रयास कर रहे व्यक्ति मनोज कुमार को डिटेन किया गया व बैंक मैनेजर द्वारा रिपोर्ट पेश करने पर मुकदमा दर्ज कर आरोपी मनोज कुमार को गिरफतार किया गया। उन्होने बताया कि प्रकरण मे आरोपी मनोज कुमार से तफतीश कि गयी तो ऑनलाईन गेम खेलते हुये काफी पैसा ऑनलाईन गेम तीन पत्ती में हार जाना बताया व स्वयं के उपर कई लोगों का कर्ज होना बताया जिस पर एटीएम मशीन से एटीएम को ठाइंडर से काटकर रूपये चोरी करने आना बताया। आरोपी मनोज कुमार को गिरफतार कर न्यायालय में पेश कर 4 दिन के पुलिस अभिरक्षा में लिया गया। अभियुक्त से अन्य एटीएम मशीनों में तोडफोड कर रूपये निकालने के बारे में कडाई से पूछताछ कि जा रही है।

शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा के समापन पर भंडारा

गंगापुर सिटी, (निसं)। सवाई माधोपुर रोड पर उघाडमल बालाजी के पास हिंगोटिया गांव स्थित भोमिया बाबा मंदिर में श्री श्री 1008 रघुनंदन दास जी महाराज जी के तीन दिवसीय धार्मिक अनुष्ठान कार्यक्रम में शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा के समापन पर विशाल भंडारे में सैकडों लोगों ने पंगत प्रसादी पाई। यहां आचार्य पंडित मोहनलाल पाराशर ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन यज्ञ करवाया। हवन यज्ञ के बाद भोले नाथ के प्रसादी का भोग लगाकर पंगत प्रसादी आरंभ हुई जो कि देर शाम तक चलती रही पंगते सजती रही और प्रसादी बंटती रही।

मेला आयोजित

भरतपुर, (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रीठौटी में कैरियर मार्गदर्शन मेला का आयोजन किया गया। विद्यालय के छात्र छात्राओं ने भाग लिया और अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया। इस मौके पर विद्यालय में जिला परिषद सदस्य कुँवर गोरधन सिंह रीठौटी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और बेस्ट कलाकृतियों के लिए छात्र एवं छात्रों को पुरस्कार दिए।

सार-समाचार

पेंशन सत्यापन के लिये शिविर आज से शुरू

करौली, (निसं)। जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना ने बताया कि जिले में दिव्यांगजनों के युडीआईडी कार्ड बनवाने एवं पेंशन सत्यापन के लिये शिविरों का आयोजन किया जाना है। उन्होंने बताया कि इन शिविरों में जिन विशेषयोग्यजनों के दिव्यांगता प्रमाण पत्र नहीं बने है उनका चिन्हिकरण कर स्वाबलम्बन पोर्टल पर ऑनलाईन आवेदन करवाकर एवं चिकित्सा विभाग के पास लम्बित आवेदन पत्रों का त्वरित निस्तारण करवाकर नियमानुसार दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी किये जायेंगे। जिससे विशेषयोग्यजनोंश्को अस्पताल, जिला अस्पताल और ई-मित्रों के चक्कर नहीं लगाने पडें और समय से पात्रजनों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन मिल सके। जिला कलेक्टर ने कहा कि जिले में विभागीय दिव्यांगजन पंजीयन पोर्टल पर विभिन्न स्तरों पर लम्बित आवेदनों का सक्षम स्तर से निस्तारण करवाकर विशेषयोग्यजनों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र एवं युडीआईडी कार्ड भी जारी किये जाने हैं। इसलिए 11 फरवरी से 6 मार्च तक युडीआईडी दिव्यांगजन शिविरों का आयोजन प्रात: 11 बजे से सांय 4 बजे तक ब्लॉकवाईज किया जाएगा। जिससे विशेषयोग्यजनों को युडीआईडी कार्ड सुगमता से प्राप्त हो सके। निर्धारित शिविर कार्यक्रम के अनुसार 11 फरवरी को पंचायत समिति करौली, 13 फरवरी को पं.स. मंडरायल,18 फरवरी को पं.स. मासलपुर, 20 फरवरी को पं.स. सपोटरा, 25 फरवरी को पं.स. हिण्डौन, 27 फरवरी को पं.स. नादौती, 4 मार्च को पं.स. टोडाभीम व 6 मार्च को पं.स. श्रीमहावीरजी में शिविर आयोजित किये जाएंगे। उन्होंने बताया कि उक्त शिविरों से संबंधित सभी आवश्यक तैयारिया पूर्ण कर ली गई है साथ ही संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये है। जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी पवन कुमार गुप्ता ने बताया कि पंजीयन करवाने के लिए शिविर में आने वाले दिव्यांगों के पास लाभार्थी का नाम, पता, माता-पिता का नाम एवं जन्मतिथि सत्यापित करने हेतु आवश्यक दस्तावेज, आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, राशन कार्ड, पैन कार्ड, ड्राईविंग लाइसेंस, जन्म प्रमाण पत्र, बिजली पानी का बिल, फोटो एवं हस्ताक्षर इत्यादि होने आवश्यक हैं। अधिक जानकारी के लिये दिव्यांग अथवा उनके परिजन जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण कार्यालय करौली अथवा संबंधित ब्लॉक के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

सामुदायिक भवन में अनियमितताएं

कामां/भरतपुर, (निसं)। कस्बा के पहाड़ी रोड स्थित डॉ भीमराव अम्बेडकर भवन में भारी अनियमितताएं व लापरवाही देखने को मिल रही है। इस सम्बन्ध में कस्बा के जागरूक नागरिक कई बार नगर पालिकाध्यक्ष गीता खंडेलवाल से लिखित व मौखिक शिकायत कर चुके हैं। लोगों ने भवन निर्माण के शुभारंभपर भी शिकायत की थी। लोगों ने बताया कि इस नवनिर्मित डॉ भीमराव अम्बेडकर सामुदायिक भवन में चार दीवारी की जगह तीन दीवारी में ही निर्माण कार्य पूर्ण कर दिया गया है। समाज के लोगों में भवन निर्माण को लेकर काफी नाराजगी। व्याप्त है, जो कभी भी फूट कर जनआंदोलन का रूप ले सकती है। नगर पालिका पार्षद अजीत जाटव ने भवन निर्माण में आई दरारें पड़ने का मुद्दा उठाया था। इंटर लॉकिंग का निर्माण कार्य भी अभी तक शुरू नहीं कराया गया है। समाज के लोगों ने बताया कि सामुदायिक अंबेडकर भवन निर्माण भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया है। निर्माण पूर्ण होने से पहले ही लगभग-लगभग पूरी बिल्डिंग में दरारें आ चुकी हैं। लोगों ने विधायक नौक्षम चौधरी से भवन निर्माण में बरती लापरवाही की जांच कराकर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर कस्बे के लोगों को खुशी की सौगात देने की माँग की है। लोगों ने कहा कि कमिशन खाने वाले नगर पालिका के जिम्मेदारों पर नकेल कसी जाये और दोषियों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई कर जनता के पैसों का हिसाब दिया जाये। लोगों ने बताया कि नवनिर्मित डॉ भीमराव अम्बेडकर सामुदायिक भवन मात्र दो साल भी नहीं चलेगा, इसकी हालत जर्जर हो चुकी है। ठेकेदार व अधिकारी अपनी गलती को छुपाने के अनेक प्रयास कर चुके हैं। पेंच वर्क का कार्य बार बार कर राजमिस्त्री व बेलदार भी हार चुके हैं। चार दीवारी के स्थान पर तीन दीवार का निर्माण करा कर भुगतान भी उठा लिया गया है। इंटर लॉकिंग का कार्य आज तक अपूर्ण पड़ा हुआ है, जिसको अब तक पूर्ण नहीं किया गया है। भारतीय संविधान के रचयिता के नाम पर बनने वाले अंबेडकर भवन को भी नहीं भ्रष्टाचारियों ने नहीं बख्शा है।

बसंत महोत्सव पर काव्य गोष्ठी

गंगापुर सिटी, (निसं)। अखिल भारतीय साहित्य परिषद की स्थानीय इकाई द्वारा नगर परिषद के नवीन वाचनालय में एक भव्य बसंत काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। वरिष्ठ कवि गोपीनाथ चर्चित की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यऋम में नगर परिषद सभापति शिवरतन गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यऋम की शुरुआत कवि चौखे लाल द्वारा सरस्वती वंदना से हुई। जिसमें उन्होंने रस, भक्ति और भाव की अभिव्यक्ति की। गोष्ठी में डॉ. गोपीनाथ चर्चित ने राजनीति पर व्यंग्यात्मक रचना प्रस्तुत की, जबकि कवि व्यग्र पाण्डे ने बसंत की छवि को अपने गीत में उकेरा। महादेव गर्ग प्रेमी ने धीमे धीमे चाले ऋतुराज री पुरवइया गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कवि हनुमान मुक्त ने बसंत को प्रकृति का मुस्कराना बताते हुए कोयल की मीठी तान का वर्णन किया। डॉ. मुकेश असीमित ने बसंत के बदलते स्वरूप पर अपनी कविता प्रस्तुत की, जिसमें नव कलियों के संगीत की बात की। कार्यक्रम में कवियों ने अपनी रचनाओं की पुस्तकें वाचनालय को भेंट कीं। स्थानीय नागरिक गोविंद बरनाला ने भी वाचनालय के लिए पुस्तकें दान की। समापन पर मुख्य अतिथि शिवरतन गुप्ता ने सभी रचनाकारों को बसंत की शुभकामनाएं दीं

कुलदीप ने किया झारेडा का नाम रोशन

करौली, (निसं)। गांव झारेडा के कुलदीप मीना पुत्र रामचरण मीना का केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहबाद यूनिवर्सिटी मे सहायक आचार्य अस्सिटेंट प्रोफेसर हिंदी विषय में चयन हुआ। इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी कहा जाता है। इससे परिवार में खूशी का माहौल है।इसी परिवार के वालकृष्ण का कुछ दिन पहले सहायक आचार्य अंठोजी राजस्थान राज्य लोक सेवा आयोग से चयन हुआ।दोनों चाचा ताऊ के लडके है। इस अवसर पर रामचरण,शिवचरण सेवानिवृत्त उपनिदेशक, गिर्राज,जगदीश,धनराज,प्रकाश,राजेश,दौलत ने खुशी व्यक्त कि दोनों भाईयों के चयन पर परिवार में खुशी का माहौल है।

सीए परीक्षा उत्तीर्ण करने पर बीनू जोशी का किया सम्मान

भरतपुर, (निसं)। विभिन्न सामाजिक संगठनों की ओर से श्री ब्राह्मण सभा के पूर्व जिलाध्यक्ष एवं वरिष्ठ समाजसेवी कौशलेश शर्मा के नेतृत्व में खेड़ा ब्राह्मण, डीग निवासी लाडली बिटिया बीनू जोशी पुत्री स्व नरेंद्र जोशी द्वारा सीए परीक्षा उत्तीर्ण करने करने एवं अपने परिवार व अपने डीग जिले का नाम रोशन करने पर, उनके निज निवास पर दुपट्टा पहनाकर पुष्पगुच्छ एवं श्री बांके बिहारी जी का प्रतीक चिन्ह भेंट कर स्वागत सम्मान किया गया एवं शुभकामनाएं दी गई। सभी ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर उनके परिवारीजनों का भी दुपट्टा माला पहनाकर के स्वागत सम्मान किया गया। बीनू जोशी ने अपनी इस सफलता का श्रेय, अपने परिवारीजनों के साथ-साथ अपने गुरूजनों को दिया। इस अवसर पर श्री ब्राह्मण सभा के पूर्व जिलाध्यक्ष कौशलेश शर्मा, सेवानिवृत्त उप निदेशक शिक्षा विभाग ओमप्रकाश शर्मा, सेवानिवृत्ति सहायक लेखाधिकारी ईश्वरीप्रसाद शर्मा, ब्राह्मण सेवा समिति के वरिष्ठ सदस्य पंडित बनवारीलाल शर्मा, एलआईसी के लालचन्द शर्मा, पार्षद समता आन्दोलन जिला डीग के अध्यक्ष राहुल लवानियां, समता आंदोलन समिति जिलाध्यक्ष केदार पाराशर, विप्र फाउंडेशन के पूर्व जिलाध्यक्ष नेमीचंद मुद्गल, सेवानिवृत्ति सहायक अभियंता इंजी. देवकीनंदन शर्मा, समाजसेवी एडवोकेट शुभनेश पाराशर, समता आन्दोलन के सक्रिय सदस्य राकेश शर्मा, समता आन्दोलन के अशोक शर्मा, समाजसेवी शिवकुमार लवानियां, ठेकेदार भानू जोशू आदि मौजूद थे। बीनू जोशी के परिवारीजनों ने सभी उपस्थित अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

सीए परीक्षा उत्तीर्ण करने पर बीनू जोशी का विभिन्न सामाजिक संगठनों ने सम्मान किया।

धरना प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

भरतपुर, (निसं)। नदबई तहसील की उप तहसील मुख्यालय लखनपुर को तहसील कार्यालय मे क्रमोन्नत व सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट कार्यालय की स्थापना को लेकर समाजसेवी एडवोकेट महेश लखनपुर के नेतृत्व में ग्रामीणों ने परसों अनिश्चित कालीन धरना प्रदर्शन को लेकर नायब तहसीलदार दीपा यादव को ज्ञापन सौंपा। महेश लखनपुर ने बताया की उप तहसील कार्यालय को तहसील कार्यालय में क्रमौन्नत नहीं होना क्षेत्र की ज्वलंत समस्या है किसानों को लगभग 20 किमी अतिरिक्त राजस्व कार्यो के लिए तहसील नदबई तक भटकना पड़ता है। जिससे किसानों का समय व आर्थिक हानि उठानी पडती है। साथ ही लखनपुर मे सिविल न्यायधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट कार्यालय ना होने से क्षेत्र के लोगों को न्याय के लिए नदबई भागना पडता है एवं न्याय मे विलंब होता है। पिछली सरकार द्वारा बजट 2021-22 के संशोधित बजट में 4 मार्च 2021 को उप तहसील मुख्यालय लखनपुर मे सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट सीजेजेएम की घोषणा हुयी थी। परन्तु उक्त बजट घोषणा धरातल पर ना आकर महज एक कोरी घोषणा ही रह गई। समस्या समाधान के लिए धरने प्रदर्शन का ज्ञापन नायब तहसीलदार दीपा यादव को सौंपा है।

राजेश पायलट की जयंती प्रेरणा दिवस के रूप में मनाई

हिण्डौन सिटी, (निसं)। पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्व.राजेश पायलट की जयंती सोमवार को प्रेरणा दिवस के रूप में जगदीश धाम कैमरी स्थित स्मारक पर श्रद्धापूर्वक मनाई गई। सभी कार्यकर्ताओं ने स्व. पायलट साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पीसीसी सदस्य शीशराम खटाना ने कहा कि स्व. राजेश पायलट किसानों के सच्चे हितैषी थे। किसानों के प्रति उनके समर्पण को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। उन्होंने उनके जीवन और योगदान को याद किया जाएगा तथा उनके द्वारा किये गए अद्वितीय कार्यों और संघर्षों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी । सभी ने उनके संघर्षों और योगदान को याद करते हुए, उनके दृष्टिकोण और उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लेते है । भूपेन्द्र खटाना ने बताया कि राम राम सा कहते ही दिलों दिमाग पर राजेश पायलट का चित्रण आ जाता है और उनके द्वारा किये गए कार्यों को याद किया जाता है।

जगदीश मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष घनश्याम खटाना खेड़ला ने कहा कि राजेश पायलट ने किसानों के हित में कई बडे कार्य किए थे। उन्होंने कहा कि आज राजेश पायलट होते तो किसानों और मजदूरों को ये दिन देखने नही पड़ते । इस दौरान जगदीश धाम मंदिर कमेटी के अध्यक्ष घनश्याम खटाना, पीसीसी सदस्य शीशराम खटाना, मुरारीलाल खटाना, कैप्टेन शीशराम सेना मेडल, कैप्टेन जगराम खटाना, सुठाीव खटाना, कैप्टेन नरपत खटाना, हंसराज सरपंच, सियाराम वकील, संतराम सरपंच, गोविन्द शर्मा, सुरेश शर्मा, सरपंच प्रतिनिधि कप्तान एडवोकेट, पूर्व सरपंच संतराम सिंह, भूपेन्द्र खटाना अधैत सहित गणमान्य लोगों ने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

राजेश पायलट स्मारक पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

20 दिन पहले हुई थी शादी : हादसे में पति की मौत, पत्नी घायल

तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार नवदंपती को चपेट में ले लिया था

- घटना पाली शहर के औद्योगिक नगर थाना क्षेत्र में भटवाड़ा-सांई बाबा मंदिर के बीच हुई

पाली, (नि.सं.)। तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार नवदंपती को चपेट में ले लिया। पति-पत्नी उछलकर रोड पर गिरे। हादसे में पति की मौत हो गई जबकि पत्नी घायल हो गई। दोनों की शादी 20 दिन पहले हुई थी। घटना पाली शहर के औद्योगिक नगर थाना क्षेत्र में भटवाड़ा-सांई बाबा मंदिर के बीच सोमवार सुबह आठ बजे हुई।

औद्योगिक नगर थाने के जसंवत सिंह राजपुरोहित ने कहा कि कार को जब्त कर लिया गया है। हादसे में युवक हितेश गंभीर घायल हो गया था, जिसे जोधपुर रेफर किया गया। इलाज के दौरान जोधपुर में उसकी मौत हो गई। ओमप्रकाश परिहार को जोधपुर भेजा है। पोस्टमॉर्टम की कार्रवाई पूरी करवा शव परिजनों को सौंपा जाएगा। सोमवार सुबह आठ बजे पाली के गांव जवड़िया के भाटों की ढाणी निवासी हितेश भाट (21) पुत्र घीसाराम अपनी पत्नी मनीषा (18) को बाइक से पाली के राजेंद्र नगर स्थित उसके पीहर छोड़ने जा रहा था। शहर के औद्योगिक नगर थाना क्षेत्र में भटवाड़ा और सांई बाबा मंदिर के बीच बाइक को तेज रफ्तार कार ने पीछे से टक्कर मार दी। पति-पत्नी उछलकर सड़क किनारे झाड़ियों में जा गिरे। दोनों को पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लाया गया। हालत गंभीर होने पर हितेश को जोधपुर रेफर किया गया। मनीषा का उपचार बांगड़ हॉस्पिटल में चल रहा है। हितेश और मनीषा की शादी 20 दिन पहले 21 जनवरी 2025 को हुई थी।

परिजन ने बताया कि शादी धूमधाम से हुई थी। दोनों काफी खुश थे। दो दिन पहले ही हितेश पाली में एक मोबाइल कम्पनी में जॉब पर लगा था। परिवार वालों के कहने पर सोमवार सुबह वह मनीषा को बाइक पर साथ ले गया। मनीषा को राजेंद्र नगर छोड़कर वह काम पर जाने वाला था लेकिन रास्ते में हादसा हो गया। इस हादसे ने दोनों के परिवार को तोड़कर रख दिया।

हादसे की जानकारी मिलते ही दोनों के परिजन और समाज के लोग बड़ी संख्या में पाली के बांगड़ हॉस्पिटल एकत्रित हुए। जोधपुर में उपचार के दौरान हितेश की मौत का समाचार सुन उसके परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल हो गया। कुछ ऐसा ही हाल हितेश के ससुराल वालों की थी। उन्होंने कहा कि बेटी के हाथों से मेहंदी का रंग भी नहीं उतरा था, यह हो गया।

ट्रेलर ने बाइक सवार परिवार को कुचला, मां और बेटे-बेटी की मौत

- युवक की हालत गंभीर, धार्मिक कार्यक्रम में जा रहे थे परिवारजन

पाली, (नि.सं.)। पाली में तेज रफ्तार ट्रेलर ने बाइक सवार परिवार को चपेट में ले लिया। हादसे में मां और बेटे-बेटी की मौत हो गई। घायल युवक का बांगड़ हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। हादसा ट्रांसपोर्ट नगर इलाके में 72 फीट बालाजी मंदिर के पास रविवार रात आठ बजे हुआ।

भंवरलाल माली ने बताया कि नया गांव जगदंबा कॉलोनी निवासी हेमाराम (30), पत्नी संतोष (25), बेटा कमलेश (8) और बेटी ललिता (5) को लेकर बाइक से ससुराल जाडन गांव जा रहा था। ओवरब्रिज पर चढ़ते समय ट्रेलर ने बाइक को चपेट में ले लिया। हादसे में संतोष, कमलेश और ललिता की मौत हो गई, वहीं हेमाराम घायल हो गया। घायल हेमाराम हॉस्पिटल में बार-बार यही पूछ रहा था कि पत्नी और बच्चे कैसे हैं। उनसे एक बार मिलवा दो, उसके बाद मेरा इलाज करवाना, लेकिन रिश्तेदार उसे समझाते रहे कि वे ठीक हैं, उनका इलाज चल रहा है। एएसआई ओमप्रकाश चौधरी ने बताया कि घायल हेमाराम मजदूर है। वह ससुराल के पास प्रेमपुरी आश्रम में आयोजित धार्मिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए परिवार सहित जा रहा था।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रावतभाटा के सैडल बांध का निरीक्षण किया

बारिश के पानी का अधिक से अधिक उपयोग हमारी प्रमुख प्राथमिकता : मुख्यमंत्री

- मुख्यमंत्री को जल संसाधन विभाग के अधिकारियों ने राणाप्रताप सागर-ब्राह्मणी की बाढ़ सुरक्षा प्रबंधन एवं उक्त बाढ़ के जल को बीसलपुर बांध में जल अपवर्तन परियोजना पर जानकारी दी
- सीएम ने प्रस्तावित कार्यों की प्रगति का जायजा लेकर संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए

चित्तौड़गढ़/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को रावतभाटा स्थित राणा प्रताप सागर बांध के अपस्ट्रीम में सैडल डैम का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने प्रस्तावित कार्यों की प्रगति का जायजा लेकर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री शर्मा को जल संसाधन विभाग के अधिकारियों ने राणाप्रताप सागर-ब्राह्मणी की बाढ़ सुरक्षा प्रबंधन एवं उक्त बाढ़ के जल को बीसलपुर बांध में जल अपवर्तन परियोजना पर विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि राणाप्रताप सागर के सैडल डैम के सरप्लस वाटर को ब्राह्मणी नदी में डालने के लिए प्रस्तावित कैरिज के मार्ग एवं यहां से पानी बीसलपुर बांध के अपस्ट्रीम तक पहुंचाने की कार्य योजना पर कार्य किया जा रहा है। इस परियोजना से सरप्लस पानी का अधिक से अधिक उपयोग होगा और पानी व्यर्थ नहीं बहेगा।

रावतभाटा के समग्र विकास के लिए कृतसंकल्पित : -मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने यहां स्थानीय लोगों से संवाद करते हुए कहा कि राज्य सरकार वर्षा के जल का संचय कर अधिक से अधिक उपयोग करने की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि विकसित रावतभाटा के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। यहां पर परिवहन सुविधा का विस्तार करने सहित अन्य विषयों पर राज्य सरकार गंभीरता से कार्य कर रही है।

इस अवसर पर चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी, विधायक सुरेश धाकड़, श्रीचंद कृपलानी, अतिरिक्त मुख्य सचिव जल संसाधन अभय कुमार सहित संबंधित अधिकारीगण एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि राणाप्रताप सागर बांध एवं ब्राह्मणी नदी से बीसलपुर बांध की बनास नदी में जल अपवर्तन की संभावित लागत 8 हजार 300 करोड़ रूपये है। इस परियोजना के अंतर्गत ब्राह्मणी नदी पर एक बैराज श्रीपुरा गांव में बनाया जाना प्रस्तावित है। इस बैराज के अतिरिक्त वर्षाकालीन जल को राणाप्रताप सागर के सैडल डैम से बनास नदी के लिए निकली चैनल को फीड किया जाएगा। साथ ही, परियोजना के अंतर्गत सुरंगों का निर्माण एवं बूंदी जिले के गरडदा, अभयपुरा एवं गुढ़ा बांध को भी भरा जाना प्रस्तावित है।

कोयले से भरी पिकअप जब्त

निवाई, (निसं)। उप वन संरक्षक मारिया शाहीन ए के निर्देशों पर गैर वानिकी कार्यों की रोकथाम के लिए चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत रविवार की रात को कोयला से भरी हुई एक पिकअप को जब्त किया है। क्षेत्रीय वन अधिकारी कालूराम जाट ने बताया कि रविवार की रात एक पिकअप को रुकवाकर जांच की तो उसमें अवैध कोयला भरा हुआ मिला। इस पर गश्ती दल ने पिकअप चालक से कोयला परिवहन के लिए वैध कागजात मांगे। चालक द्वारा वैध कागजात नहीं होना बताने पर पिकअप को जब्त कर प्रकरण दर्ज लिया गया। गश्ती दल में वनपाल सुरेश मीणा, वनरक्षक बद्रीलाल भारी, कमलेश मीणा, बर्मा चौधरी व राजेश कुमार नायक शामिल थे।

डॉक्टर को दिखाने जा रही महिला से लूट

अजमेर, (कासं)। अजमेर शहर में इन दिनों चोरी, नकबजनी, चेन व मोबाइल स्नेचिंग की घटना लगातार बढ़ रही है। क्रिश्चियन गंज थाना क्षेत्र में दो बदमाश डॉक्टर को दिखाने जा रही एक महिला की सोने की चेन और पेंडल झपटकर फरार हो गए। पीड़िता ने थाने में बदमाशों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है, पुलिस बदमाशों की तलाश में जुटी है।

क्रिश्चियन गंज थाना पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार शांतिपुरा निवासी द्रौपदी सिंहल ने थाने में शिकायत देते हुए दो बाइक सवार बदमाशों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। दर्ज रिपोर्ट में बताया कि वह एलआईसी कॉलोनी में डॉक्टर अंजू गुप्ता को दिखाने के लिए जा रही थी, तभी कॉलोनी के मैन रोड पर दो बाइक सवार बदमाश आए और गले पर झपट्टा मारकर सोने की चेन और पेंडल छीनकर फरार हो गए। महिला ने बताया कि दोनों बदमाशों ने हेलमेट पहन रखा था और मेहंदी रंग की जैकेट पहनी हुई थी। घटना के बाद महिला ने पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का जायजा लिया। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। लुटेरों की पहचान के लिए पुलिस कॉलोनी में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है।

खेत की तारबंदी में दौड़ रहे करंट की चपेट में आने से युवक की मौत, लोगों में आक्रोश

- परिजनों और ग्रामीणों में आक्रोश फैला, बिजली विभाग के अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग करते हुए शव लेने से इनकार कर दिया
- मृतक के परिवार को 50 लाख मुआवजा, एक सदस्य को सरकारी नौकरी, दोषियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज करने की मांग

श्रीमाधोपुर, (निसं)। क्षेत्र में श्यामसिंहवाली मऊ खेत के तारों में दौड़ रहे करंट की चपेट में आने से सागर बधाला की दर्दनाक मौत हो गई। घटना के बाद परिजनों और ग्रामीणों में आक्रोश फैल गया। मृतक के भाई सुरेंद्र सिंह बधाला ने मृतक के परिवार को 50 लाख रुपये मुआवजा, एक सदस्य को सरकारी नौकरी, दोषियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज करने और बिजली विभाग के अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग करते हुए शव लेने से इनकार कर दिया।

सुरेंद्र सिंह ने बताया कि मृतक सागर बधाला छोटा भाई जिसके दो पुत्र अंकित-अमित हैं व मेरी भाभी कमला देवी नरेगा में काम करती है। परिवार की स्थिति दयनीय है। घटना के बाद आक्रोशित लोग अस्पताल के सामने मुख्य सड़क मार्ग पर धरने पर बैठ गए। इस विरोध को देखते हुए डिप्टी एसपी उमेश गुप्ता, तहसीलदार जगदीश प्रसाद बैरवा तथा यूडीएच मंत्री पुत्र अजय सिंह खर्रा मौके पर पहुंचे और परिजनों से वार्ता की। अधिकारियों ने सभी मांगों को सरकार तक पहुंचाने और निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई का आश्वासन दिया, जिसके बाद साढ़े पांच घंटे बाद धरना समाप्त हुआ और परिजनों ने शव लेने पर सहमति जताई। गतिरोध समाप्त होने पर पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सुपुर्द किया। घटना में पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

जानकारी के अनुसार श्यामसिंह वाली तन मऊ निवासी सागर बधाला पुत्र महादेव राम अपने निजी कार्य के लिए घर से बाहर निकले थे। दोपहर करीब पौने चार बजे पड़ौसी खेत मालिक भंवर सिंह ने सुरेंद्र सिंह को फोन कर बताया कि सागर खेत के पास खाई में पड़ा हुआ है। जब परिजन मौके पर पहुंचे, तो देखा कि खेत मालिक बिजली के तार समेट रहा था और खेत के चारों ओर लगे तारों में करंट दौड़ रहा था। तारों के संपर्क में आने से सागर बधाला की मौके पर ही मौत हो गई। विधानसभा प्रभारी तथा यूडीएच मंत्री पुत्र अजय सिंह खर्रा ने कहा कि प्रशासन पूरी संवेदनशीलता के साथ मामले को देख रहा है। हमने परिजनों से बात कर उनकी मांगों को सरकार तक पहुंचाने का आश्वासन दिया है। मामले में पुलिस से निष्पक्ष जांच करवाकर जो भी मामले संलिप्त होगा, उन दोषियों पर उचित कार्रवाई होगी।

पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने करवाया था फोन टैपिंग का काम : पटेल

- गहलोत के ओएसडी ने सरकारी गवाह बनकर यह बात स्वीकार की है, इस मामले में अब अशोक गहलोत मुल्जिम हैं : संसदीय कार्य मंत्री पटेल
- 'किरोड़ीलाल मीणा का किसी तरह का फोन टैपिंग नहीं हुआ, यह पूर्ण रूप से बनावटी और झूठी कहानी है'

जोधपुर, (कास)। संसदीय कार्य विभाग विधि एवं विधिक कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि किरोड़ीलाल मीणा का कोई फोन टेप नहीं हुआ है। इसको लेकर सरकार ने अधिकृत बयान भी जारी किया है, लेकिन इसके बावजूद विधानभा में विपक्ष ने इस मामले में मुद्दा बनाने की कोशिश की, जिस पर उनको मुंह की खानी पड़ी। कांग्रेस जिस मुद्दे पर हमें घेरने आई थी, उस पर खुद ही घिर गई। उनकी आपसी लड़ाई में सदन के इतिहास में पहली बार नेता प्रतिपक्ष का भाषण नहीं हो पाया।

सर्किट हाउस में सोमवार को मीडिया से अनौपचारिक बात करते हुए पटेल ने कहा कि फोन टैपिंग का काम गत सरकार के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने करवाया था। उनके ओएसडी ने सरकारी गवाह बनकर यह बात स्वीकार की है। इस मामले में अब अशोक गहलोत मुल्जिम हैं। उनके खिलाफ कोर्ट में मामला है। संसदीय मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि किरोड़ी लाल मीणा हमारे वरिष्ठ साथी हैं। उनका नाराज होना नहीं होना, हमारा अंदरूनी मामला है। इस मामले पर सरकार ने अधिकृत बयान जारी कर दिया है। कांग्रेस को हमारे ऊपर आरोप लगाने का कोई अधिकार नहीं है, जबकी खुद पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत फोन टैपिंग मामले में आरोपी हैं। उन्होंने होटलों में रुक कर फोन टैप करवाए थे। किरोड़ीलाल मीणा का किसी तरह का फोन टैपिंग नहीं हुआ है। यह पूर्ण रूप से बनावटी और झूठी कहानी है।

पटेल ने कहा कि फोन टैपिंग का मामला विपक्ष ने बिना नोटिस के विधानसभा में हंगामा किया था। हंगामा रोकने के लिए स्पीकर ने भी पहल की थी। हमारे मुख्य सचेतक ने ना पक्ष लॉबी में जाकर बात की, लेकिन कांग्रेस के सदस्य विधानसभा में हंगामा पर अड़े रहे। वो चाहते तो जनता के मुद्दों पर बात होती, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हंगामे के बीच हमारे सीएम ने कांग्रेस को सदन में बुरी तरह से धो दिया। उन्होंने जमकर उनकी बखियां उधेड़ी। पटेल ने कहा कि कांग्रेस ने सदन में हंगामा नेता प्रतिपक्ष का भाषण नहीं करने के लिए किया था।

कार पर पथराव करने वाले चार अपचारी डिटेन

उदयपुर, (कासं)। ऋषभदेव थाना क्षैत्र हाइवे पर लूट की नियत से कार पर पत्थरबाजी करने के मामले में विधी से संघर्षरत चार बाल अपचारियों को डिटेन किया और चारों को बाल सम्प्रेशण गृह भिजवाया।।

प्रकरण के अनुसार 8 फरवरी को कृष्णचन्द्र पुत्र गणेशलाल शर्मा निवासी पटूना चौक ऋषभदेव ने पुलिस थाने में रिपेर्ट दी। जिसमें उसने बताया कि 5 फरवरी को चन्द्रगुप्तसिंह चौहारन व साथी खेरवाड़ा में अमित कलाल के परिवार में आयोजित विवाह समारोह में शामिल होकर कार से वापस उदयपुर आ रहे थे, जहां बीच रास्ते में रात के समय कागदर सौम नदी पुलिया के पास नेशनल हाइवे 48 पर लूट की नियत से अज्ञात बदमाशों ने पथराव किया था, जिसके चलते कार का कॉच फूट गया था।

इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अंजना सुखवाल, पुलिस उप अधीक्षक राजीव राहर के सुपरविजन में ऋषभदेव थानाधिकारी भरतसिंह राजपुरोहित के नेतृत्व में एएसआई श्यामसुन्दर मय टीम ने अनुसंधान में मिले साक्ष्यों के आधार पर विधी से संघर्षरत चार बाल अपचारियों को डिटेन कर बाल सम्प्रेशण गृह भिजवाया। प्रारंभिक पूछताछ में पथराव करने के बाद कार के पलटी खाने से लूट की नियत से पथराव करने की जानकारी सामने आई है।

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, सा.नि.वि., खण्ड-दूदू

क्रमांक-941 दिनांक-29.01.2025

अल्पकालीन निविदा सूचना संख्या-17/2024-25

NIB CODE: PWD2425A4022

खण्ड-दूदू में विभिन्न कार्य हेतु इच्छुक निविदादाताओं द्वारा दिनांक 12.02.2025 को सायं 06.00 बजे तक निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित अन्य विवरण राज्य की उपापन पोर्टल (http://eproc.rajasthan. gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in) एवं विभागीय वेबसाईट http://pwd.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है। उपापन की अनुमानित कुल लागत रू. 360.00 लाख है।

UBN NO. PWD2425WSOB14458, PWD2425WSOB14459, PWD2425WSOB14460, PWD2425WSOB14461, PWD2425WSOB14462, PWD2425WSOB14463

अधिशाषी अभियंता सा.नि.वि. खण्ड-दूदू

DIPR/C/1517/2025

कार्यालय उप वन संरक्षक, करौली (राज.)

(गढ़का की चौकी करौली Phone & Fax No. 07465-297003. E,ao;-dcf/lrp;o/fprest@rajasthan.gov.in

Notice Inviting Bid

Bid for Advance Machinary Work in Range Karauli, Masalpur, Mandrayal and Saportra are invited from interested bidders. Other particulars of bid may be visited on the procurement portal http://sppp.raj.nic.in and http://www.eproc.rajasthan.gov.in of the state

क्र. सं.	कार्य का विवरण	यू बी एन नम्बर	लागत लाखों में	जारी दिनांक	जमा व खोलने की दिनांक
1	अग्रिम मृदा कार्य रेंज करौली	UBN NO. FOR2425 WSRC04134	40.00	29.01.2025	10.02.2025
2	अग्रिम मृदा कार्य रेंज मासलपुर	UBN NO. FOR2425 WSRC04135	30.00	29.01.2025	10.02.2025
	अग्रिम मृदा कार्य रेंज सपोटरा	UBN NO. FOR2425 WSRC04136	25.00	29.01.2025	10.02.2025
	अग्रिम मृदा कार्य रेंज मण्डरायल	UBN NO. FOR2425 WSRC04137	20.00	29.01.2025	10.02.2025

DIPR/C/1470/2025 (सुमित बंसल) उप वन संरक्षक, करौली

ट्रक में घुसी कार, दो वृद्ध व एक बालक गंभीर घायल

घायलों को बौंली चिकित्सालय में प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रैफर किया

हादसे में कार के आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया।

बौंली-बामनवास, (निसं)। क्षेत्र के खिरनी पुलिया के ऊपर दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे 8 लाइन पर सोमवार दोपहर में एक कार ट्रक में घुस गई। हादसे में दो वृद्ध व एक बालक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायलों को बौंली चिकित्सालय में प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर जयपुर रैफर किया। बौंली पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल धर्मेंद्र चौधरी ने बताया कि एक्सप्रेस-वे पर सोमवार को खिरनी पुलिया एक्सप्रेस-वे चैनल नंबर 252 के पास एक कार नंबर यूपी की आगे जा रहे टाटा ट्रक में घुस गई। इस सड़क दुर्घटना में कार सवार जीवन बहल (64) व उनकी पत्नी गीतिका बहल (61) व आरव बहल (7) निवासी ग्रेटर नोएडा घायल हो गए। सूचना पर बौंली पुलिस एंबुलेंस व क्रेन के साथ मौके पर पहुंची व दुर्घटनाग्रस्त कार को ट्रक से बाहर निकलवाकर घायलों को बौंली चिकित्सालय में प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर जयपुर रैफर किया। यह सभी लोग रणथंभौर से घूमकर आज सुबह अपने घर ग्रेटर नोएडा जा रहे थे जिनका बेटा अर्जुन खत्री भी पीछे दूसरी कार से चल रहा था।

आत्महत्या के लिए विवश किया, आरोपी गिरफ्तार

बौंली-बामनवास, (निसं)। सवाई माधोपुर मानटाउन थाना पुलिस ने आत्महत्या के लिए विवश करने के आरोपी रामकेश मीणा (50) निवासी बनेठा को रेनवाल मांजी जयपुर से डिनेट कर गिरफ्तार किया है। मानटाउन थाना प्रभारी सुनील कुमार गुप्ता ने बताया कि 20 सितंबर 2024 को राजेश चौधरी निवासी ठीगंला ने कोर्ट इस्तगासे के जरिए रिपोर्ट दर्ज कराकर बताया था कि रामकेश व अन्य लोगों ने आपराधिक षडयंत्र रचकर उसके भतीजे विष्णु चौधरी को आत्महत्या करने के लिए विवश कर दिया। इस कारण मेरे भतीजे विष्णु चौधरी ने 13 जुलाई 2024 को सुबह दस बजे जहर खाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने मामला दर्ज कर अनुसंधान के बाद आरोपी की गिरफ्तारी के लिए एक टीम गठित की लेकिन आरोपी का पता नहीं चल पाया। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि आरोपी रामकेश रेनवाल मांजी जयपुर में छुपा हुआ है इस पर पुलिस ने उसे डिनेट कर गिरफ्तार कर लिया।

मैरिज पैलेस संचालक से 20 लाख की फिरौती मांगी

- फिरौती मांगने से पहले मैरिज पैलेस की दीवार पर पेट्रोल डाल आग लगाई थी

श्रीगंगानगर, (निसं)। धमकी देकर फिरौती मांगने की घटनाएं बढ़ रही हैं। ताजा मामला एक मैरिज पैलेस संचालक के साथ सामने आया है। अज्ञात लोगों ने आधी रात को अंधेरे में चोरों की तरह मैरिज पैलेस की दीवार पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी। इसके अगले दिन वाट्सएप कॉल कर पीड़ित मैरिज पैलेस संचालक से 20 लाख रुपए की फिरौती मांगी। मामला सदर पुलिस के पास पहुंच गया है। अज्ञात आरोपियों पर मुकदमा दर्ज हो गया है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही सभी आरोपियों को पकड़कर मामले का खुलासा कर दिया जाएगा। मामले की जांच हैड कांस्टेबल सतवीरसिंह राठौड़ को सौंपी गई है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार हनुमानगढ़ रोड निवासी मनीष अरोड़ा ने पुलिस परिवाद में बताया है कि वह सूरतगढ़-पदमपुर बाइपास पर सोलिसिटर ग्रांड रिसॉर्ट को ठेके पर लेकर कई वर्ष से कारोबार कर रहा है। इस मैरिज पैलेस के पास 6 फरवरी रात को करीब साढ़े तीन बजे एक काले रंग की क्रेटा गाड़ी में चार युवक सवार होकर आए। तीन युवक नीचे उतरे और अपने हाथों में पांच-पांच लीटर की दो जरिकन में लेकर आया पेट्रोल मैरिज पैलेस की दीवार पर गिराकर आग लगा दी। एक युवक गाड़ी को चलाता रहा। इसके बाद आरोपी भाग गए। मैरिज पैलेस के कर्मचारी ने पानी डालकर आग बुझाई। वारदात कर भागे युवकों के अज्ञात आका ने सात फरवरी को सुबह फिर एक वर्चुअल नंबर से सोशल मीडिया कॉल की। कॉलर ने परिवादी से पहले तो दीवार पर आग लगाने वालों के बारे में पूछा। जब परिवादी ने इसे शरारती तत्वों की हरकत बता हल्के में लिया तो कॉलर गुस्से में आ गया। कॉलर ने धमकी दी कि यह आग उनकी ओर से लगाई गई है। अपनी जान की सलामती चाहते हो तो मांग पूरी कर दो। अभी ट्रेलर दिखाया है। आगे पूरी फिल्म भी दिखाएंगे।

अनुसंधान अधिकारी सतवीर राठौड़ ने बताया कि परिवादी के पास करीब दो माह पहले भी इसी तरह वर्चुअल नंबर से सोशल मीडिया कॉल आई थी। तब कॉलर ने 20 लाख रुपए की फिरौती मांगी थी। तब भी कॉलर ने रुपए नहीं देने पर परिणाम भुगतने को तैयार रहने की धमकी दी थी। अब दो माह बाद आरोपियों ने हरकत कर फिरौती देने का दबाव बनाया है। आरोपियों के सीसीटीवी फुटेज रिकॉर्ड हो गए हैं। जल्दी ही मामले का खुलासा कर देंगे। पुलिस ने मामले में काफी होमवर्क कर लिया है। इसमें मैरिज पैलेस के सीसीटीवी कैमरों के फुटेज को एनालिसिस करके अज्ञात आरोपियों के ढके हुए चेहरे, बॉडी लैंग्वेज को समझा जा रहा है। इसी के साथ गाड़ी तथा जिस पेट्रोल पंप से पेट्रोल भरवाया गया, वहां से भी सुराग जुटाए गए हैं। जिन वर्चुअल नंबरों से कॉल की गई थी, उसके बारे में भी जानकारी निकालने को विशेषज्ञों की मदद ली जा रही है।

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर

टाउनहॉल लिंक रोड उदयपुर (राज.) 313001

दुरभाष स.0294-2414165, 2421255, 2420013 Helpline no. 0294 2426262 ई.मेल commudr@gmail.com, garage.umc21@gmail.com

क्रमांकः– गैराज/ननिउ/2024–25/1425 दिनांकः– 08.02.25

(ई-भुगतान) बोली आमन्त्रण सूचना संख्या – ई 19/2024–25

नगर निगम उदयपुर के विभिन्न वाहनो हेतु टायर, ट्यूब व फ्लेप क्रय (Supply) कार्य वार्षिक दर संविदा हेतु ई– प्रोक्यूरमेन्ट के माध्यम से ऑन लाईन निविदा 24.02.25 तक आमंत्रित की जाती है। बीड से संबंधित विवरण इंटरनेट साईट www.sppp.raj.nic.in & www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है। निविदा की प्रारम्भ दिनांक 11.02.25 तथा खुलने की दिनांक 25.02.25 एवं अनुमानित लागत 40.00 लाख रू. है।

UBN no. UNP2425GLRC00193

अधिशाषी अभियन्ता (यांत्रिक) नगर निगम उदयपुर

आयुक्त नगर निगम उदयपुर

राज.संवाद/सी/24/11477

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड

प्रभासिम शशि सूर्ययो:

कार्यालय संभागीय मुख्य अभियंता (जयपुर संभाग) पुराना पॉवर हाऊस, बनीपार्क, जयपुर

टेलीफैक्स : 0141 - 2201489, इमेल: zcejz@jvvnl.org

ई - निविदा सूचना

ई–निविदा दो भागों में (तकनीकी–वाणिजियक), 33/11 केवी सबस्टेशन गणेश नगर जिला जयपुर का निर्माण और 33 केवी और 11 केवी इंटरकनेक्शन का निर्माण का कार्य सहायक अभियंता (एचटीएम–VI) जयपुर डिस्कॉम, जयपुर के जयपुर सिटी सर्कल – दक्षिण के अधिकार क्षेत्र में टीएन – 95 के तहत एआरसी पर योग्य निविदादाताओं से श्रम दर पर आमंत्रित किये जाते है। योग्य निविदादाता सम्पूर्ण निविदा संबंधित दस्तावेज ई–प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर दिनांक 12.02.2025 से डाउनलोड कर सकते है। निविदायें ऑनलाईन ई– पोर्टल पर दिनांक 24.02.2025 को सांय 05:00 बजे तक ही स्वीकार की जावेगी। निविदा संबंधी जानकारी कार्य का विवरण इत्यादि जयपुर विद्युत वितरण निगम की वेब साईट www.energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, http://www.sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त की जा सकती है।

UBN No. : VVN2425WSOB01127

राज.संवाद/सी/24/11460 जेपीआर - 2949 (2025) संभागीय मुख्य अभियंता (जयपुर संभाग)

बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

उदयपुर विकास प्राधिकरण, राजस्थान

No. :- F-2(01)Acct/Contract/2024-25/258 - 260 Date : 07/02/2025

अल्पकालीन ई-निविदा सूचना संख्या : 70/2024-25

उदयपुर विकास प्राधिकरण, उदयपुर द्वारा निम्नलिखित कार्यो मय डिफेक्ट लाईबिलिटी अवधि के लिये जो कि निविदा प्रपत्र में अंकित है के लिये उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई–टेण्डरिंग के माध्यम से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है :–

निविदा कार्यो की कुल लागत	: रूपये 50.64 लाख (02 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड/अपलोड करने की अवधि	: 08.02.2025 को प्रातः 10.00 बजे से 11.02.2025 को दोपहरः 2.30 बजे तक
Online EMD, Tender Fee & Processing Fee जमा कराने की तिथी	: 08.02.2025 को प्रातः 10.00 बजे से 11.02.2025 को दोपहरः 2.30 बजे तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथी	: 11.02.2025 को दोपहरः 3.30 बजे

विस्तृत विवरण वेबसाईट urban.rajasthan.gov.in/uitudaipur, www.eproc.rajasthan.gov.in व www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

UBN No. : ITU2425WSOB00467, ITU2425WSOB00468

अधिशाषी अभियन्ता - चतुर्थ उदयपुर विकास प्राधिकरण

राज.संवाद/सी/24/11424

राज्य सरकार को रिवीजन याचिका वापस लेने की अनुमति देने से किया इनकार

हाईकोर्ट ने एकल पट्टा मामले में अतिरिक्त दस्तावेज पेश करने के लिए समय मांगने पर नाराजगी जताई

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने एकल पट्टा प्रकरण में राज्य सरकार की ओर से मामले से जुड़े अतिरिक्त दस्तावेज पेश करने के लिए समय मांगने पर नाराजगी जताई। सीजे एमएम श्रीवास्तव ने मौखिक टिप्पणी करते हुए राज्य सरकार के एएसजी ए.वी.राजू को कहा कि एक ओर से सरकार सुप्रीम कोर्ट से मामले का जल्द निस्तारण आदेश लेकर आती है और दूसरी ओर यहां पर समय मांग रही है। जबकि सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले का छह महीने में निस्तारण करने का आदेश दे रखा है।

वहीं हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को उस रिवीजन याचिका को भी फिलहाल वापस लेने की मंजूरी नहीं दी, जिसमें एसीबी कोर्ट के आरोपियों के खिलाफ दी गई अभियोजन स्वीकृति को वापस लेने से मना करने के आदेश को चुनौती दी गई है। हाईकोर्ट ने कहा कि वे इस रिवीजन याचिका को मेरिट पर तय करेंगे। वहीं अदालत ने मामले में अंतिम सुनवाई 19 मार्च को तय करते हुए राज्य सरकार को मामले से जुड़े अतिरिक्त दस्तावेज पेश करने के लिए समय दिया है। वहीं इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में प्रार्थी रहे अशोक पाठक को भी इंटर्वीनर बनने की मंजूरी देते हुए अर्जी दायर करने के लिए कहा है। इससे पहले जब अशोक पाठक ने अदालत से मामले में खुद का वकील बदलने के लिए कहा तो अदालत ने उन्हें भी फटकार लगाते हुए कहा कि केस की जल्द सुनवाई करनी है, वकील अभी तक क्यों नहीं बदला। सुनवाई के दौरान पक्षकारों के अधिवक्ता एसएस होरा ने कहा कि वे राज्य सरकार की रिवीजन का जवाब देंगे। मामले से जुड़े एएजी शिवमंगल शर्मा ने बताया कि राज्य सरकार ने दो अर्जियां दायर की हैं। इनमें कहा है कि ट्रायल कोर्ट के समक्ष दायर क्लोजर रिपोर्टस अधूरी व दोषपूर्ण साक्ष्यों पर की गई जांच के आधार पर थी और इसके चलते ही पूर्व मंत्री शांति धारीवाल को बरी कर दिया था। इसकी जांच के लिए गठित हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस आरएस राठौड़ की कमेटी ने भी इस मामले की समीक्षा की थी और प्रारंभिक रिपोर्ट में कई गंभीर खामियां बताई थीं। ऐसे में क्लोजर रिपोर्ट दाखिल करने में गंभीर चूक हुई थी, जिससे महत्वपूर्ण दस्तावेजों और ठोस सबूतों की अनदेखी की गई। इसलिए राज्य सरकार ने इन गलतियों को सुधारने व भ्रष्टाचार के आरोपों की निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करने का निर्णय लिया है। इसके अलावा मामले में आरोपी पूर्व आईएएस जीएस संधू, निष्काम दिवाकर और ओंकारमल सैनी के खिलाफ मुकदमा वापस लेने के प्रार्थना पत्र को खारिज करने के खिलाफ दायर निगरानी को भी वापस लेने की गुहार की है।

सौ सैनिकों ने साइकिल अभियान में भाग लिया

जयपुर में एल्बर्ट हाल पर भारतीय सेना और वायु सेना के लगभग 100 सैनिकों ने 20 किलोमीटर साइकिल अभियान में भाग लिया।

जयपुर। एल्बर्ट हाल पर भारतीय सेना और वायु सेना के लगभग 100 सैनिकों ने 20 किलोमीटर साइकिल अभियान में भाग लिया। यह आयोजन भारतीय सेना की सप्त शक्ति कमान की वॉरियर्स बटालियन द्वारा, हिंदायन एनजीओ के सहयोग से आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य शारीरिक फिटनेस और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देना था।

मीडिया कोऑर्डिनेटर नन्दकिशोर शर्मा ने बताया कि साइकिल अभियान की शुरुआत सुबह 6:30 बजे ऐतिहासिक एल्बर्ट हॉल से शुरु हुई और यह प्रतिष्ठित पत्रिका गेट तक गया, फिर वापस एल्बर्ट हाल लौटकर सुबह 8:00 बजे सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस पहल ने भारतीय सशस्त्र बलों की फिटनेस, टीम वर्क और समुदाय से जुड़ाव की प्रतिबद्धता को मजबूत किया। इस आयोजन का समग्र समन्वय लेफ्टिनेंट कर्नल विक्रम सिंह योगी द्वारा किया गया, और इसे वॉरियर्स बटालियन की टीम ने बहुत ही सुव्यवस्थित तरीके से आयोजित किया। बटालियन की उत्कृष्ट योजना और निष्पादन क्षमताओं ने इस अभियान को सुरक्षित और सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वॉरियर्स बटालियन का साइकिल अभियान हमारी सेना के धैर्य, अनुशासन और संकल्प का प्रतीक है। हिंदायन एनजीओ के सहयोग के लिए आभारी हैं, जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।"

पर्यावरण और युवा सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्यरत हिंदायन एनजीओ ने लॉजिस्टिक और प्रचार सहयोग प्रदान किया। भारतीय सेना और वायु सेना के साथ उनकी यह साझेदारी एक स्वस्थ और हरित भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह साइकिल अभियान न केवल फिटनेस को प्रोत्साहित करनेमें सफल रहा बल्कि नागरिकों को पर्यावरण के अनुकूल परिवहन के रूप में साइकिल चलाने के लिए भी प्रेरित किया। यह आयोजन प्रतिभागियों और दर्शकों में उत्साह और प्रेरणा जगाने में सफल रहा।

भगवान शिवजी की मातृकुंडिया में प्राण प्रतिष्ठा हम सब सनातनियों का सौभाग्य है : डॉ. पूनिया

जयपुर।अखिल मेवाड़ क्षेत्र जाट समाज महासभा संस्थान द्वारा चित्तौड़गढ़ के मातृकुण्डिया में नवनिर्मित श्री पशुपतिनाथ महादेवजी मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में भाजपा हरियाणा प्रभारी, भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने श्री पशुपतिनाथ महादेवजी मंदिर के दर्शन कर प्रदेश एवं देशवासियों के लिए उन्नित की कामना की।

- 'भगवान का मंदिर जरूर बनाएं, मंदिर के साथ-साथ शिक्षा का मंदिर भी बनाएं, किसान का बच्चा आईएएस बनता है तो बहुत खुशी होती है'

अखिल मेवाड़ क्षेत्र जाट समाज महासभा संस्थान द्वारा चित्तौड़गढ़ के मातृकुण्डिया में नवनिर्मित श्री पशुपतिनाथ महादेवजी मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में भाजपा हरियाणा प्रभारी, भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया शामिल हुए।

प्राण प्रतिष्ठा समारोह में उमड़े लाखों श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुये डॉ. सतीश पूनिया ने कहा अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूं कि किसानों के परिश्रम की पूंजी से भगवान शिवजी की आज मातृकुंडिया में प्राण प्रतिष्ठा हुई है, यह हम सब सनातनियों का सौभाग्य है। मैं आज मातृकुंडिया की छटा देख रहा था, की किस तरीके से 36 कौम के लोग एक पंगत में और एक संगत में इस आस्था के समुद्र का आनंद ले रहे हैं।

उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया देख रही है कि प्रयागराज के महाकुंभ में 140 करोड़ के देश में करोड़ों लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई है, पूरी दुनिया देख रही है कि इतने बड़े देश में इतनी बड़ी आबादी में, जिनकी जाति अलग है, भाषा अलग है, पहनावा अलग है, लेकिन एक हिंदुस्तानी के नाते एक श्रद्धालु के नाते आस्था के नाते, जो पूरी दुनिया को सनातन का संदेश दिया है, यही बदलता भारत है। राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा से लेकर तिरंगे के सम्मान से लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश का स्वाभिमान बढ़ाया है। राजस्थान में सरकार पिछले एक साल पहले बदली और पार्टी का एक सामान्य कार्यकर्ता मुख्यमंत्री बना, जिसने आम जनता की पीड़ा समझकर बदलाव का काम शुरू किया। पूनिया ने कहा कि मातृकुंडिया के इस पवित्र धार्मिक आयोजन में जहां लाखों लोग पधारे हुए हैं, लेकिन इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालु आने के बावजूद बहुत अच्छे से यज्ञ की व्यवस्था है, बहुत सुंदर तरीके से दर्शन की व्यवस्था है, बहुत अच्छी बैठने की व्यवस्था है और इसी बेहतर तरीके से पार्किंग इत्यादि सुविधा यहां सुचारू रूप से दिखाई दी, और यहां लाखों लोगों ने भगवान की प्रसादी पाई है, इस शानदार आयोजन के लिए समस्त संस्थाओं को, प्रशासन को और श्रद्धालुओं सहित आयोजन की पूरी टीम को बधाई देता हूं। मातृकुंडिया के इस ऐतिहासिक आयोजन की गूंज केवल मेवाड़ ही नहीं पूरे देश में चर्चा हो रही है। हमारी किसान कौम में पैदा हुए देश के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने मातृकुंडिया के इस पवित्र आयोजन के लिए केवल टेलीफोन के संदेश के जरिए ही निमंत्रण स्वीकार कर लिया और आप लोगों की श्रद्धा के कारण उपराष्ट्रपति यहां दर्शन करने पधारे।

उन्होंने कहा कि खुशी होती है जब गरीब और किसान का बेटा आईएएस और आईपीएस बनकर समाज और देश का नाम रोशन करता है, मैं चाहूंगा कि हम आस्था के साथ-साथ शिक्षा को भी तवज्जो दें, भगवान का मंदिर जरूर बनाएं, लेकिन मंदिर के साथ-साथ शिक्षा का मंदिर भी बनाएं, बच्चों की पढ़ाई पर बहुत ध्यान दें, कुरीतियों को छोड़कर समाज की मुख्यधारा में स्थान बनाने के लिए शिक्षा की हमारी नई पीढी को बहुत आवश्यकता है।

नशीला पदार्थ पिला कर दुष्कर्म

जयपुर। महेश नगर थाना इलाके मे पड़ोसी युवक द्वारा महिला से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि काम के बहाने धोखे से आरोपित पड़ोसी ने उसे घर में बुलाया और पानी में नशीला पदार्थ मिलाकर पिला उसके साथ दुष्कर्म किया। इस संबंध में पीड़िता ने आरोपी पड़ोसी के खिलाफ थाने में मामला दर्ज करवाया है। यह जानकारी थानाधिकारी गुंजन सोनी ने दी।

अभिभावक बच्चों की क्षमता पहचान कर कैरियर चुनने में करें मदद : नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री की अभिनव पहल से बच्चों के सुखद भविष्य की नींव होगी सुदृढ़ : भजनलाल शर्मा

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के 8वें संस्करण में विद्यार्थियों के साथ तनाव मुक्त परीक्षा के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी जयपुर के मानसरोवर स्थित महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के साथ परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम सुना।

देश के विभिन्न राज्यों के विद्यार्थियों से चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री ने उनको परीक्षा के तनाव से मुक्त रहने और टाइम मैनेजमेंट के उपयोगी सुझाव दिए। प्रधानमंत्री ने बच्चों से कहा कि वे परीक्षा का तनाव महसूस न करें तथा अपने लक्ष्य निर्धारित करें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी दूसरों से प्रतिस्पर्धा करने की बजाय खुद को प्रेरित करते हुए बेहतर बनाने का प्रयास करें, क्योंकि जो खुद से स्पर्धा करता है, वह जीवन में कभी भी पीछे नहीं रहता। हमें हमारी विफलताओं से सीख लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि परिक्षाओं में अच्छे नंबर लाना उतना महत्वपूर्ण नहीं, जितना निरंतर ज्ञान अर्जित करना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि जीवन में समय प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को परीक्षा के दौरान अपने अध्ययन तथा अन्य कार्यों की समय सारणी बनाकर समय का सदुपयोग करते हुए उन्हें सम्पादित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि तनाव से उबरने में ध्यान और योग बहुत उपयोगी है। नियमित योगाभ्यास से तनाव दूर होने के साथ ही कार्य क्षमता में भी वृद्धि होती है। पीएम ने बच्चों को परीक्षा में प्रश्न पत्र को हल करने संबंधी भी टिप्स दीं।

- विद्यार्थी दूसरों से प्रतिस्पर्धा की बजाय खुद को बनाएं बेहतर : प्रधानमंत्री
- इस कार्यक्रम से छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों को होगा फायदा : दिया कुमारी

मोदी ने लीडरशिप पर बात करते हुए कहा कि एक अच्छे लीडर को खुद में सकारात्मक बदलाव कर अन्य लोगों के सामने उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। उन्होंने कहा कि टीमवर्क, धैर्य, जरूरतमंदों की मदद और लोगों का विश्वास जीतना भी एक नेतृत्वकर्ता का महत्वपूर्ण गुण है। प्रधानमंत्री ने अभिभावकों को सलाह दी कि वे बच्चों पर अपनी महत्वकांक्षाएं थोपे बिना उनकी अभिरूचि और क्षमताओं को समझे और उनकी पसंद का कैरियर चुनने में मदद करें। श्री मोदी ने शिक्षकों से भी अपील की कि वे विद्यार्थियों की आपस में तुलना करने से बचें और संवेदनशीलता के साथ प्रत्येक विद्यार्थी की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करें। इस दौरान उन्होंने बच्चों के साथ पोषण, आहार-विहार, मिलेट्स, पर्यावरण संरक्षण तथा एक पेड़ मां के नाम अभियान के बारे में चर्चा की। उन्होंने बच्चों के साथ वृक्षारोपण भी किया। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, जयपुर ग्रेटर नगर निगम महापौर डॉ.सौम्या गुर्जर, शासन सचिव स्कूल शिक्षा कृष्ण कुणाल, आयुक्त स्कूल शिक्षा अनुपमा जोरवाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा आशीष मोदी सहित शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

वहीं दूसरी ओर कार्यक्रम को लेकर उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि आज परीक्षा पे चर्चा के 8वें संस्करण के दौरान प्रधानमंत्री दिल्ली के सुंदर नर्सरी में बच्चों से एक अभिभावक, मित्र और पिता की तरह मिले और बहुत ही सरल भाषा में उनके सवालों के जवाब दिए। परीक्षा पर होने वाली यह चर्चा अब देश ही नहीं, बल्कि दुनिया भर के विद्यार्थियों के बीच लोकप्रिय हो रही है। छात्र जो परीक्षा देने जाते हैं उनके मन में अलग-अलग प्रकार के दबाव होते हैं। कैसे उन्हें इस दबाव से बाहर निकाला जाए, उस दृष्टि में यह कार्यक्रम काफी मददगार होगा। इसके लिए मैं प्रधानमंत्री जी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूं।

एल.आई.सी. का लाभ 8.27 फीसदी बढ़कर 29,138 करोड़ रुपये हो गया

जयपुर (का.सं.)। भारतीय जीवन बीमा निगम ("एलआईसी") के निदेशक मंडल ने 31 दिसम्बर को समाप्त होने वाले नौ महीनों के लिए स्टैंडअलोन और समेकित वित्तीय परिणामों को मजूरी दी और अंगीकार किया। नीचे हमारे स्टैंडअलोन परिणामों के मुख्य अंश दिए गए है।

31 दिसम्बर को समाप्त होने वाले नौ महीनों के लिए कर के बाद लाभ (पीएटी) 29,138 करोड़ रुपये था, जबकि 31 दिसम्बर 2023 को समाप्त होने वाले नौ महीनों के लिए यह 26,913 करोड़ रुपये था, जिसमें 8.27 फीसदी की वृद्धि दर्ज हुई है। प्रथम वर्ष की प्रीमियम आय (एफवाईपीआई) (आईआरडीएआई के अनुसार) द्वारा मापी गई बाजार हिस्सेदारी के संदर्भ में, एलआईसी 31 दिसम्बर को समाप्त नौ कहीनों के लिए 57.42 फीसदी की कुल बाजार हिस्सेदारी के साथ भारतीय जीवन बीमा व्यवसाय बाजार का अग्रणी बना हुआ है, जबकि 31 दिसम्बर 2023 को समाप्त नौ महीनों के लिए यह 58.90 फीसदी थी। 31 दिसम्बर 2024 को समाप्त नौ महीनों के लिए एलआईसी की व्यक्ति व्यवसाय में 37.21 फीसदी और समूह व्यवसाय में 71.70 फीसदी बाजार हिस्सेदारी थी। 31 दिसम्बर को समाप्त नौ महीने की अवधि के लिए कुल प्रीमियम आय 3,40,563 करोड़ रुपये थी, जबकि 31 दिसम्बर 2023 को समाप्त नौ कहीने की अवधि के लिए यह 3,22,776 करोड़ रुपये थी, यानी 5.51 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई।

31 दिसम्बर को समाप्त नौ महीने की अवधि के लिए व्यक्तिगत नव व्यवसाय प्रीमियम आय 42,441 करोड़ रुपये थी, जबकि 31 दिसम्बर 2023 को समाप्त नौ महीने की अवधि के लिए यह 38,679 करोड़ रुपये थी, यानी 9.73 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गइ। 31 दिसम्बर को समाप्त नौ महीने की अवधि के लिए व्यक्मितगत नवीनीकरण प्रीमियम आय 1,78,975 करोड़ रुपये थी, जबकि 31 दिसम्बर 2023 को समाप्त नौ महीने की अवधि के लिए यह 1,71,040 करोड़ रुपये थी यानी 4.64 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई। 31 दिसम्बर को समाप्त नौ महीने की अवधि के लिए कुल व्यक्तिगत व्यवसाय प्रीमियम पिछले वर्ष की तुलनीय अवधि के 2,09,719 करोड़ रुपये से बढ़कर 2,21,416 करोड़ रुपये हो गया, जिसमें 5.58 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई। 31 दिसम्बर 2024 को समाप्त नौ महीने की अवधि के लिए समूह व्यवसाय की कुल प्रीमियम आय 1,19,147 करोड़ रुपये थी, जबकि 31 दिसम्बर 2023 को समाप्त नौ महीने की अवधि के लिए यह 1,13,057 करोड़ रुपये थी यानी 5.39 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई।

- व्यक्तिगत व्यवसाय असहभागी (नॉन पार) एपीई 106.52 फीसदी बढ़कर 6,813 करोड़ रुपये हो गया

31 दिसम्बर को समाप्त नौ महीने की अवधि के दौरान व्यक्तिगत रूप से 1,17,10,505 पॉलिसियाँ बेची गई, जबकि 31 दिसम्बर 2023 को समाप्त नौ महीने की अवधि के दौरान 1,25,56,046 पॉलिसियाँ बेची गई, यानी 6.73 की कमी दर्ज की गई।

15 वर्षीय लड़की का अपहरण

जयपुर। चित्रकूट थाना इलाके में पन्द्रह वर्षीय लड़की का अपहरण करने का मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि पीडिता नौकरी पर जाने के लिए घर से निकली थी। उसके बाद वापस घर नहीं लौटने पर गुम होने का पता चला। थाने में नाबालिग लड़की की मां ने अपहरण का मामला दर्ज करवाया है।

जांच एएसआई शोभाग्य सिंह ने बताया कि चित्रकूट नगर के डीसीएम की रहने वाली महिला ने मामला दर्ज करवाया है कि वह परिवार के साथ रहती है और उसकी पन्द्रह वर्षीय बेटी का अपहरण हुआ है। आठ फरवरी को सुबह उनकी बेटी नौकरी पर जाने की कहकर घर से निकली थी।

दो कारों की भिड़ंत में मां और दो बेटियों की मौत

जयपुर। जयपुर ग्रामीण जिले के किशनगढ़-रेनवाल थाना इलाके में सोमवार की सुबह दो कारों की आमने-सामने की टक्कर में मां और दो बेटियों की मौत हो गई। जबकि अन्य तीन लोग घायल हैं। बताया जा रहा है कि हादसे के बाद बाद कार में बुरी तरह से लोग फंस गए थे, जिन्हें निकालने के लिए पुलिस को कडी मशक्कत करनी पड़ी। वहीं हादसे के बाद हाईवे पर जाम लग गया। क्रेन की मदद से क्षितग्रस्त गाड़ियों को हटाया गया। जिसके बाद यातायात सुचारु हो सका। हादसा चौमूं-रेनवाल स्टेट हाईवे पर सोमवार सुबह करीब पौने नौ बजे हुआ था।

थानाधिकारी देवेंद्र चावला ने बताया कि किशनगढ़ रेनवाल पंचायत समिति के ग्राम पंचायत मलिकपुर के बाबूलाल यादव अपने परिवार के साथ सोमवार सुबह निकले थे। ये लोग इंडिगो कार से हरमाड़ा के दादर बावड़ी स्थित जगजीवन महाराज के यहां जा रहे थे। इसी दौरान हरसोली ईंट भट्टों के पास सामने से आ रही सीकर नम्बर की इनोवा कार से जबरदस्त भिड़ंत हो गई। इंडिगो गाड़ी में सवार बाबूलाल यादव की पत्नी जमना देवी (48) एवं उनकी बेटी शिमला (20) की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं कार में सवार बाबूलाल यादव, उसका बेटा सुनील और दो बेटियां राजू व लक्ष्मी घायल हो गए। इलाज के दौरान लक्ष्मी (26) ने भी दम तोड़ दिया। घायल बाबूलाल, सुनील और राजू को रेनवाल अस्पताल से चौमूं के बराला अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति निलम्बित

जयपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने आदेश जारी कर जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति प्रो. के.एल. श्रीवास्तव को कुलपति पद से तत्काल प्रभाव से निलम्बित किया हैं।

राज्यपाल ने संभागीय आयुक्त, जोधपुर की जांच रिपोर्ट के आधार पर उन्हें निलंबित किया है। जांच रिपोर्ट में प्रो. श्रीवास्तव के विरूद्ध पद का दुरूपयोग करने, राज कार्य में लापरवाही बरतने व विश्वविद्यालय को वित्तीय हानि पहुंचाने के गंभीर आरोप प्रथम दृष्टया प्रमाणित पाए गए। उल्लेखनीय है कि प्रो. श्रीवास्तव के खिलाफ जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय अधिनियम, 1962 (यथा संशोधित) की धारा 10(2) में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए 3 दिसंबर 2024 के द्वारा संभागीय आयुक्त, जोधपुर की अध्यक्षता में जांच समिति का गठन किया गया था। इसमें वह दोषी पाए गए। राज्यपाल ने इस पर अधिनियम, 1962 (यथा संशोधित) की धारा 11क की उप-धारा (1) का प्रयोग कर उन्हें निलम्बित किया है।

सामाजिक उत्थान के लिए चलाई जा रही योजनाओं से पात्र लाभार्थी वंचित ना रहे, अपात्र का चयन ना हो : अविनाश गहलोत

जयपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने कहा कि सामाजिक उत्थान के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं से कोई भी पात्र लाभार्थी वंचित ना रहे और अपात्र का चयन ना हो। उन्होंने कहा कि लाभार्थियों को तय समय सीमा में योजनाओं का लाभ मिले और संबंधित प्रकरणों से जुड़ी समस्याओं का तुरंत निस्तारण हो यही अधिकारियों का लक्ष्य होना चाहिए।

गहलोत ने सोमवार को प्रदेश के सभी प्रशाखा प्रभारी अधिकारी एवं जिलाधिकारियों के साथ राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक में यह बात कही। उन्होंने कहा कि अधिकारी पेंशन और छात्रवृति से जुडे सभी प्रकरणों को प्राथमिकता से लें। उन्होंने अधिकारियों को ग्राम पंचायत स्तर में कैंप लगाकर पेंशन का वार्षिक भौतिक सत्यापन करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 31 मार्च तक 95 फीसद से अधिक वार्षिक सत्यापन करने वाले अधिकारियों को सम्मानित और पुरस्कृत भी किया जाएगा। गहलोत ने कहा कि पिछले वित्तीय वर्ष में विभाग को जितना

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने विभाग जिलावार समीक्षा बैठक ली।

बजट आवंटित हुआ था, इसमें से 85 प्रतिशत की राशि विभिन्न योजनाओं पर खर्च की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि शेष बची राशि को भी आगामी 2 महीनों में खर्च कर ली जाएगी।

सामाजिक न्याय मंत्री ने कहा किनशा मुक्तसमाज का निर्माण ही केंद्र और राज्य सरकार की प्राथमिकता है। अधिकारी इस अभियान कोजन जागरण अभियान के रूप में चलाकर पुनीत काम कर सकते हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना का ज्यादा से ज्यादा प्रचार प्रसार, छात्रावासों का नियमित निरीक्षण, लंबित भुगतान में गति लाने के भी निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को15दिन में एक बार वृद्धाश्रम और डे केयर सेंटर का निरीक्षण करने के भी निर्देश दिए।

गहलोत ने बैठक के दौरान मुख्यमंत्री आयुष्मान बाल संबल योजना, छात्रावास योजना, स्वावलंबन पोर्टल, उत्तर मैट्रिक छात्रवृति, डॉ सविता अंबेडकर अंतरजातीय विवाह, मुख्यमंत्री घुमंतू आवास योजना, गाड्डिया लोहारों को कच्चा माल क्रय हेतु सहायता, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं, सामाजिक सुरक्षा निवेश प्रोत्साहन योजना, नवजीवन योजना, आंबेडकर डीबीटी वाउचर योजना,पालनहार योजना,मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, आवासीय विद्यालय योजना, देवनारायण छात्रा स्कूटी वितरण एवं प्रोत्साहन योजना,वृद्ध कल्याण, मुख्यमंत्री पुनर्वास गृह,नशामुक्त भारत सहित विभिन्न योजनाओं के बारे में चर्चा कर इनमें गति लाने के निर्देश दिए।

- मैराथन बैठक में अधिकारियों को दिए जरूरी दिशा निर्देश

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रयासों से समाज के पिछड़े वर्ग को समाज की मुख्य धारा में लाया जा रहा है। ऐसे में सभी अधिकारी अपने अपने स्तर पर जिम्मेदारी से काम करते हुए कार्य संपादित करें।

अतिरिक्त मुख्य सचिव सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता कुलदीप रांका ने कहा कि विभाग का80का फीसदी बजट सामाजिक उत्थान के लिए पेंशन प्रकरणों में जाता है। उन्होंने अधिकारियों को नियमित रूप से ग्राम सभाओं में जाकर पेंशन से जुडी समस्याओं का निस्तारण करवाने का मैकेनिज्म तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों से विभिन्न प्रकरणों में आने वाली व्याहारिक समस्याओं को भी जाना।

निदेशक बचनेश अग्रवाल ने मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना का ज्यादा से ज्यादा प्रचार प्रसार करते हुए शैक्षिणक संस्थाओं को जोड़कर विद्यार्थियों को लाभ पहुंचाने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को विभाग द्वारा संचालित अन्य सामाजिक योजनाओं से संबंधित दिशा निर्देश भी दिए।

इस अवसर पर राजस्थान अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष राजेंद्र नायक,अतिरिक्त निदेशक केसरलाल मीना, सुमन पंवार, अनुजा निगम के प्रबंध निदेशक वीरेंद्र सिंह सहित अधिकारी और कार्मिक मौजूद रहे।

कमिश्नर आज करेंगे जनसुनवाई

जयपुर। आमजन में विश्वास और अपराधियों में भय कायम रखने के लिए जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ 11 फरवरी को सुबह 11 बजे से शाम 2 से तक पुलिस थाना महेशनगर में जन सुनवाई करेंगे। जनसुनवाई के दौरान अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर (अपराध) कुँवर राष्ट्रदीप, पुलिस उपायुक्त दक्षिण दिगंत आनंद, पूर्व तेजस्विनी गौतम, पश्चिम अमित कुमार, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, सहायक पुलिस आयुक्त सोडाला, मानसरोवर, वैशालीनगर, मालवीयनगर एवं संबंधित एसएचओ और थाने के अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

प्राचीन एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के समन्वय की आवश्यकता : देवनानी

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन का आयोजन

अजमेर, (कासं)। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान एवं आहार तथा पोषण संकाय द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार के तत्वावधान में पादप आधारित न्यूट्रास्यूटिकल्स और चिकित्सा पर नवीन अनुसंधान विषय पर अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। कॉन्फ्रेंस का आयोजन विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के मुख्य आतिथ्य में किया गया। कॉन्फ्रेंस की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई। इस दौरान मुख्य प्रवक्ता जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रोफेसर पी सी त्रिवेदी, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कैलाश सोडाणी, वनस्पति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर अरविंद पारीक एवं प्रोफेसर रितु माथुर मंचासीन रहे।

विधानसभा अध्यक्ष प्रोफेसर वासुदेव देवनानी ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के साथ संबंध बहुत गहरा है। छात्र राजनीति के दौरान विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए प्रयासरत भी रहे। विश्वविद्यालय शोध कार्य एवं नवाचारों में दिन प्रतिदिन नए आयाम स्थापित कर रहा है। विश्व में स्वास्थ्य को लेकर चुनौती बढ़ती जा रही है। आहार एवं पोषण केवल स्वास्थ्य से जुड़ा विषय नहीं बल्कि वैश्विक चिंतन का मुद्दा बन चुका है। ऐसे में प्राकृतिक पौधों के चिकित्सकीय गुणों पर शोध की आवश्यकता है। पूर्वजों द्वारा उपयोग में ली गई औषधियों एवं वनस्पतियों की जानकारी जुटाकर स्वयं को जानने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि

सम्मेलन में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, कुलपति प्रोफेसर कैलाश सोडाणी मौजूद रहे।

पश्चिम की एलोपैथी पद्धति से रोग से ग्रसित होने पर उपचार होता है जबकि भारतीय आयुर्वेद में आहार एवं दैनिक दिनचर्या से रोग की निरोध क्षमता विकसित होती है। ऐसे में प्राचीन एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों में समन्वय की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्राकृतिक पौधों में मौजूद औषधीय गुणों का वैज्ञानिक शोध के माध्यम से समाज में उपयोग हो। प्रयोगशाला में किए शोध केवल कागजों तक सीमित नहीं रह जाए।

उन्होंने बताया कि भारत में प्राचीनकाल से औषधीय गुण वाले आहार का दैनिक सेवन किया जाता रहा है। इसमें एंटीबायोटिक गुण युक्त हल्दी, नीम का मंजन, मसाले शामिल है। इसके उपयोग से भारतीय दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन जीते

■ 'प्राकृतिक पौधों में मौजूद औषधीय गुणों का वैज्ञानिक शोध के माध्यम से समाज में उपयोग हो'

थे। हमारी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों का विदेशी कंपनियों ने पेटेंट करवाकर धनार्जन किया। इसके लिए हमें डॉक्यूमेंट में भी मजबूत होने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के प्रोफेसर एच. एन. वर्मा ने कहा कि अकादमी समाज में विज्ञान के प्रसार पर कार्य कर रही है। अकादमी के जयपुर चौप्टर द्वारा विज्ञान के उपयोग से ग्रामीण क्षेत्रों एवं पिछड़े वर्ग में जीवन की गुणवता सुधार के लिए विज्ञान आधारित कृषि, किचेन गार्डन में चिकित्सकीय पौधों की जानकारी प्रसारित की गई। विज्ञान के विकास से आम जीवन के अभावों में कमी आएगी।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर कैलाश सोडाणी ने कहा कि यह सम्मेलन शोधकर्ताओं और विज्ञान प्रेमियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है, जहां वे अपने शोध को समाज के उपयोग में लाने के उपायों पर विचार कर सकते हैं। कॉन्फ्रेंस में देश-विदेश के अनेक प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं एवं विषय-विशेषज्ञों ने भाग लिया और अपने शोध प्रस्तुत किए। आगामी दो दिवस पर 120 शोध कार्यों पर चर्चा की जाएगी। प्रोफेसर रितु माथुर एवं कॉन्फ्रेंस के आयोजकों ने इसे सफल बनाने के लिए सभी प्रतिभागियों, अतिथियों एवं वैज्ञानिकों का आभार व्यक्त किया।

जेईई मेन : पहले सेशन का परिणाम जल्द जारी होगा

कोटा, (निसं)। देश की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई-मेन के पहला सेशन जो की बीई-बीटेक के लिए 22 जनवरी से 29 जनवरी के मध्य 5 दिन में 10 शिफ्टों में एनटीए द्वारा हुई थी। पहले सेशन का परिणाम 12 फरवरी को जारी होना प्रस्तावित है। पहले सेशन की फाईनल आंसर की 10 फरवरी को जारी की जा चुकी हैं। फाईनल आंसर की में एंटीए द्वारा कई क्वेश्चन के आंसर को ड्रॉप्ड किया गया है साथ ही कई प्रश्नों के आंसर को बदला भी गया है। अब तक 55 हजार से ज्यादा नए स्टूडेंट्स ने अप्रैल सेशन के लिए आवेदन किया है ये ऐसे स्टूडेंट्स है जिन्होंने पूर्व में जनवरी सेशन के लिए आवेदन ही नहीं किया और अब अप्रैल सेशन के लिए ही आवेदन कर रहे है, ऐसे में जेईई-मेन में इस वर्ष आवेदन करने वाले यूनिक कैंडिडेट की संख्या 15 लाख अधिक हो सकती है। पूर्व में पहले सेशन के लिए 13 लाख 78 हजार स्टूडेंट्स आवेदन कर चुके थे। आवेदन की अंतिम तिथि 25 फरवरी तक रखी गई है।

एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के कॅरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट अमित आहूजा ने बताया कि जेईई मेन के पहले सेशन के जारी किए जाने वाले रिजल्ट में स्टूडेंट्स के टोटल एंटीए स्कोर के साथ फिजिक्स, केमिस्ट्री एवं मैथ्स के अलग-अलग एंटीए स्कोर 7 डेसिमल परसेंटाईल में जारी किए जाएंगे। जेईई मेन की परीक्षा विभिन पारियों में होती है ऐसे में प्रत्येक पारी के पेपर का डिफिकल्टी लेवल भी अलग-अलग हो सकता है, ऐसे में सभी अलग-अलग शिफ्टों में स्टूडेंट्स के अपनी अपनी शिफ्ट में रॉ-स्कोर के आधार पर नार्मेलाइज कर 7 डेसिमल में परसेंटाईल एंटीए स्कोर के रूप में जारी की जाती है। यह रॉ स्कोर स्टूडेंट्स के प्राप्तांक होते हैं जो रिजल्ट में घोषित नहीं किये जाते। प्रत्येक स्टूडेंट्स की 7 डेसिमल में परसेंटाईल केवल उसकी शिफ्ट में बैठने वाले स्टूडेंट्स के आधार पर ही निकाली जाती है। सर्प्रथम प्रत्येक स्टूडेंट्स के रॉ स्कोर को निकला जाता है उसके बाद उस स्टूडेंट्स के बराबर और उससे कम रॉ स्कोर वाले स्टूडेंट्स की संख्या ली जाती है इसे 100 से गुना कर, कुल परीक्षा देने वाले स्टूडेंट्स से भाग देकर 7 डेसिमल में परसेंटाइल निकला जाता है जिसे उस स्टूडेंट का एंटीए स्कोर बोला जाता है। यह पर्सेन्टाइल फार्मूला विद्यार्थियों के कुल औसतन प्राप्तांकों के साथ-साथ मैथ्स, फिजिक्स एवं कैमेस्ट्री के प्राप्तांकों पर भी लागू होगा। इस फॉर्मूले से प्रत्येक स्टूडेंट का टोटल एंटीए स्कोर के साथ-साथ प्रत्येक विषय का एंटीए स्कोर निकला जायेगा और ऐसे ही अप्रैल सेशन का एंटीए स्कोर निकला जायेगा।

876 ग्राम अफीम बरामद, आरोपी गिरफ्तार

सांभरझील, (निसं)। अवैध नशा कारोबार में संलिप्त अपराधियों के विरूद्ध एक विशेष अभियान के तहत जीएसटी टीम जयपुर ग्रामीण की सूचना पर मोखमपुरा पुलिस ने 876

■ गाडोता होटल से आरोपी के कब्जे से जब्त किया मादक पदार्थ

ग्राम अफीम सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

अभियान में मौखमपुरा थाना क्षेत्र में ऑपरेशन नॉक आउट के तहत जिला विशेष टीम की सूचना पर मादक पदार्थ बेचने में बड़े स्तर पर संलिप्त नशा कारोबारियों के विरूद्ध कार्रवाई की गई, जिसमें पुलिस थाना मौखमपुरा में एक आरोपी को गिरफ्तार कर उसके विरूद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है। पुलिस ने बताया कि नशा कारोबार में लंबे समय से संलिप्त हनुमान पुत्र ठकराराम को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी के कब्जे से

पुलिस ने 876 ग्राम अफीम बरामद कर आरोपी को गिरफ्तार किया।

876 ग्राम अफीम अवैध मादक पदार्थ बरामद किया गया है। अभियान आगे भी इसी तरह जारी रहेगा तथा नशा का कारोबार करने वाले अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। गिरफ्तार किया गया आरोपी देलुआ की ढाणी तन बना का बेरा, थाना सिणधरी, बाडमेर का है।

तस्करी कर ले जाई जा रही शराब जब्त, दो गिरफ्तार

हमीरगढ़ थाना पुलिस व डीएसटी टीम ने कार्रवाई कर तस्करों को गिरफ्तार किया

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले की हमीरगढ़ थाना पुलिस ने डीएसटी टीम के साथ संयुक्त कार्रवाई करते हुए प्लास्टिक कुर्सियों और गद्दों के नीचे छिपाकर पिकअप में तस्करी कर ले जाई जा रही 81 कार्टून शराब जप्त की है। इस मामले में दो तस्करों को गिरफ्तार किया है।

हमीरगढ़ थाना प्रभारी संजय गुर्जर ने बताया कि जिला स्पेशल टीम इंचार्ज ने थाने पर सूचना दी कि एक पिकअप जिसमें टेंट का सामान प्लास्टिक कुर्सियां और गद्दे भरे हैं उसमें अवैध शराब हो सकती है। इस सूचना पर थाना प्रभारी गुर्जर के नेतृत्व में पुलिस टीम नेशनल हाईवे 48 पर तखतपुरा पहुंचकर नाकाबंदी शुरू की।

इस दौरान सूचना के मुताबिक आई एक पिकअप को रुकवाकर चेक किया गया तो पिकअप में टेंट का सामान प्लास्टिक कुर्सियों और गद्दों के नीचे शराब के 81 कार्टून मिले।

पुलिस ने शराब सहित पिकअप जब्त कर उसमें सवार दो तस्करों

■ प्लास्टिक की कुर्सियों और गद्दों के नीचे छिपाकर ले जाई जा रही थी शराब

पोदालो की ढाणी करनावर दौसा निवासी रामदयाल (25) पुत्र छोटेलाल सैनी और ढाणी जिनसी का वास करेवाडा जिला अलवर निवासी विजेंद्र (33) पुत्र रामस्वरूप मीणा को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस गिरफ्तार तस्करों से शराब की खरीद फरोख्त के संबंध में पूछताछ कर रही है। इस कार्रवाई को थाना प्रभारी गुर्जर के नेतृत्व सहायक उप निरीक्षक महेंद्र सिंह, डीएसटी इंचार्ज अयूब मोहम्मद, हेड कांस्टेबल शिवराज सिंह, कांस्टेबल राजाराम, रविंद्र सिंह, किशोर विशंभर दयाल, नेतराम, राहुल, फकीरचंद, दीपक, सरवन कुमार चालक और बलवीर सिंह कांस्टेबल ने अंजाम दिया।

"मोहिनीअट्टम" नृत्य की प्रस्तुति से छात्र-छात्रायें मंत्रमुग्ध

प्रसिद्ध मोहिनीअट्टम नृत्यांगना डॉ. जूनी मेथन की दो प्रस्तुतियां हुई

भीलवाड़ा, (निसं)। स्पिक मैके (सोसायटी फॉर द प्रमोशन ऑफ इण्डियन क्लासिकल म्यूजिक एण्ड कल्चरल एमगंस्ट यूथ) एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से आयोजित वर्कशॉप ड्रेमोस्ट्रेशन कार्यक्रम के तहत सोमवार को प्रसिद्ध मोहिनीअट्टम नृत्यांगना डॉ. जूनी मेथन की प्रथम प्रस्तुति प्रातः 10 बजे रा.उ.प्रा.वि. दाताजति एवं द्वितीय प्रस्तुति प्रातः 11.30 बजे रा.उ.मा.वि. भोली ग्राम में हुई।

जानकारी देते हुए कैलाश पालिया ने बताया कि जूनी मेगन ने कार्यक्रम की शुरूआत भगवान गणेश वंदना से करते हुये गजानन के स्वरूप की कहानी एवं विभिन्न स्वरूपों की व्याख्या करते हुये गणेश द्वारा रामायण लिखने की कहानी से परिचित कराया। उसके बाद छात्र-छात्राओं को ऋषि मारकंडैय की कहानी को नृत्य के रूप में प्रस्तुति से दर्शक मंत्रमुग्ध हो गये। भगवान विष्णु के मोहिनी स्वरूप एवं अट्टम (नृत्य) की कहानी को समझाते हुये मोहिनी अट्टम का इतिहास समझाया। अंत में दोनों संस्था प्रधान ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम कोर्डिनेटर अनु प्रजापत के अनुसार मंगलवार को जूनी मेगन की

नृत्यांगना डॉ. जूनी मेथन ने मोहिनीअट्टम नृत्य की प्रस्तुति दी।

प्रथम प्रस्तुति प्रातः 10 बजे रा.उ.मा.वि. संतोकपुरा एवं द्वितीय प्रस्तुति दोपहर 11.30 बजे रा.उ.प्रा.वि. मालीखेड़ा में होगी।

मरू महोत्सव का आगाज, धीरज पुरोहित बने मरुश्री व कोमल सिद्ध चुनी गई मिस मूमल

मरू महोत्सव उद्घाटन सत्र में आयोजित हुई विभिन्न प्रतियोगिताएं दर्शकों के लिए रोचक रही

जैसलमेर, (नि.सं.)। मरू महोत्सव-2025 के अन्तर्गत जैसलमेर के शहीद पूनम सिंह स्टेडियम में सोमवार को जैसलमेर विधायक छोटूसिंह भाटी, जिला कलेक्टर प्रतापसिंह, पुलिस अधीक्षक सुधीर चौधरी, उप महानिरीक्षक बीएसएफ नार्थ योगेन्द्रसिंह राठौड़ ने महोत्सव का आगाज आकाश में गुब्बारे उड़ाकर किया।

मरू महोत्सव की सबसे रोचक प्रतियोगिता मरूश्री एवं मिस मूमल के साथ ही मिसेज जैसलमेर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। मरूश्री प्रतियोगिता में 34 प्रतिभागियों ने भाग लिया। निर्णायकों द्वारा मरूश्री के दिये गये निर्णय के अनुसार प्रतिभागियों में जैसलमेर के धीरज पुरोहित को मरूश्री-2025 के लिए चयन किया गया। इसी प्रकार मिस मूमल की 20 प्रतिभागियों में निर्णायकों द्वारा दिये गये निर्णय के अनुसार बीकानेर की कोमल सिद्ध मिस मूमल-2025 के लिए चुनी गई। अतिथियों ने मरूश्री विजेता धीरज पुरोहित, मिस मूमल विजेता कोमल सिद्ध को ट्राफी एवं विजेता प्रमाण पत्र प्रदान कर उनको सम्मानित किया। उन्होंने विजेता होने पर सभी को बधाई दी।

■ भारतीयों के बीच आयोजित साफा बांधो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर नाथूसिंह, द्वितीय स्थान पर आजाद खान विजेता रहे

मरू महोत्सव उद्घाटन सत्र में आयोजित हुई विभिन्न प्रतियोगिताएं भी दर्शकों के लिए बहुत ही रोचक रही। इसमें ऊँट गाड़ों पर मूमल-महेन्द्रा की पोषाक में स्कूली बालक बालिकाओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर एयरफोर्स स्कूल, द्वितीय स्थान पर महात्मा गांधी आईजीएनपी, तीसरे स्थान पर लिटिल हार्ट सैकंडरी स्कूल रही।

साफा बांधो प्रतियोगिता में भारतीयों के बीच आयोजित प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्रथम स्थान पर नाथूसिंह, द्वितीय स्थान पर आजाद खान तथा तृतीय स्थान लोकेन्द्रसिंह भाटी विजेता रहे।

वहीं विदेशियों के बीच आयोजित साफा बांधो प्रतियोगिता बहुत ही रोचक रही इसमें विदेषी पुरूषों के साथ ही विदेषी मेम ने भाग लिया एवं कभी भी साफा नहीं बांधने वालों ने अपनी सिर पर साफा बांध कर मिसाल पेश की एवं उनके साफों को देखकर सभी दर्शक खिल उठे। इसमें प्रथम स्थान पर फ्रांस के पावलो, द्वितीय स्थान पर होलेंड सिल और तृतीय स्थान पर फ्रांस के ही वॉश विजेता रहे।

राज्य के 25 अपर प्राइमरी स्कूल सीधे सीनियर सेकेंडरी में अपग्रेड हुए

बीकानेर, (निसं)। पिछले दिनों बड़ी संख्या में स्कूलों को बंद और मर्ज करने के आदेशों के बाद शिक्षा विभाग ने 25 स्कूलों को अपर प्राइमरी से सीधे सीनियर सेकेंडरी में अपग्रेड कर दिया है। आम दिनों में स्कूलों को प्राइमरी से अपर प्राइमरी और अपर प्राइमरी से सेकेंडरी में अपग्रेड किया जाता है, लेकिन इन 25 स्कूलों को सीधे सीनियर सैकंडरी में प्रमोट किया है। इसमें शिक्षा मंत्री मदन दिलावर के गृह जिले के कोटा के तीन स्कूल शामिल है। जिन स्कूलों को प्रमोट किया है, उसमें अजमेर के मसूदा, बांसवाड़ा के कुशालगढ़, बाड़मेर के

■ अपग्रेड हुए स्कूलों में शिक्षा मंत्री मदन दिलावर के गृह जिले के कोटा के तीन स्कूल शामिल हैं

बाडमेर ग्रामीण, भीलवाड़ा के शाहपुरा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर के सबला, जालौर के बागोड़ा, रानीवाड़ा, जोधपुर के फलौदी, शेरगढ़, कोटा के लाडपुरा का एक, खैरबाड़ के दो, पाली के रायपुर, सोजत, राजसमंद के भीम और राजसमंद, सिरोही के पिंडवाड़ा और रेवदर, उदयपुर के लासदैया, फलासिया व सेमारी, सलुंबर व वल्लभनगर के स्कूल क्रमोन्नत किए गए हैं। इन स्कूलों को इसी सत्र से क्रमोन्नत किया गया है। इस बार नौंवी व दसवीं के स्टूडेंट्स को एडमिशन दिया जा सकेगा, वहीं अगले साल ग्यारहवीं और उससे अगले साल बारहवीं में एडमिशन मिलेगा। अगले सत्र में यहां क्लास ग्यारह के स्टूडेंट्स को एडमिशन मिल जाएगा। क्रमोन्नत हुए स्कूल्स में पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी.कल्ला के गृह जिले बीकानेर और गोविंद डोटासरा के गृह जिले सीकर के एक भी स्कूल का चयन नहीं किया।

चार माह पहले किराए पर गाड़ी लेकर हड़पने वाला आरोपी गिरफ्तार

सीकर, (निसं)। उद्योग नगर थाना पुलिस ने चार माह पहले किराए पर गाड़ी लेकर हड़पने वाले आरोपी अजीतसिंह को गिरफ्तार कर लग्जरी कार को बरामद कर लिया है। पुलिस ने गाड़ी हड़पने वाले आरोपी को गिरफ्तार लग्जरी कार को भी बरामद कर लिया है। आरोपी गाड़ी लेकर बिहार भाग गया था और नंबर प्लेट हटाकर कार में डाल दिया। पुलिस तब से ही आरोपी की तलाश कर रही थी। आरोपी ने कार की नंबर प्लेट बदल ली थी और कार में लगा जीपीएस निकालकर फैंक दिया था।

थानाधिकारी मनोज कुमार भाटीवाड़ ने पिछले 15 दिन में संपत्ति संबंधी अपराधों का खुलासा अभियान के तहत तीन कार, एक मोटरसाइकिल, एक आठ गैस सिलेंडर जब्त कर पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उन्होंने किराए पर लेकर वाहन लेकर फरार होने वाले तीन वारदातों का खुलासा किया है। थानाधिकारी मनोज कमार भाटीवाड़

■ दो दिन के लिए किराए पर लग्जरी कार लेकर बिहार ले गए थे

■ जीपीएस उखाड़ कर फेंक दिया, जिससे गाड़ी की लोकेशन ट्रेस नहीं हो सके

ने बताया कि 15 अक्टूबर 2024 को पीड़ित विकास शर्मा ने मामला दर्ज करवाया था। रिपोर्ट में बताया था कि उसके पास एक थार गाड़ी है। परिचित अजीत सिंह ने 12 सितंबर 2024 को फोन कर दो दिन के लिए थार गाड़ी ले जाने को कहा। परिचित होने के चलते विकास शर्मा ने गाड़ी देने के लिए हां कर दी थी। आरोपी अजीत सिंह, विकास शर्मा के घर आकर गाड़ी ले गया था। दो दिन बाद आरोपी अजीतसिंह कार लेकर वापस नहीं लौटा तो पीड़ित ने फोन किया, लेकिन फोन स्विच ऑफ बताने लगा। आरोपियों ने लग्जरी कार को करीब 22 हजार किलोमीटर चलाई।

पीड़ित ने जब पता किया तो थार गाड़ी की लोकेशन बिहार आने लगी। विकास शर्मा ने गाड़ी को लॉक कर दिया। आरोपी अजीतसिंह ने गाड़ी अनलॉक करवा ली और गाड़ी में लगा जीपीएस उखाड़ कर फेंक दिया। आरोपी ने विकास शर्मा को गाड़ी वापस लौटने की एवज में तीन लाख रुपए मांगे। आरोपी ने पैसे नहीं देने पर गाड़ी को कटवा कर कबाड़ी को देने की धमकी दी। पीड़ित ने मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी और आरोपी को पकड़ने के लिए टीम का गठन किया। पुलिस ने आरोपियों की कॉल डिटेल निकलवाई और लोकेशन ट्रेस की। लेकिन आरोपी का फोन नंबर लगातार बंद आ रहा था।

तालाब में डूबने से दो लोगों की मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के बनेड़ा थाना क्षेत्र के मेघरास ग्राम के नया तालाब से भैंसों को पानी से निकालते वक्त दो बालक और एक युवक की पानी में डूबने से मौत हो गई। ग्रामीणों ने बताया है कि तालाब में भैंसे उतर गई थी, जिन्हें पानी से निकालने के लिए सलीम खां कायमखानी निवासी जवाहर नगर भीलवाड़ा और 10 वर्षीय तनवीर खां पिता जाकिर खां कायमखानी निवासी नाहर सागर तालाब में उतर गये, लेकिन पानी गहरा होने से डूब गए, जिससे दोनों की मौत हो गई। बताया गया कि सलीम खां जवाहर नगर भीलवाड़ा का रहने वाला है जबकि तनवीर अपने ननिहाल मेघरास में ही रहता है। घटना की जानकारी मिलने पर लोगों ने तालाब से दोनों को बाहर निकाला गया, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस भी मौके पर पहुंची, पुलिस ने दोनों शव का पोस्टमार्टम करा शव परिजनों के सुपुर्द कर मामले की जांच शुरू की है।

पुलिसकर्मियों के साथ मारपीट करने वालों पर कार्रवाई की मांग

ब्यावर, (निसं)। अजमेरी गेट पर सब्जी विक्रेताओं द्वारा पुलिस कर्मियों के साथ मारपीट कर चोटित करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की मांग करते हुए जन अधिकार मंच ब्यावर, व्यापार संघ, अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद, हिंदू क्रांति सेना के पदाधिकारी ने जिला कलेक्टर एवं डीवाईएसपी राजेश कसाना को ज्ञापन देकर मारपीट करने वालों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई की मांग की है।

जिला कलेक्टर ने कहा कि नियमों अनुसार सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। डीवाईएसपी कसाना ने बताया कि प्रकरण दर्ज कर लिया गया है। जांच में दोषी पाए जाने वालों के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। जन अधिकार मंच के गजराज आचार्य ने मांग की कि आए दिन यहां पर कुछ सब्जी विक्रेताओं द्वारा आम व्यक्तियों के साथ भी अभद्र व्यवहार किया जाता है तथा रोड को पूर्ण रूप से जाम कर दिया जाता है। ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की आवश्यकता है। व्यापार संघ के संजय

जिला कलेक्टर एवं डीवाईएसपी राजेश कसाना को ज्ञापन दिया।

घीया ने कहा कि जब पुलिसकर्मियों के साथ ही ऐसा अभद्र व्यवहार हो सकता है तो आम व्यक्तियों के साथ तो ऐसे व्यक्ति कुछ भी कर सकते हैं अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद के मुकेश सोनी ने मांग की है कि सब्जी विक्रेताओं को कोई उचित स्थान दिया जाए ताकि शहर में अजमेरी गेट चांद गेट पाली बाजार में अवैध रूप से खड़े होने वाले सब्जी विक्रेताओं से राहत मिल सके तथा ट्रैफिक व्यवस्था व्यवस्थित हो सके। विरोध प्रदर्शन करने वालों में ब्यावर जन अधिकार मंच के कार्यवाहक अध्यक्ष बाबू भाई वासवानी, संरक्षक डीके जैन, संस्थापक गजराज आचार्य, व्यापार संघ के अध्यक्ष संजय घीया, मीडिया प्रभारी गौरव सक्सेना, सत्यनारायण बालोदिया, इमामबाड़ा कमेटी के पप्पू पहलवान, एडवोकेट सुनील चार्ली, चेतन सांखला, पुलिस मित्र मनीष मंगल मोहित पीपाड़ा ऋषिराज लाम्बा, राहुल साहू, आदि उपस्थित रहे।

चौकीदार की हत्या का खुलासा

उदयपुर, (कासं)। शहर के मादड़ी इण्डस्ट्रीयल एरिया प्रतापनगर में हुई चौकीदारी की हत्या का खुलासा करते हुए दो आरोपियों को प्रतापनगर थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार छह फरवरी सवेरे फोन पर सूचना मिली कि मादड़ी इण्डस्ट्रीयल एरिया में नवनीत मोटर्स कार शौरूम के पास एक व्यक्ति की लाश पड़ी है। इस पर प्रतापनगर थानाधिकारी राजेन्द्रसिंह ने मौके पर पहुंचे जहां अज्ञात पुरूष की लाश मिली, जिसकी शिनातखगी नहीं होने पर लाश को एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवाया, जहां बसंतीलाल निवासी सोलेकियों का गुडत्रा दिवेर राजसमन्द हॉल मादड़ी इण्डस्ट्रीयल एरिया में मजदूरी व चौकीदारी करने वाले अपने भाई लादूलाल पुत्र गोपीलाल के रूप में शिनाख्त की। मौके से मिले साक्ष्यों के आधार पर बीएसएनएल कंपनी में कान्ट्रेक्ट पर फाईबर वायरिंग का काम करने वाले श्यामलाल पुत्र पूनालाल पुत्र गोखर व कमलेश भावसार उर्फ अजीत पुत्र कैलाश चन्द्र की गतिविधि संदिग्ध होने की सूचना पर दोनों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया।

सत्रह सदस्यीय खेल विशेषज्ञ सलाहकार समिति की सदस्य प्रसिद्ध मुक्केबाज मैरी कॉम, टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस और बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल होंगी, जिन्होंने ओलंपिक पदक जीते हैं। - **मनसुख मांडविया**

खेल मंत्री, प्रतिभाओं की पहचान करने और उन्हें निखारने, निष्पक्ष और पारदर्शी चयन सुनिश्चित करने हेतु।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

माया रामेश्वरन

माया रामेश्वरन भारतीय टेनिस में बीते कुछ दिनों से एक नाम लगातार सुर्खियों में है। महज 15 साल की उम्र में इस खिलाड़ी ने अपने खेल से सनसनी मचा दी है। अपनी आदर्श सानिया मिर्जा की तरह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम बनाने का सपना देखने वाली माया के सफर की शुरुआत शानदार रही।माया ने मुंबई ओपन 125 के सेमीफाइनल में जगह बनाई। उन्होंने इटनी की वर्ल्ड नंबर 264 निकोल फोसा ह्यूर्गो को तीन सेट के चुनौतीपूर्ण मैच (6-3, 3-6,6-0) में हराया। इसके बाद उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका की वर्ल्ड नंबर 434 जेसिका फेला को 7-6, 1-6, 6-4 के स्कोर से हराया।

क्या आप जानते हैं ?... 67 साल पहले डॉन ब्रैडमैन टेस्ट क्रिकेट से रिटायर हो गए थे, लेकिन टेस्ट क्रिकेट में बल्लेबाजी औसत का उनका रिकॉर्ड आज तक कोई नहीं तोड़ पाया।

बीसीसीआई अंडर-23 सी.के. नायडू ट्रॉफी राजस्थान के खिलाफ महाराष्ट्र के 4/314 रन

जयपुर 10 फरवरी। बीसीसीआई की राष्ट्रिय अंडर 23 सी के नायडू ट्रॉफी के आज से पुणे में शुरू हुए राजस्थान - महाराष्ट्र क्वाटर फाइनल मैच के पहले दिन राजस्थान ने टॉस जीतकर महाराष्ट्र को पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। पहले दिन का खेल समाप्त होने तक महाराष्ट्र ने अपनी पहली पारी में 7 विकेट के नुकसान पर 304 रन बना लिए थे। टीम के लिए अनिरुद्ध सबले 115, एसएस दास 50, साहिल 53 रनो का योगदान दिया। राजस्थान के गेंदबाज मोहित चांगरा 69/3, चेतन शर्मा 47/3, आयुष अमेरिया 56/1 विकेट प्राप्त किए। **आरसीए मैच रेफरी एग्जाम संपन्न-** बीसीसीआई के आगामी मैच रेफरी एग्जाम में भाग लेने हेतु राजस्थान के क्वालिफाइड व अनुभवी मैच रेफरी के चयन हेतु राजस्थान क्रिकेट संघ द्वारा आज दिनांक 10 फरवरी को आरसीए एकेडमी पर आरसीए मैच रेफरी एग्जाम (पुरुष / महिला) आयोजित किया गया।

चैम्पियंस ट्रॉफी में बुमराह के खेलने पर आज होगा फैसला

मुम्बई, 10 फरवरी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के चैम्पियंस ट्रॉफी में खेलने को लेकर मंगलवार को फैसला करेगा। बुमराह की फिटनेस को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। बुमराह ने हाल ही में बेंगलुरु में बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में अपनी पीठ का स्कैन कराया है। अब बीसीसीआई का चिकित्सा दल चयनकर्ताओं और भारतीय टीम प्रबंधन के साथ बात कर बुमराह के चैंपियंस ट्रॉफी मे खेलने को लेकर कल अंतिम निर्णय लेगा। उल्लेखनीय है कि बुमराह को 18 जनवरी को घोषित चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए भारत की 15 सदस्यीय प्रारंभिक टीम में शामिल किया गया था, लेकिन वह इंग्लैंड के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज में नहीं खेल सके। बुमराह ने आखिरी मैच जनवरी की शुरुआत में सिडनी टेस्ट के दौरान खेला था, लेकिन ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी में वह गेंदबाजी नहीं कर पाए थे। उन्हें पीठ में जकड़न की शिकायत थी। जिसके बाद उन्हें पांच हफ्ते का आराम दिया गया था।

रहाणे-सूर्या की शानदार पारी से मुंबई की बढ़त 292 रन हुई

कोलकाता, 10 फरवरी। कप्तान अजिंक्य रहाणे (नाबाद 88) और सूर्यकुमार यादव (70) की शानदार परियों की बदौलत मुम्बई रणजी ट्रॉफी के तीसरे क्वार्टर फानइल में चार विकेट पर 278 रन बना लिये है और उसकी कुल बढ़त 292 रन हो गई है। हरियाणा ने टूर्नामेंट के तीसरे कल के आठ विकेट पर 278 रनों से आगे खेलना शुरु किया। मुम्बई के गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए महज 23 रन देकर दो विकेट झटकर हरियाणा की पूरी टीम 301 के स्कोर समेट दिया। इस तरह से मुंबई की टीम ने 14 रनों की अहम बढ़त हासिल की। इसके बाद जब मुंबई की टीम बल्लेबाजी करने उतरी मुम्बई तो दिन का खेल समाप्त होने तक वह चार विकेट पर 278 रन बना लिये है। अजिंक्य रहाणे (नाबाद 88) और शिवम दुबे (नाबाद 30) क्रीज पर थे।

चीन ने फ्री स्टाइल स्कीइंग मिश्रित टीम एरियल्स स्पर्धा में जीता स्वर्ण

हार्बिन (चीन), 10 फरवरी। एशियाई शीतकालीन खेलों में फ्रीस्टाइल स्कीइंग मिश्रित टीम एरियल्स स्पर्धा में चीन ने सोमवार को शानदार प्रदर्शन करते हुए 305.64 अंकों के साथ स्वर्ण पदक जीता। आज यहां हुये मुकाबले में कजाकिस्तान ने 235.39 अंकों के साथ रजत तथा जापान ने 191.28 अंकों के साथ कांस्य पदक जीता। चीन ने ओलंपिक चैंपियन जू मेंगताओ और क्यू गुआंगपु के साथ ली शिनपेंग सहित कई स्टार खिलाड़ियों को मैदान में उतारा था। चीन के तीनों एथलीटों ने बिना किसी बड़ी गलती के लगातार अच्छा प्रदर्शन करते हुए कजाकिस्तान पर शानदार जीत हासिल की। खेलों में अपना दूसरा स्वर्ण जीतने वाली जू ने कहा, कल की व्यक्तिगत स्पर्धा की तुलना में मेरे साथ टीम के साथी होने से मुझे अधिक आराम महसूस हुआ। जू मेंगताओ मंगलवार को होने वाली महिला एरियल सिंक्रो स्पर्धा में तीसरे खिताब के लिए स्पर्धा करेंगी।

टीम इंडिया 20 को बांग्लादेश के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी

चैम्पियंस ट्रॉफी 2025

नई दिल्ली, 10 फरवरी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए काउंटडाउन शुरू हो गया है। पाकिस्तान और यूएई की मेजबानी में 19 फरवरी से शुरू होने वाले इस टूर्नामेंट में टीम इंडिया 20 फरवरी को बांग्लादेश के खिलाफ अपने अभियान की शुरूआत करेगी।

रोहित शर्मा की अगुवाई में टीम इंडिया टूर्नामेंट के अपने सभी मैच हाइब्रिड मॉडल के तहत दुबई में खेलेगी। जिसके लिए टीम जल्द ही दुबई के लिए रवाना होगी। टीम इंडिया के पाकिस्तान जाने से साफ मना करने के बाद टूर्नामेंट हाइब्रिड मॉडल पर खेला जा रहा है। ऐसे में रोहित ब्रिगेड दुबई में अपने मैच खेलेगी। फिलहाल टीम इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज में बिजी है, जिसे भारत ने अपने नाम कर लिया है। सीरीज का आखिरी मैच 12 फरवरी को अहमदाबाद में खेला जाएगा और सीरीज के आखिरी मैच के तीन दिन बाद टीम चैंपियंस ट्रॉफी के लिए दुबई के लिए रवाना होगी। स्पोर्ट्स तक के अनुसार भारतीय टीम चैंपियंस ट्रॉफी जीतने के इरादे से 15 फरवरी को मुंबई से दुबई के लिए उड़ान भेगी। रवाना होने से पहले टीम प्रेस कॉन्फ्रेंस भी करेगी। वहीं टूर्नामेंट के प्राइज मनी को लेकर भी बड़ी जानकारी मिली है। आईसीसी 10 या 11 फरवरी को नई पुरस्कार राशि की घोषणा करेगा। आईसीसी जल्दी ही पाकिस्तान के स्टेडियम को अपने कंट्रोल में भी लेने वाला है।

दरअसल, पाकिस्तान की टीम अभी लाहौर और कराची में न्यूजीलैंड और साउथ अफ्रीका के साथ त्रिकोणीय सीरीज खेल रही है। इस सीरीज की फाइनल मैच 14 फरवरी को कराची में खेला जाएगा। सीरीज खत्म होने के बाद ही आईसीसी पाकिस्तान के उन स्टेडियम को अपने कंट्रोल में ले लेगी, जहां चैंपियंस ट्रॉफी के मुकाबले खेले जाने हैं।

लाइव मैच के दौरान भड़के, डीजे वाले बाबू गाना मत बजाओ : रोहित

नई दिल्ली, 10 फरवरी। रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम इंडिया ने इंग्लैंड के खिलाफ ये मैच कटक के बाराबती स्टेडियम में आयोजित हुआ। रोहित ने खराब फॉर्म को पीछे छोड़ते हुए शानदार पारी खेली। उन्होंने 90 गेंदों में 119 रन बनाए, जिसमें 12 चौके 7 छक्के शामिल हैं। वह प्लेयर ऑफ द मैच चुने गए। लेकिन इस मैच के दौरान रोहित डीजे पर भड़क गए। रोहित का मैच के अहम चरण में डीजे द्वारा म्यूजिक और गाना बजाने पर पारा हाई हुआ। फ्लडलाइट खराब होने के कारण खेल को रोकना पड़ा था। लेकिन जब मैच फिर से शुरू हुआ तो डीजे ने म्यूजिक बजाना जारी रखा। डीजे के ऐसा करने पर कप्तान चिढ़ गए क्योंकि वह ब्रेक के बाद एकाग्रता हासिल करने पर फोकस कर रहे थे। उन्होंने चिल्लाकर इशारा किया कि डीजे वाले बाबू गाना मत बजाओ।

टीम के लिए कुछ रन जुटाने में मजा आया : रोहित शर्मा

नई दिल्ली, 10 फरवरी। भारतीय कप्तान और 'प्लेयर ऑफ द मैच' रहे रोहित शर्मा (119 रन) ने रविवार को यहां इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे वनडे में शतक जड़कर फॉर्म में वापसी करने के बाद कहा कि टीम के लिए कुछ रन जुटाने में मजा आया। रोहित की 90 गेंद में 12 चौके और सात छक्के जड़ित पारी की बदौलत भारत ने इंग्लैंड को चार विकेट से हराकर तीन मैच की वनडे श्रृंखला जीत ली।

भारतीय कप्तान ने मैच के बाद कहा, "मुझे बल्लेबाजी करने और टीम के लिए रन बनाने में मजा आया। यह एक अहम श्रृंखला है। लेकिन मैं किस तरह की बल्लेबाजी करना चाहता हूं, इसके लिए योजना बनाई कि वनडे में कैसे बल्लेबाजी करनी है।"उन्होंने कहा, "यह प्रारूप टी20 से अलग है टेस्ट से छोटा है। मैं लंबे समय तक बल्लेबाजी करना चाहता था और मेरा फोकस यही था।" उन्होंने कहा, "मैंने खुद को तैयार किया था। स्टंप की ओर आती गेंदों का सामना कैसे करना है, कैसे गैप ढूंढना है। शुभमन गिल और श्रेयस अय्यर दोनों ने मेरा अच्छा साथ निभाया। गिल शानदार खिलाड़ी हैं, वह परिस्थिति को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते और आंकड़े इसकी गवाही देते हैं।"

कन्कशन सबस्टिट्यूट को लेकर क्या नियम होगा लागू

नई दिल्ली, 10 फरवरी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का काउंटडाउन शुरू हो चुका है। 19 फरवरी से शुरू होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी के लिए प्लेइंग कंडीशन का भी ऐलान हो गया है, जिसमें कन्कशन सबस्टिट्यूट को लेकर भी नियम साफ कर दिए गए हैं। दरअसल, भारत और इंग्लैंड के बीच बीते दिनों खेली गई टी20 सीरीज में कन्कशन सबस्टिट्यूट को लेकर काफी बवाल मचा था। चौथे मैच के दौरान शिवम दुबे के हेलमेट पर गेंद लगने के बाद उनके कन्कशन सबस्टिट्यूट के तौर पर हर्षित राणा मैदान पर उतरे थे। जिस पर इंग्लिश कप्तान जॉस बटलर समेत कई एक्सपर्ट ने सवाल खड़े किए थे। बटलर ने तो यहां तक कह दिया था कि यह लाइक फॉर लाइक यानी समान रिप्लेसमेंट नहीं हैं, क्योंकि दुबे ऑलराउंडर हैं तो राणा तेज गेंदबाज।वहीं चैंपियंस ट्रॉफी की प्लेइंग कंडीशन के अनुसार अगर टूर्नामेंट के दौरान मैच में अगर किसी खिलाड़ी को कन्कशन होता है या इसका अंदेशा होता है तो नियम 1.2.7.1.3 के अनुसार टीम के मेडिकल प्रतिनिधिक या फिर टीम मैनेजर को आईसीसी मैच रेफरी से कन्कशन रिप्लेसमेंट की अपील करनी होगी। साथ ही खिलाड़ी के बारे में बताना होगा कि किसे कन्कशन हुआ है। इतना ही घटना के बारे में भी जानकारी देनी होगी, जिसमें समय से बताना होगा।

1.2.7.3 नियम के अनुसार अगर कन्कशन रिप्लेसमेंट एक समान खिलाड़ी है तो आईसीसी मैच रेफरी कन्कशन रिप्लेसमेंट के अनुरोध को मंजूरी देगा। जिसके शामिल होने से मैच के शेष भाग में उस टीम को ज्यादा फायदा नहीं होगा।

1.2.7.7 के अनुसार किसी भी कन्कशन रिप्लेसमेंट अनुरोध को लेकर आईसीसी मैच रेफरी का फैसला आखिरी होगा और किसी भी टीम को अपील का कोई अधिकार नहीं होगा।

1.2.7.9 के अनुसार रिकॉर्ड और स्टेट्स के मामले में दोनों खिलाड़ी यानी कन्कशन रिप्लेसमेंट और रिप्लेस दोनों को मैच में खेला हुआ माना जाएगा।

भारत-इंग्लैंड तीसरे वनडे में लॉन्च होगी खास पहल, कई जिंदगियों पर पड़ेगा असर : शाह

नई दिल्ली, 10 फरवरी। इंटरनेशल क्रिकेट काउंसिल के चेयरमैन जय शाह ने बुधवार, 12 फरवरी को अहमदाबाद में भारत और इंग्लैंड के बीखे जाने वाले तीसरे वनडे के दौरान सोशल मीडिया पर अपनी जागरूकता पहल अंगदान करें, जीवन बचाएं की शुरुआत की घोषणा की। शाह ने अपने ऑफिशियल एक्स हैंडल पर ये घोषणा की जहां उन्होंने जरुरतमंदों की मदद के लिए अंगदान को बढ़ावा दिया।उन्होंने लिखा कि, 12 फरवरी को अहमदाबाद में भारत और इंग्लैंड के बीच तीसरे वनडे के मौके पर हमें एक जागरुकता पहल, अंग दान करें, जीवन बचाएं शुरु करने पर गर्व है। खेल के मैदान से परे प्रेरणा देने, एकजुट होने और स्थायी प्रभाव पैदा करने की शक्ति है। इस पहल के माध्यम से हम सभी से सबसे बड़ा उपहार जीवन का उपहार देने की दिशा में एक कदम उठाने का आग्रह करते हैं।उन्होंने कहा कि, एक प्रतिज्ञा, एक निर्णय, कई लोगों की जान बचा सकता है। आइए एक साथ आएं और बदलाव लाएं।भारत और इंग्लैंड के बीच तीसरा और आखिरी वनडे मैच 12 फरवरी अहमदाबाद में खेला जाएगा। जबकि भारत ने नागपुर और कटक वनडे को जीतकर तीन मैचों की वनडे सीरीज अपने नाम कर ली है।

स्पेशल ओलंपिक में पदक जीतने वाले एथलीटों को मिलेगा नगद पुरस्कार

नई दिल्ली, 10 फरवरी। स्पेशल ओलंपिक भारत (एसओ भारत) की अध्यक्ष डॉ. मल्लिका नड्डा ने विश्व खेलों में पदक जीतने वाले बौद्धिक दिव्यांग एथलीटों के लिए नकद पुरस्कार आवंटित करने के युवा मामले और खेल मंत्रालय (एमवाईएएस) के फैसले का स्वागत किया। डॉ. नड्डा ने युवा मामले एवं खेल मंत्रालय को धन्यवाद देते हुए कहा, यह भारतीय खेल संस्कृति को और अधिक समावेशी बनाने की दिशा में एक आवश्यक कदम है। ये पुरस्कार न केवल एथलीटों को उनके वित्तीय मामलों में मदद करने का एक तरीका है, बल्कि एक प्रेरणा उपकरण के रूप में भी काम करते हैं, जो बौद्धिक और विकासात्मक दिव्यांग एथलीटों को खेल जगत का हिस्सा बनने और अपने जीवन को फिर से परिभाषित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हम युवा मामले और खेल मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया और खेल राज्य मंत्री रक्षा खडसे के अति आभारी हैं। गत 31 जनवरी को जारी अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों में पदक विजेताओं और उनके प्रशिक्षकों को नकद पुरस्कार की योजना के नवीनतम संशोधन के अनुसार, नकद पुरस्कार योजना चार साल में एक बार आयोजित होने वाले आयोजनों के लिए लागू होगी। अब चार वर्ष बाद होने वाले विशेष ओलंपिक विश्व खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाले एथलीटों को 20-20 लाख रुपये दिए जाएंगे। जबकि रजत और कांस्य पदक विजेताओं को क्रमशः 14 लाख रुपये और आठ लाख रुपये दिए जाएंगे।

सुदेवा की आसान जीत, सीआईएसएफ मुश्किल से जीती

नई दिल्ली, 10 फरवरी। प्लेयर ऑफ द मैच रमेश क्षेत्री के दो शानदार गोलों की मदद से सुदेवा दिल्ली फुटबाल क्लब ने इंडियन एयर फोर्स को 3-0 से हरा कर डीएसए प्रीमियर लीग के एकतरफा जीत दर्ज की। वहीं दिन के दूसरे मुकाबले में लीग में टॉप पर चल रहे सी आई एस एफ प्रोटैक्टर ने नेशनल यूनाइटेड स्पोर्ट्स क्लब को एक गोल से हराया।

राजीव गांधी क्लब ने चम्बल स्पोर्ट्स क्लब को रोमांचक मैच में 1 विकेट से हराया

मनन सिंह शेखावत का शतक

जयपुर, 10 फरवरी। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित के एल सैनी ए डिविजन लीग में आज खेले गए मैच में राजीव गांधी क्लब ने चंबल स्पोर्ट्स क्लब को 1 विकेट से हराया। के एल सैनी स्टेडियम पर राजीव गांधी क्लब ने टॉस जीतकर पहले चम्बल स्पोर्ट्स क्लब की बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। चम्बल स्पोर्ट्स ने राहुल खंडेलवाल के 66 रन, लोकेश सैनी के 19 रन, श्रेय सक्सेना के 14 रन, मिहित अग्रवाल 30 रन, हिमान्य भारद्वाज के 47 रन, अक्षय ताखर के 13 रन व पूरव शर्मा 12 रन से 48.3 ओवर में 236 रन बनाए।

राजीव गांधी क्लब के लिए जगदंबिका पाल अटवाल ने 43 पर 4, आयुष गुर्जर 37 पर 2, मनय कटारिया ने 36 पर 2, मोहित भगतानी व सौरभ यादव ने 1- 1 विकेट लिया। जवाबी पारी में राजीव गांधी क्लब की टीम ने मनन सिंह शेखावत के 107 (123 गेंद, 12 चौके व 2 छक्के), मनय कटारिया के 38 रन, रक्षित लूणावत के 21 रन व जगदंबिका पाल अटवाल के 11 रनों से 50 वे ओवर की अन्तिम गेंद पर 9 विकेट पर 237 रन बनाकर मैच जीत लिया। चम्बल स्पोर्ट्स क्लब के लिए अक्षय ताखर ने 24 पर 2, पूरव शर्मा ने 44 पर 2, लविश तोमर ने 44 पर 2, मिहित अग्रवाल व हिमान्य भारद्वाज ने 1 - 1 विकेट लिया।

श्याम लाल कॉलेज ने जीता 11वां पद्मश्री श्याम लाल मेमोरियल हॉकी टूर्नामेंट का उद्घाटन मैच

नई दिल्ली, 10 फरवरी। मेजबान श्याम लाल कॉलेज ने सोमवार को इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंस को 4-2 से हरा कर 11वें पद्मश्री श्याम लाल मेमोरियल आमंत्रण हॉकी टूर्नामेंट के पुरुष वर्ग में जीत के साथ शुरुआत की। आज यहां श्यामलाल कॉलेज के मैदान में आयोजित एक समारोह में मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय में डीन प्रोफेसर बालाराम पाणि और पूर्व ओलंपियन अशोक ध्यानचंद ने 10 से 17 फरवरी तक चलने वाले टूर्नामेंट का उद्घाटन किया।

मैथ्यू पर केन का शतक भारी, न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका को छह विकेट से हराया

लाहौर, 10 फरवरी। केन विलियमसन (नाबाद 133) की शतकीय और डेवन कॉन्वे (97) रनों की अर्धशतकीय पारियों की बदौलत न्यूजीलैंड ने त्रिकोणी सीरीज के दूसरे मुकाबले में सोमवार को दक्षिण अफ्रीका को आठ गेंदे शेष रहते छह विकेट से हरा दिया है।

दक्षिण अफ्रीका के 304 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 10वें ओवर में विल यंग (19) का विकेट गवां दिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये केन विलियमसन ने डेवन कॉन्वे के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों ने दूसरे विकेट के लिए 187 रनों की साझेदारी हुई। शतक की ओर बढ़े डेवन कॉन्वे (97) को जूनियर डल ने आउटकर पवेलियन भेजकर न्यूजीलैंड को बड़ा झटका दिया। इसके बाद डैरिल मिचेल (10) और टॉम लेथम (शून्य) के रूप में न्यूजीलैंड ने दो विकेट गवां दिये। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये ग्लेन फिलिप्स ने केन विलियमसन के साथ मोर्चा संभाला और टीम को जीत की ओर ले गये।

न्यूजीलैंड ने 48.4 ओवर में 308 रन बनाकर मुकाबला छह विकेट से जीत लिया। केन विलियमसन ने 113 गेंदों में 13 चौके और दो छक्के लगाते हुए (नाबाद 133) रनों की पारी खेली। वही ग्लेन फिलिप्स ने 32 गेंदों में एक चौके और एक छक्के की मदद से (नाबाद 29) रन बनाये। दक्षिण अफ्रीका की ओर से एस मुथुसामी ने दो विकेट लिये। जूनियर डल और ईथन बॉश ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

देव कुमार ने राष्ट्रीय खेल में बनाया नया पोल वॉल्ट राष्ट्रीय रिकॉर्ड

देहरादून, 10 फरवरी। 38वें राष्ट्रीय खेल में एथलेटिक्स स्पर्धा के अंतर्गत, पोल वॉल्ट में मध्य प्रदेश के देव कुमार मीना ने नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बना कर, सोमवार को इतिहास रच दिया। उन्होंने 5.32 मीटर की ऊँचाई पार कर 2022 में गुजरात में एस. सिवा द्वारा बनाए 5.31 मीटर के रिकॉर्ड को तोड़ दिया। प्रतियोगिता के दौरान, मीना ने बेहतरीन तकनीक और आत्मविश्वास का परिचय दिया।

मैच के बाद अपनी इस उपलब्धि पर देव कुमार मीना ने कहा,राष्ट्रीय रिकॉर्ड तक का सफर बहुत लंबा था। सबसे ज्यादा समर्थन मेरे घर वालों और कोच का रहा है। मैं एक किसान परिवार से हूं और वहां से यहां तक आना बहुत संघर्ष भरा रहा। आज सोचा था कि कुछ नया करना है, तो बस आज इतिहास रच दिया। हैमर थ्रो महिला स्पर्धा में उत्तर प्रदेश की अनुष्का यादव ने जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए नया राष्ट्रीय खेल रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने 62.47 मीटर के पुराने रिकॉर्ड को तोड़कर नया इतिहास रचा। यह रिकॉर्ड 2023 में उत्तर प्रदेश की ही तान्या चौधरी ने बनाया था। अनुष्का की इस उपलब्धि ने भारतीय एथलेटिक्स में उत्तर प्रदेश की मजबूत पकड़ को फिर साबित किया है।

आयरलैंड ने एकमात्र टेस्ट मैच में जिम्बाब्वे को 63 रनों से हराया

बुलावायो, 10 फरवरी। कप्तान एंडी मैकब्राइन (नाबाद 90 और 66 रन), मार्क अडायर (78) मैथ्यू हम्फ्रीज (छह विकेट) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत आयरलैंड ने एकमात्र टेस्ट मैच में जिम्बाब्वे को 63 रनों से हरा दिया है। जिम्बाब्वे ने कल के सात विकेट पर 187 रनों से आगे खेलना शुरु किया। आज टेस्ट मैच के पांचवें दिन सुबह के सत्र में न्याशा मायावो (आठ) के रूप में जिम्बाब्वे का आठवां विकेट गिरा। उन्हें हम्फ्रीज ने आउट किया। इसके बाद शतक की ओर बढ़ रहे वेस्ली मैधेवेरे (84) को भी हम्फ्रीज ने अपना शिकार बना लिया। 87वें ओवर में एंडी मैकब्राइन ने रिचर्ड न्गारावा (14) को बोल्ड कर जिम्बाब्वे की दूसरी पारी का अंत करते हुए मुकाबला 63 रनों से जीत लिया। आयरलैंड की ओर से मैथ्यू हम्फ्रीज ने 28 ओवरों में 57 रन देकर छह विकेट लिये। बैरी मैकार्थी को दो विकेट मिले। मार्क अडायर और एंडी मैकब्राइन ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आयरलैंड ने अपनी पहली पारी में एंडी मैकब्राइन (नाबाद 90) और मार्क अडायर (78) की शानदार पारियों की मदद से 260 रनों का स्कोर खड़ा किया था। जिम्बाब्वे की ओर से ब्लेसिंग मुजरबानी ने 58 रन देकर सात विकेट लिये थे। रिचर्ड न्गारावा को दो विकेट मिले थे। ट्रेवर ग्वांडू ने एक बल्लेबाज को आउट किया था।

जयपुर पोलो सीजन-2025, रेफल्स सिरमोर कप

विमल अचीवर्स ने डेल्टा/वी पोलो को 6-8 से हराया

द लीला महाराजा सवाई मानसिंह पोलो कप में लांस वाट्सन 18 टॉप स्कोरर और शमशीर अली 17 गोलों के साथ दूसरे स्थान पर रहे

जयपुर, 10 फरवरी। जयपुर पोलो सीजन 2025, रैफल्स सिरमोर कप (12 गोल) में आज एक मैच खेला गया। पीपीसी पोलो ग्राउंड पर विमल अरियन अचीवर्स और डेल्टा/वी पोलो के बीच मैच खेला गया, जिसमें विमल अरियन अचीवर्स ने डेल्टा/वी पोलो को 6-8 से हराया। विमल अरियन अचीवर्स की ओर से विश्वरूप बजाज, अभिमन्यु पाठक ने 2-2 किये, डेनियल ने 1 और बटिस्टा ने 3 गोल कर अपनी टीम की जीत निश्चित की। डेल्टा/वी पोलो की ओर से गोंजालो ओर सेंटियागो ने 3-3 गोल किये। 11 फरवरी को पीपीसी पोलो ग्राउंड पर दो मैच खेले जाएंगे। पहला मैच दोपहर 1 बजे विमल अरियन अचीवर्स वर्सेज अरावली पोलो के बीच, दूसरा मैच शाम 4 बजे जयपुर यूएसपीए वर्सेज़ जिन्दल पैंथर्स के बीच खेला जाएगा।

जयपुर, 10 फरवरी। राजस्थान पोलो क्लब के ऑफिशियल स्कोरर जवाहर खेतान ने बताया कि चार गोल के पोलो खिलाड़ी लांस वाट्सन जयपुर पोलो सीजन 2025, द लीला महाराजा सवाई मानसिंह पोलो कप (08 गोल) के सर्वश्रेष्ठ स्कोरर रहे, जबकि तीन हैंडीकैप खिलाड़ी शमशीर अली 17 गोल के साथ दूसरे और छह गोल के खिलाड़ी मतिआस, सेंटियागो 13-13 गोल के साथ क्रमशः तीसरे स्थान पर रहे। खेतान ने बताया कि जयपुर पोलो सत्र में 8 टीमों के कुल 36 खिलाड़ियों ने भाग लिया। जिन्होंने द लीला टूर्नामेन्टों में कुल 147 गोल किए।

खेतान के अनुसार ध्रुवपाल गोदारा ने 11और सिमरन शेरगिल ने 9 गोलों के साथ क्रमशः चौथे और पांचवे नम्बर के टॉप स्कोरर बने। हिम्मत सिंह ने 8, मनोलो ने 7, डेनियल- अंगद कलान ने 5-5, महाराज पदमनाभ सिंह, सिद्धांत शर्मा ने 4-4, विशाल चौहान, हुर्र अली, अभिमन्यु पाठक ने 3-3, नवीन सिंह, देविन्दर सिंह, पनेलो, मृत्युंजय, निकोलस, कुलदीप सिंह, सलीम आज़मी और वेंकटेश ने 2-2, जयवीर सिंह, अनंत राजपुरोहित ने 1-1, भवानी सिंह, गोंजालो, नवीन जिंदल, जैसल सिंह, निमित मेहता, आर्यमन सिंह, महेंद्र सिंह, ए पी सिंह, शिवांगी जयसिंह और डीनो धनखड़ कोई गोल नही कर पाए।

'मंदिर आस्था के प्रतीक हैं, इनसे हमारी विरासत मजबूत होती है'

मुख्यमंत्री भजनलाल ने मातृकुंडिया में श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में भाग लिया

चित्तौड़गढ़/जयपुर, 10 फरवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि मंदिरों ने भारतीय परंपराओं, संस्कृति और मूल्यों को संरक्षित करने का काम किया है। मंदिर आस्था के प्रतीक होने के साथ ही हमारी सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के भी प्रमुख केंद्र हैं। उन्होंने कहा कि मंदिर भारतीय सनातन संस्कृति की आत्मा हैं जिनसे हमारी विरासत मजबूत होती है। हमारी सरकार प्रदेश में सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए निरंतर काम कर रही है।

शर्मा सोमवार को चित्तौड़गढ़ के मातृकुंडिया के श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर के मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि चित्तौड़ की धरती शूरवीरों की धरा है। इस धरती पर वीर महाराणा प्रताप, भक्त शिरोमणि मीराबाई जैसी महान विभूतियां हुई हैं। साथ ही, यह भक्ति और अध्यात्म के एक प्रमुख केंद्र के रूप में भी प्रसिद्ध है। उन्होंने मातृकुंडिया के श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रदेशवासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि "मेवाड़ का हरिद्वार" के नाम से प्रसिद्ध मातृकुंडिया में स्थापित यह मंदिर एक महत्वपूर्ण आस्था केन्द्र के रूप में उभरेगा और इस क्षेत्र को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने चित्तौड़गढ़ के मातृकुंडिया के श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह को संबोधित किया तथा मंदिर में पूजा-अर्चना की।

- **मुख्यमंत्री ने कहा कि मातृकुंडिया में स्थापित यह मंदिर एक महत्वपूर्ण आस्था केन्द्र के रूप में उभरेगा और क्षेत्र को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करेगा।**

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी "विकास भी और विरासत भी" की अवधारणा को मानते हुए देश में विकास के साथ विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, हमने प्रदेश की आवश्यकताओं को समझते हुए पहले बिजली-पानी की आवश्यकताओं पर काम किया है। प्रदेश में किसानों को दिन में बिजली देने के उद्देश्य से राज्य सरकार काम कर रही है।

इससे पहले मुख्यमंत्री ने तेजाजी मंदिर, मंगलेश्वर मंदिर और पशुपतिनाथ महादेव मंदिर के दर्शन किए। इस अवसर पर जन-स्वास्थ्य आभियांत्रिकी कन्हैयालाल, सहकारिता राज्यमंत्री गौतम दक, सांसद सीपी जोशी, विधायक श्रीचंद कृपलानी, अर्जुनलाल जीनगर, सुरेश धाकड़, चंद्रभान सिंह आक्या, जिला कलक्टर आलोक रंजन, एस पी सुधीर जोशी सहित कई जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

तिरुपति प्रसादम मिलावट केस में चार गिरफ्तार

चेन्नई, 10 फरवरी। तिरूपति-तिरुमाला मंदिर के लड्डू मिलावट विवाद के सिलसिले में सीबीआई ने चार लोगों को गिरफ्तार किया है। रिपोर्टों के अनुसार, उन्हें रविवार देर रात गिरफ्तार किया गया और तिरूपति की एक अदालत में पेश किया गया और न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

गिरफ्तार किए गए लोगों में तिरुमाला मंदिर में लड्डू बनाने के लिए घी की आपूर्ति करने वाले भोले बाबा डेयरी के पूर्व निदेशक विपिन जैन और पोमिल जैन, वैष्णवी डेयरी के अपूर्व चावड़ा और तमिलनाडु के डिंडीगुल जिले में स्थित एआर डेयरी के राजू राजशेखरन शामिल हैं।

- **सी.बी.आई. ने रविवार देर रात ये गिरफ्तारियां की तथा आरोपियों को अदालत में पेश किया।**

उल्लेखनीय है कि लड्डू बनाने के लिए उपयोग किए जा रहे घी में जानवरों की चर्बी का उपयोग करने को लेकर विवाद पैदा होने के बाद ये गिरफ्तारियां हुईं, जिसके बाद सर्वोच्च न्यायालय ने इस मुद्दे की जांच के लिए नवंबर 2024 में पांच सदस्यीय विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया था।

यह विवाद आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने उठाया था, जिन्होंने राज्य में पिछली वाईएस जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व वाली सरकार के दौरान तिरुपति के लड्डू तैयार करने में चर्बी के उपयोग का आरोप लगाया था, जिससे एक बड़ा राजनीतिक विवाद शुरू हो गया था।

फोन टैपिंग के बयान पर डॉ. किरोड़ी को अनुशासनहीनता का नोटिस

डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने कहा, "मैं पार्टी का अनुशासित सिपाही हूँ। नोटिस मिलते ही तय समय में जवाब दूँगा"

- **डॉ. किरोड़ी के लगातार बयान, पार्टी की परेशानी के कारण बने हुए हैं। सीएमओ और पार्टी की तरफ से किरोड़ी की रिपोर्ट केन्द्रीय नेतृत्व को भेजी गई थी। पर, दिल्ली चुनाव के कारण पार्टी ने अब तक कोई एक्शन नहीं लिया था।**
- **कहते है कि प्रदेशाध्यक्ष भरत राठौड़ की राष्ट्रीय अध्यक्ष नड्डा से बात होने के बाद डॉ. किरोड़ी को नोटिस जारी करने का निर्णय हुआ।**

जयपुर, 10 फरवरी। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ ने कैबिनेट मंत्री किरोड़ीलाल मीणा को अनुशासनहीनता का नोटिस भेजा है। किरोड़ी के फोन टैपिंग के बयान को पार्टी ने अनुशासनहीनता माना है। किरोड़ी को कारण बताओ नोटिस जारी कर तीन दिन में जवाब मांगा गया है। किरोड़ी लाल मीणा के पार्टी विरोधी बयानों को लेकर अब पार्टी ने अनुशासनहीनता का नोटिस दिया।

इस पर डॉ मीणा ने कहा कि मुझे कारण बताओ नोटिस के बारे में जानकारी नहीं है। मैं पार्टी का अनुशासित सिपाही हूँ, नोटिस प्राप्त होते ही तय समय अवधि में पार्टी नेतृत्व को जवाब प्रेषित किया जाएगा।

जानकारी के अनुसार, किरोड़ी लाल मीणा लगातार अपने बयानों से पार्टी के लिए परेशानी का सबब बने हुए थे। सीएमओ और पार्टी की तरफ से किरोड़ी की रिपोर्ट केंद्रीय नेतृत्व को भेजी गई थी, लेकिन दिल्ली चुनाव के कारण पार्टी ने इस पर कोई एक्शन नहीं लिया था।

बताया जा रहा है कि प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ की राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से बात हुई और उसके बाद किरोड़ी लाल मीणा को नोटिस जारी करने का निर्णय लिया गया। मदन राठौड़ आज दिल्ली पहुंच चुके हैं, मंगलवार से संसद सत्र में भाग लेंगे। माना जा रहा है कि इस दौरान वे राष्ट्रीय अध्यक्ष से मुलाकात भी करेंगे और इस मुलाकात में किरोड़ी पर आगे क्या एक्शन लिया जाए, इस पर भी चर्चा होगी। किरोड़ी लाल मीणा की तरह ही पार्टी ने हरियाणा में भी मंत्री अनिल विज को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। लोकसभा चुनाव में पार्टी की हार के बाद किरोड़ी लाल मीणा ने अपने मंत्री पद से भी इस्तीफा दे दिया था। इस्तीफा देने की जानकारी उन्होंने जयपुर में 4 जुलाई को एक धार्मिक कार्यक्रम के दौरान मीडिया को दी थी।

किरोड़ी लाल मीणा को दिए गए नोटिस में लिखा है कि आप भाजपा के सदस्य हैं और भाजपा के टिकिट पर राजस्थान विधानसभा के लिए सवाई माधोपुर क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुये हैं। आप राजस्थान सरकार में मंत्री भी हैं। आपने गत दिनों मंत्री परिषद से त्यागपत्र की सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशन हेतु उपलब्ध करवाई एवं सार्वजनिक रूप से समाचार पत्रों में बयान देकर भाजपा नीत सरकार पर आपने टेलीफोन टैप कराने का आरोप लगाया जो असत्य है। आपने सार्वजनिक रूप से उपरोक्त बयान दे कर भाजपा व भाजपा की बहुमत वाली सरकार की प्रतिष्ठा को धूमिल करने का कृत्य किया। आपका उपरोक्त कृत्य भाजपा के संविधान में वर्णित अनुशासन भंग की परिभाषा में आता है।

नोटिस में आगे कहा गया है कि, आपके उपरोक्त बयान को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पार्टी के संविधान में वर्णित अनुशासनहीनता माना है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय के निर्देशानुसार आपको यह "कारण बताओ नोटिस" भेजा जा रहा है। अत: आप उपरोक्त नोटिस में वर्णित आरोपों का तीन दिन के अंदर अपना स्पष्टीकरण प्रस्तुत करें, अन्यथा यह समझा जायेगा कि आपको उपरोक्त आरोप के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं देना है।

'क्या ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विधानसभा सीटों का नुकसान हुआ, क्योंकि कांग्रेस उम्मीदवारों ने आप उम्मीदवारों की हार के मुकाबले ज्यादा वोट प्राप्त किए। अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और सौरभ भारद्वाज की हार इस कारण हुई क्योंकि "धर्मनिरपेक्ष वोट" का विभाजन हो गया था।

हालांकि, कांग्रेस ने दिल्ली में एक भी सीट नहीं जीती, इसके बावजूद उसके नेता अरविंद केजरीवाल से 'बदला' लेकर खुश हैं। आपने पिछले साल हरियाणा विधानसभा चुनावों में सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ा था, जिससे कांग्रेस के वोट बैंक में भारी कटौती हुई। इसी तरह, आप पर गोवा में कांग्रेस का खेल बिगड़ने का आरोप लगा था। कांग्रेस की सोच है कि धर्मनिरपेक्षता का झंडा उठाए रखने का जिम्मा उसी का नहीं है वो भी अपनी ही कीमत पर। शिवसेना, एन.सी.पी. , सपा और तृणमूल कांग्रेस के नेताओं का मानना है कि कांग्रेस को अलग-अलग राज्यों में छोटे क्षेत्रीय दलों को समायोजित करके 'बड़े भाई' की भूमिका निभानी चाहिए।

कांग्रेस, स्पष्ट रूप से, इस सवाल पर पुन: विचार कर रही है। बिहार में राजद के साथ सीट समायोजन की बातचीत में, कांग्रेस अपने हिस्से की मांग को लेकर कड़ी रणनीति अपनाए।

अखिलेश, केजरीवाल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहानी अलग है।

विपक्षी दलों को यह बात हजम नहीं हो रही है कि ममता बनर्जी बंगाल और देश के बाकी हिस्सों के लिए चुनावी गठबंधन के लिए अलग मानक रख रही हैं।

चाहे जो भी हो, दिल्ली चुनावों में भाजपा की किस्मत का तेजी से पलटना राष्ट्रीय आम चुनावों के मुकाबले पूरी तरह से अलग था। ममता बनर्जी इन घटनाक्रमों को लेकर निस्संदेह चिंतित हैं, लेकिन राहुल गांधी की पराजय से उन्होंने राहत की सांस ली है।

वास्तव में यह सत्य है कि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी की पूरी तरह से हार ने भाजपा पर से उभरते राष्ट्रीय विपक्षी गठबंधन का दबाव हटा दिया। चुनाव परिणामों ने विपक्ष को विभाजित कर दिया है और इससे ममता बनर्जी के विपक्षी राजनीति में विघ्न डालने की भूमिका का महत्व भी लगभग खत्म हो गया है।

वह अपने नेतृत्व में विपक्षी एकता नहीं ला सकतीं, क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर उनके नेतृत्व की कोई पूछ नहीं है, वह केवल एक क्षेत्रीय पार्टी की नेता हैं।

इस स्थिति में, भाजपा उन्हें लाइफ लाइन देना बंद कर देगी। बंगाल में यह माना जाता है कि भाजपा और तृणमूल कांग्रेस एक-दूसरे के सहयोगी हैं। यही कारण है कि केंद्रीय एजेंसियाँ तृणमूल कांग्रेस के कई घोटालों और उसके कुछ प्रमुख नेताओं के खिलाफ पूरी तरह से कार्रवाई नहीं कर रही हैं।

अब ममता बनर्जी के लिए एक नई समस्या सामने आ रही है। तृणमूल कांग्रेस और सत्तारुढ़ पार्टी द्वारा राज्य पुलिस प्रशासन की मदद के बाद भी प्रशिक्षू डॉक्टर के दुष्कर्म व हत्या के सबूतों से छेड़छाड़ के खिलाफ चल रहा जनांदोलन शांत नहीं हो रहा है।

अब "पीड़ित को न्याय मिलना चाहिए" नारे के साथ एक नया अभियान शुरू हो गया है और "हमें न्याय चाहिए" की मांग दूर-दूर तक गूंज रही है और अब भाजपा भी इस अभियान में सक्रिय रूप से शामिल हो रही है, जिससे वह कुछ समय से दूर थी।

जोधपुर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रयोग करते हुए उन्हें कुलपति पद से तत्काल प्रभाव से निलम्बित किया है।

जानकारी के अनुसार, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति पर वित्तीय गड़बड़ी के कई आरोप लगे थे। कुलपति की पत्नी को सेवानिवृत्ति के बाद भी कई परिलाभ दिए गए थे, जिसको लेकर भी कुलपति की कार्य प्रणाली पर सवाल खड़े हुए थे। उनके खिलाफ राजकार्य में लापरवाही बरतने व विश्वविद्यालय को वित्तीय हानि पहुंचाने के गंभीर आरोप थे जो जांच में सही पाए गए, इसलिए उनके खिलाफ कार्यवाही की गई।

प्रो.के.एल. श्रीवास्तव ने 14 फरवरी 2022 को कुलपति का पदभार ग्रहण किया था। वे जयनारायण व्यास विवि में ही अध्यापन का काम करवा चुके हैं। वे यहां जियोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष भी रह चुके हैं। प्रो.के.एल. श्रीवास्तव साल 2019 में रिटायर हो गए थे। इसके बाद गहलोत सरकार ने उन्हें कुलपति बना दिया था। उन्होंने कुछ महीने ही इस्तीफा भी दिया था जिसे बाद में वापस ले लिया।

नारायण मूर्ति की कंपनी ने "दमनपूर्वक" ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कंपनी द्वारा, कर्मचारियों की गुणवत्ता, क्षमता और कार्य परीक्षणों के बारे में किए गए दावों के बावजूद, आईटी कर्मचारी संघ ने कहा कि यह कदम उचित नहीं था। यूनियन ने कहा, "इन कर्मचारियों का कई बार साक्षात्कार लिया गया था और कई परीक्षाएं पास करने के बाद उन्हें कंपनी में शामिल किया गया था।

इसके अलावा, यह भी आरोप लगाया गया है कि इन्फोसिस ने उन्हें सैपरेशन एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया। कर्मचारियों को जिस एग्रीमैंट पर साइन करने के लिए बाध्य किया गया उसमें बर्खास्तगी के कारणों का उल्लेख नहीं था, जैसा कि इन्फोसिस दावा कर रही है।

कर्मचारी यूनियन ने इन्फोसिस मैनेजमैंट की दबाव बनाने की रणनीति की भी निंदा की, जिसके तहत कर्मचारियों को काग़ज़ात पर हस्ताक्षर करने और बाहर जाने के लिए डराने के लिए बाउंसरों और सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया था। कर्मचारियों को कैंपस छोड़ने के लिए कोई समय नहीं दिया गया और उनके नाम रोल से काटे जाने के बाद उन्हें 6 बजे से पहले कैंपस खाली करने को कहा गया।

यूनियन ने कर्नाटक सरकार से इस कथित सख्त शोषण को समाप्त करने और कंपनी के खिलाफ शीघ्र कार्रवाई करने की अपील की है।

राष्ट्रपति ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कुंभ मेले में डॉ. राजेंद्र प्रसाद के आगमन के लंबे अंतराल 66 वर्षों के बाद भारत के 14वें राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 2019 के कुंभ में परिवार सहित पहुंच कर आस्था की डुबकी लगाई थी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने प्रयागराज के कोतवाल कहे जाने वाले लेटे हनुमान मंदिर जाकर भी पूजा-अर्चना किया। मान्यता के अनुसार संगम का पुण्य तभी पूर्ण माना जाता है, जब इस मंदिर के दर्शन कर लिए जाते हैं।

'30 आप...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बड़े-बड़े वादे किए। आप ने अभी तक महिलाओं को 1000 रुपये प्रति महीने नहीं दिए हैं। पंजाब कांग्रेस के विधायक परगट सिंह भी ने आप पर हमला बोला था लेकिन उन्होंने बाजवा के दावे पर कोई कमेंट करने से इनकार कर दिया था और कहा कि इस दावे के बारे में सिर्फ बाजवा बता सकते हैं।

उधर, जालंधर के पूर्व सांसद एवं भाजपा नेता सुशील रिंकू ने कहा कि इस मीटिंग से साबित होता है कि आज भी पंजाब को दिल्ली से चलाया जा रहा है।

सांसदों के अपराधिक मामलों पर मुख्य न्यायाधीश की बड़ी पीठ सुनवाई करेगी

नयी दिल्ली, 10 फरवरी। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि सांसदों के खिलाफ आपराधिक मामलों के शीघ्र निपटारे के मामले में सुनवाई पर मुख्य न्यायाधीश कोई फैसला ले सकते हैं। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति मनमोहन की पीठ ने निर्देश दिया कि इस मुद्दे को मुख्य न्यायाधीश के समक्ष बड़ी पीठ द्वारा विचार के लिए रखा जाए।

पीठ ने यह निर्देश देते हुए कहा इस मसले को दो न्यायाधीशों की पीठ द्वारा फिर से खोलना अनुचित होगा, क्योंकि तीन न्यायाधीशों की पीठ ने पहले ही अपने फैसले में इस मामले में सुनवाई की थी।

शीर्ष अदालत अधिवक्ता अश्विनी कुमार उपाध्याय द्वारा दायर 2016 की जनहित याचिका (पीआईएल) पर सुनवाई कर रही थी। इस याचिका में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका से दोषी व्यक्तियों के लिए एक समान अयोग्यता की मांग की गई थी। साथ ही, उन आपराधिक मामलों के फैसले के लिए एक साल की समयसीमा निर्धारित करने की मांग की गई है। अदालत के समक्ष न्याय मित्र की भूमिका निभा रहे वरिष्ठ अधिवक्ता विजय हंसारिया ने राजनेताओं के खिलाफ लंबित आपराधिक मामलों पर एक अपडेट रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कई अदालती आदेशों के बावजूद, 42 फीसदी मौजूदा लोकसभा सदस्य अभी भी आपराधिक मामलों का सामना कर रहे हैं, जिनमें से कुछ 30 साल से अधिक समय से लंबित हैं।

उन्होंने अन्य मामलों को संभालने वाली विशेष एमपी/एमएलए अदालतों, अत्यधिक स्थगन और सख्त प्रक्रियात्मक प्रवर्तन की कमी सहित प्रमुख बाधाओं को उजागर किया।

एसआई पेपर लीक में आरपीएससी अध्यक्ष व एसओजी के एडीजी आज पेश होंगे

राजस्थान हाई कोर्ट ने राज्य सरकार को भर्ती परीक्षा निरस्त करने के बारे में सभी दस्तावेज पेश करने के निर्देश दिये

जयपुर, 10 फरवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने पुलिस उपनिरीक्षक भर्ती-2021 पेपर लीक प्रकरण में प्रकरण के एसओजी के एडीजी को मंगलवार को व्यक्तिश: पेश होने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही अदालत ने आरपीएससी के चेयरमैन को कहा है कि वे इस दौरान वीसी के जरिए अदालत में पेश हों। जस्टिस समीर जैन ने यह आदेश कैलाश चन्द्र शर्मा की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने राज्य सरकार को मामले में महाधिवक्ता, कैबिनेट सब कमेटी और एसओजी की ओर से भर्ती परीक्षा निरस्त करने को लेकर चली नोटशीट सहित अन्य दस्तावेज पेश करने को कहा है।

- **अतिरिक्त महाधिवक्ता विज्ञान शाह ने कहा कि जाँच में दोषी पाये गये ट्रेनी एसआई पर सरकार कार्यवाही करना चाहती है, पर, अदालत के यथास्थिति के आदेश के कारण कार्यवाही नहीं की जा सकती।**
- **एएसजी राजदीपक रस्तोगी ने कहा कि ईडी में यह प्रकरण दर्ज है, इसलिये वे न्याय मित्र की भूमिका नहीं निभा पायेंगे।**

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता विज्ञान शाह ने अदालत में प्रार्थना पत्र पेश कर कहा कि मामले में अब तक की जांच में दोषी ट्रेनी एसआई पर सरकार कार्रवाई करना चाहती है, लेकिन अदालत की ओर से यथा-स्थिति के आदेश होने के कारण कार्रवाई नहीं की जा सकती। ऐसे में अदालत को इन पर कार्रवाई की छूट दी जाए। इस पर अदालत ने कहा कि सरकार किन-किन ट्रेनी एसआई पर कार्रवाई करना चाहती है, उनके नामों का खुलासा करे। अदालत ने याचिकाकर्ता से कहा कि वे परीक्षा में शामिल होकर असफल हुए हैं और उसके बाद हाईकोर्ट में याचिका पेश की है। ऐसे में उन्हें मामले में सुनवाई का अधिकार कैसे है। इस पर याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि उन्होंने मामले में भर्ती से जुडे किसी नियम को चुनौती नहीं दी गई। इसलिए उन्हें याचिका दायर करने का अधिकार है। याचिकाकर्ता की ओर से पेपर लीक को लेकर आरपीएससी के सदस्यों की भूमिका के साथ ही अभ्यर्थियों तक पेपर पहुंचने के तरीके की जानकारी भी दी गई। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने मामले की सुनवाई मंगलवार तक टालते हुए दोनों अधिकारियों को वीसी और व्यक्तिश: पेश होने को कहा है।सुनवाई के दौरान एएसजी राजदीपक रस्तोगी ने अदालत को बताया कि मामले में ईडी ने प्रकरण दर्ज कर लिया है और वे ईडी का पक्ष रखते हैं। वे प्रकरण में न्यायमित्र की भूमिका नहीं निभा पाएंगे।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908